



भारत का राजपत्र The Gazette of India

सी.जी.-डी.एल.-अ.-08092020-221616
CG-DL-E-08092020-221616

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 235]

नई दिल्ली, मंगलवार, सितम्बर 8, 2020/भाद्र 17, 1942

No. 235]

NEW DELHI, TUESDAY, SEPTEMBER 8, 2020/BHADRA 17, 1942

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(व्यापार उपचार महानिदेशालय)

अधिसूचना

(अंतिम निष्कर्ष)

नई दिल्ली, 8 सितम्बर, 2020

मामला सं. (ओआई) - 15/2019

विषय : चीन जन.गण.के मूल के अथवा वहां से निर्यातित 'डिकेटोपाइरोलो पाइरोल पिग्मेंट रेड 254 (डीपीपी 254)' के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क के संबंध में निर्यातक समीक्षा जांच।

सं. 7/27/2019-डीजीटीआर.—समय समय पर यथासंशोधित सीमा प्रशुल्क अधिनियम, 1975 (इसके पश्चात अधिनियम के रूप में भी संदर्भित) और उसका समय-समय पर यथासंशोधित सीमा प्रशुल्क (पाटित वस्तुओं पर पाटनरोधी शुल्क की पहचान, आंकलन और संकलन तथा क्षति के निर्धारण के लिए) नियमावली, 1995 (इसके पश्चात "नियमावली" अथवा 'पाटनरोधी नियमावली' के रूप में भी संदर्भित) के संबंध में;

(क). **मामले की पृष्ठभूमि**

1. निर्दिष्ट प्राधिकारी (इसके पश्चात "प्राधिकारी" के रूप में भी संदर्भित) ने दिनांक 20 जून, 2014 की अधिसूचना सं. 14/8/2014-डीजीएडी के माध्यम से चीन जन.गण और स्विट्जरलैंड मूल के अथवा वहां से निर्यातित "डीपीपी रेड 254" (इसके पश्चात 'संबद्ध वस्तु' या 'विचाराधीन उत्पाद' अथवा 'पीयूसी' के रूप में भी संदर्भित) के

आयातों पर पाटनरोधी जांच की शुरुआत की। उसके बाद प्राधिकारी ने चीन जन.गण. और स्विट्जरलैंड से संबद्ध वस्तुओं के आयातों के विरुद्ध पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश करते हुए दिनांक 19 जून, 2015 की जांच परिणाम सं. 14/8/2014-डीजीएडी अधिसूचित किया। वित्त मंत्रालय द्वारा दिनांक 17 अगस्त, 2015 की सीमाशुल्क अधिसूचना सं. 41/2015-सीमाशुल्क (एडीडी) द्वारा पांच वर्षों के लिए निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाया गया था और वह लागू है।

2. इस अधिनियम की धारा 9क(5) के संबंध में लगाए गए पाटनरोधी शुल्क को यदि पूर्व में समाप्त नहीं किया गया हो तब वह इस प्रकार के अधिरोपण की तिथि से पांच वर्षों के समाप्त होने पर प्रभावी नहीं रहेगा और प्राधिकारी से यह अपेक्षित है कि वे इस बात की समीक्षा करें कि क्या शुल्क के समाप्त होने से संभवतः पाटन और क्षति जारी रहेगी अथवा वह फिर से उत्पन्न होगी। उपर्युक्त के अनुसार, प्राधिकारी से यह अपेक्षित है कि वे घरेलू उद्योग की ओर से अथवा उसके द्वारा एक विधिवत् पुष्टि किए हुए अनुरोध के आधार पर इस बात की समीक्षा करें कि क्या शुल्क के समाप्त होने से संभवतः पाटन और क्षति जारी रहेगी अथवा फिर से होगी।

3. नियमावली के नियम 23(1ख) में निम्नलिखित प्रावधान है:

".....किसी बात के होते हुए भी अधिनियम के अंतर्गत लगाया गया कोई निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क उसके लगाए जाने की तारीख से पांच वर्ष की अवधि तक प्रभावी रहेगा बशर्ते निर्दिष्ट प्राधिकारी उक्त अवधि से पूर्व अपनी खुद की पहल पर या घरेलू उद्योग की ओर से किए गए विधिवत् पुष्टिकृत अनुरोध के आधार पर उक्त अवधि समाप्त होने से पूर्व उचित अवधि के भीतर इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि उक्त शुल्क की समाप्ति से पाटन एवं घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है।"

4. मै. हियुबाच कलर प्राइवेट लिमिटेड (इसके पश्चात "आवेदक" या "घरेलू उद्योग" अथवा "डीआई" के रूप में संदर्भित) ने चीन जन.गण. और स्विट्जरलैंड के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के पाटन के जारी रहने अथवा उसके फिर से होने और घरेलू उद्योग को परिणामी क्षति की संभावना का आरोप लगाते हुए इस अधिनियम और नियमावली के अनुसार प्राधिकारी के समक्ष घरेलू उद्योग की ओर से एक विधिवत् पुष्टि किया हुआ आवेदन दायर किया और चीन जन.गण. तथा स्विट्जरलैंड के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के आयातों पर लागू वर्तमान पाटनरोधी शुल्कों की समीक्षा करने और उसे अन्य पांच वर्षों के लिए जारी रखने का अनुरोध किया है।
5. घरेलू उद्योग की ओर से दायर किए गए पाटन और क्षति की संभावना के प्रथम दृष्टया साक्ष्य के साथ विधिवत् पुष्टि किए हुए आवेदन को देखते हुए और इस नियमावली के नियम 23 के साथ पठित की अधिनियम की धारा 9क(5) के अनुसार, प्राधिकारी ने चीन जन.गण. (इसके पश्चात "संबद्ध देश" के रूप में संदर्भित) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के संबंध में पाटनरोधी शुल्क को लगातार लगाए रखने की आवश्यकता की समीक्षा करने और इस बात की जांच करने कि क्या उक्त शुल्क के समाप्त होने से संभवतः पाटन के जारी रहने अथवा उसके फिर से होने तथा घरेलू उद्योग को क्षति होने की संभावना है, भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित दिनांक 18 दिसंबर, 2019 की अधिसूचना सं. 7/27/2019-डीजीटीआर के माध्यम से निर्णायक समीक्षा जांच की शुरुआत की।
6. मूल जांच में शामिल देश चीन जन.गण. और स्विट्जरलैंड थे। तथापि, इस वर्तमान निर्णायक समीक्षा जांच के उद्देश्य से, प्राधिकारी ने केवल चीन जन.गण. के विरुद्ध जांच की शुरुआत की क्योंकि आवेदक द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना का प्रथम दृष्टया विश्लेषण ने स्विट्जरलैंड से पाटन की संभावना को नहीं दर्शाया था। तदनुसार, चीन जन.गण. इस निर्णायक समीक्षा के लिए संबद्ध देश है।
7. वर्तमान समीक्षा के क्षेत्र में संबद्ध देश के मूल के अथवा वहां से निर्यात किए गए संबद्ध वस्तुओं के आयातों के संबंध में पूर्व की जांच के सभी पहलू शामिल हैं।

ख. प्रक्रिया

8. वर्तमान समीक्षा के क्षेत्र में दिनांक 19 जून, 2015 की अंतिम जांच परिणाम अधिसूचना सं. 14/8/2014-डीजीएडी के सभी पहलू शामिल हैं जिसने चीन जन.गण. और स्विट्जरलैंड के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क को लगाए जाने की सिफारिश की थी।

9. वह प्रक्रिया जिसका उल्लेख यहां नीचे किया गया है, का पालन किया गया है।
- क. प्राधिकारी ने संबद्ध देश के संबद्ध वस्तुओं के आयातों के विरुद्ध निर्णायक समीक्षा पाटनरोधी जांच की शुरुआत करते हुए भारत के राजपत्र, असाधारण में एक नोटिस दिनांक 18 दिसंबर, 2019 की अधिसूचना सं. 7/27/2019-डीजीटीआर के माध्यम से प्रकाशित किया।
- ख. नई दिल्ली में संबद्ध देश के दूतावास को इस आवेदन के अगोपनीय पाठ और जांच की शुरुआत संबंधी अधिसूचना की प्रति के साथ-साथ नियम 6(2) के अनुसार निर्णायक समीक्षा जांच की शुरुआत के बारे में सूचित किया गया था।
- ग. प्राधिकारी ने संबद्ध देश के ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों (जिनके नाम और पते आवेदक द्वारा प्राधिकारी को उपलब्ध कराए गए थे) को अधिसूचना की प्रति अग्रेषित की और इस नियमावली के नियम 6(2) और 6(4) के अनुसार पत्र की तिथि से तीस दिनों के भीतर अपने विचारों से अवगत कराने का अवसर प्रदान किया।
- घ. प्राधिकारी ने संबद्ध वस्तुओं के सभी ज्ञात आयातकों और प्रयोक्ता संघों को सार्वजनिक नोटिस की एक प्रति अग्रेषित की और उन्हें सलाह दी कि वे इस पत्र के जारी होने के तिथि से तीस दिनों के भीतर लिखित रूप में अपने विचारों से अवगत कराएं।
- ड. प्राधिकारी ने इस नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार संबद्ध देशों में संबद्ध वस्तुओं के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को संबंधित सूचना प्राप्त करने के लिए प्रश्नावलियां भेजी:
 - (i) सीआईएनआईसी केमिकल्स (संघाई) कं. लि.
 - (ii) शौंगले पिग्मेंट टेक्सिंग कं. लि.
 - (iii) शेन्यांग बइयाओ केमिकल कं. लि.
 - (iv) नानटोंग झेंग्यान न्यू मैटिरियल्स टेक्नोलॉजी
 - (v) फोशान शंडे बाओस्ट पिग्मेंट कं. लि.
- च. चीन जन.गण के किसी भी उत्पादक/निर्यातक ने वर्तमान निर्णायक समीक्षा जांच में भाग नहीं लिया है और प्राधिकारी के समक्ष प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है।
- छ. प्राधिकारी ने इस नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना की मांग करते हुए भारत में संबद्ध वस्तुओं के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं को प्रश्नावलियां भेजी गई थीं:
 - (i) निप्पन पेंट (इंडिया) प्रा. लि.
 - (ii) दि इंडियन पेंट एसोसिएशन
 - (iii) कन्सई नेरोलेक इंडिया लिमिटेड
 - (iv) एकजो नोबेल इंडिया लिमिटेड
 - (v) एशियन पेंट्स लिमिटेड
 - (vi) हुबर ग्रुप इंडिया
 - (vii) वोक्सको पिग्मेंट्स एंड केमिकल्स प्रा. लि.
 - (viii) बर्जर पेंट्स इंडिया लिमिटेड
 - (ix) पीपीजी एशियन पेंट्स प्रा. लि.
 - (x) सौजन्य कलर प्रा. लि.
 - (xi) रेड टोन इंडस्ट्रीज
 - (xii) पारसन इंटरप्राइजेज

- ज. मै. बर्जर पेंट्स इंडिया लिमिटेड, मै. कन्सई नेरोलेक पेंट्स, मै. वोक्सो पिग्मेंट्स एंड केमिकल प्राइवेट लिमिटेड ने वर्तमान जांच में आयातक/प्रयोक्ता की प्रश्नावली का उत्तर दायर किया है।
- झ. मै. पारसन इंटरप्राइजेज ने भी अपना उत्तर प्रस्तुत किया है। उनके सभी आयात यूएसए से हुए थे और उनका कोई भी आयात चीन से नहीं हुआ था और इस कारण से उन्होंने अपने उत्तर में उल्लेख किया कि वे इस निर्णायक समीक्षा के सार्थक जांच के लिए निर्दिष्ट प्राधिकारी की सहायता करने की स्थिति में नहीं हैं।
- ट. दि इंडियन पेंट एसोसिएशन ने भी जांच की प्रक्रिया के दौरान अनुरोध किए जिन्हें इस प्रकटन विवरण में शामिल किया गया है और उसका विधिवत् समाधान किया गया है।
- ठ. प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निरीक्षण के लिए खुली रखी गई सार्वजनिक फाइल के रूप में विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए साक्ष्य का अगोपनीय पाठ उपलब्ध कराया। हितबद्ध पक्षकारों जिन्होंने निरीक्षण तथा सार्वजनिक फाइल से दस्तावेजों की प्रतियां दिए जाने का अनुरोध किया था, को वह उपलब्ध करा दिया गया था।
- ड. प्राधिकारी ने गोपनीयता के दावे को जहां भी आवश्यक हुआ उचित जांच के पश्चात् स्वीकार किया और इस प्रकार की सूचना को गोपनीय तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों को प्रकट न की गई सूचना मानी गई है। जहां भी संभव हुआ, गोपनीय आधार पर सूचना उपलब्ध कराने वाले पक्षकारों को निदेश दिया गया था कि वे गोपनीय सूचना का पर्याप्त अगोपनीय पाठ उपलब्ध कराएं जिसे सार्वजनिक फाइल के माध्यम से उपलब्ध कराया गया था।
- ढ. अतिरिक्त सूचना आवेदक तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों से उस हद तक मांगी गई थी जिस हद तक उसे आवश्यक समझा गया। घरेलू उद्योग द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों का सत्यापन उस हद तक किया गया था जिस हद तक वर्तमान जांच के उद्देश्य से, उसे आवश्यक माना गया था।
- ण. यह जांच वर्तमान जांच के उद्देश्य से जांच की अवधि अप्रैल, 2015- मार्च, 2016, अप्रैल 2016-मार्च, 2017, अप्रैल 2017-मार्च 2018 और जांच की अवधि की को शामिल करते हुए क्षति के विश्लेषण के साथ अवधि 1 अप्रैल, 2018-30 जून, 2019 (15 महीने) (इसके पश्चात् “जांच की अवधि” अथवा “पीओआई” के रूप में संदर्भित) के लिए किया गया था।
- त. वाणिज्यिक सूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएंडएस) से यह अनुरोध किया गया था कि वे पिछले तीन वर्षों और जांच की अवधि के लिए संबद्ध वस्तुओं के आयातों का बार ब्यौरा उपलब्ध कराएं और डीजीसीआईएंडएस से प्राप्त की गई उक्त सूचना को वर्तमान जांच के उद्देश्य से लिया गया है।
- थ. प्राधिकारी ने संबद्ध वस्तुओं की उत्पादन की लागत और क्षति-रहित कीमत का निर्धारण करने के लिए इस नियमावली के अनुबंध-III में निर्धारित दिशा-निर्देशों के आधार पर घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना की संभव सीमा तक जांच की है।
- द. इस नियमावली के नियम 6(6) के अनुसार, प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पक्षकारों को 9 जुलाई, 2020 को आयोजित मौखिक सुनवाई में मौखिक रूप से अपने विचारों को प्रस्तुत करने के लिए अवसर उपलब्ध कराया जिसमें विभिन्न पक्षकारों द्वारा भाग लिया गया था। सभी पक्षकारों जिन्होंने मौखिक सुनवाई में अपने विचार प्रस्तुत किए, से अनुरोध किया गया था कि वे उसके बाद प्रति-उत्तर प्रस्तुत करने के लिए विरोधी हितबद्ध पक्षकारों को सक्षम बनाने के उद्देश्य से इन विचारों को लिखित अनुरोध के रूप में प्रस्तुत करें।
- ध. इस जांच की प्रक्रिया के दौरान हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों को जहां कहीं भी संगत पाया गया, प्राधिकारी द्वारा इस प्रकटन विवरण में, समाधान किया गया है।
- न. जहां कहीं भी किसी हितबद्ध पक्षकार ने जांच की प्रक्रिया के दौरान आवश्यक सूचना तक पहुंच दिए जाने से इंकार किया है अथवा उसे अन्य प्रकार से उपलब्ध नहीं कराया है अथवा इस जांच में काफी हद तक बाधा पहुंचाई है, प्राधिकारी ने इस प्रकार के हितबद्ध पक्षकारों को असहयोगी के रूप में माना है और उपलब्ध तथ्यों के आधार पर इस प्रकटन विवरण को दर्ज किया है। डिस्कलोजर अथॉरिटी के विचाराधीन आवश्यक तथ्यों वाले 24.7.2020 पर एक डिस्कलोजर स्टेटमेंट जारी किया गया था, डिस्कलोजर स्टेटमेंट पर कमेंट्स को प्रस्तुत करने के लिए 29.7.2020 तक का समय दिया गया था। प्राधिकरण ने इच्छुक दलों से प्राप्त पोस्ट डिस्कलोजर टिप्पणियों को उचित माना है।

- प इस प्रकटन विवरण में “****” गोपनीय आधार पर किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना और इस नियमावली के अंतर्गत प्राधिकारी द्वारा वैसी मानी गई सूचना का द्योतक है।
- फ संबद्ध जांच के लिए प्राधिकारी द्वारा जांच की अवधि के लिए विनिमय दर 1 यूएस डॉलर = 70.63 रुपए के रूप में लिया गया है।

ग. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु

10. वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद ‘डिकेटोपाइरोलो पाइरोल पिग्मेंट रेड 254 (डीपीपी 254)’ है। डीपीपी रेड 254 अच्छी प्रच्छादन क्षमता, आर्गेनिक साल्वेंट के प्रति उत्कृष्ट दृढ़ता और उत्कृष्ट प्रकाश और मौसम स्थिरता के साथ एक अत्यधिक संतृप्त मध्यम हल्का लाल रंग है। यह रंग सिंथेटिक आर्गेनिक रंग होता है जिसमें अनुप्रयोग की पूरी प्रक्रिया के दौरान उनका क्रिस्टलायन अथवा छोटा कण बना रहता है। डीपीपी रेड 254 में अत्यधिक चमक, उच्च रंग की मजबूती, अपारदर्शिता और स्रुप्ता होती। डीपीपी रेड 254 का रासायनिक नाम 3,6-बीआईएस-(4 क्लोरोफिनाइल)-2,5-डाइहाइड्रो पाइरोलो (3,4-सी) पाइरोल, 1,4 डाइओन है। डीपीपी रेड 254 का आणविक सूत्र सी₁₈एच₁₀सी₁₂एन₂ओ₂ है। डीपीपी रेड 254 का रंग सूचकांक संख्या 56110 है और रासायनिक अमूर्त सं. 84632-65-5 है।
11. डीपीपी रेड 254 का निर्माण कई अलग-अलग रंगों अथवा रूपों में किया जा सकता है। डीपीपी रेड 254 के सभी रंगों और रूपों को विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र में शामिल किया जाता है। इसे अपरिष्कृत अथवा परिष्कृत रूप में बेचा जा सकता है। उत्पाद के क्षेत्र में अपरिष्कृत रंग किसी भी रूप में (अर्थात् सूखा हुआ पाउडर, पेस्ट, गीता केक, आदि) तथा किसी भी रूप में परिष्कृत रंग शामिल है उदाहरण के लिए प्रेस केक, शुष्क रंग, पिग्मेंट ब्लैंड्स, पिग्मेंट डिसपर्सन शामिल है।
12. डीपीपी रेड 254 का व्यापक रूप से उपयोग जल जनित पेंट्स, एयर ड्राइंग एल्किड्स, स्टोविंग इनेमल्स, एसिड क्यूरिंग सिस्टम, अमाइन क्यूरिंग इपॉक्सिस, आइसोकाइनेट क्यूर्ड सिस्टम, पावर कोटिंग्स, आदि में उच्च कार्य निष्पादन वाले रंग के रूप में किया जाता है। डीपीपी रेड 254 का उपयोग ऑटोमोटिव और इंडस्ट्रियल पेंट अनुप्रयोगों में भी किया जाता है। इसका उपयोग मेटेलिक प्रभाव वाले परिष्करण प्राप्त करने तथा नए संतृप्त मेटेलिक रंगों के निर्माण के लिए किया जाता है। इस उपयोग प्लास्टिक अनुप्रयोग, विशेष रूप से पोलियोलिफिंस, पीवीसी और पीएस में किया जाता है जहां ये उत्कृष्ट सर्वांगीण गुणों और उत्कृष्ट ताप प्रतिरोध देते हैं। अन्य उपयोगों में धुलाई क्रेट्स, कैप्स, ब्लो मोल्डेड कंटेनर्स और फिल्म शामिल हैं। डीपीपी रेड 254 का उपयोग इंजेक्शन मोल्डेड एचडीपीई के लिए वार्प मुक्त फार्मुलेशंस बनाने में भी किया जाता है।
13. संबद्ध वस्तु प्रशुल्क मद 32041739 के अंतर्गत सीमा प्रशुल्क अधिनियम, 1975 के अध्याय 32 के अधीन वर्गीकरण योग्य है। डीपीपी रेड 254 का आयात अन्य उप शीर्षकों जैसे 32041111, 32041630, 32041711,, 32041719, 32041720, 32041790, 32041973, 32041984, 32049000, 32061110, और 32064990 के अंतर्गत भी किया जा रहा है।

ग.1. घरेलू उद्योग द्वारा किया गया अनुरोध

14. घरेलू उद्योग द्वारा विचाराधीन उत्पाद और संबद्ध वस्तु के संबंध में किया गया अनुरोध और प्राधिकारी द्वारा संगत माना गया अनुरोध निम्नानुसार है:
- क. उत्पाद वर्णन वही है जैसाकि प्राधिकारी द्वारा मूल जांच में निर्णय लिया गया था।
- ख. वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद ‘डिकेटोपाइरोलो पाइरोल पिग्मेंट रेड 254 (डीपीपी 254)’ है। डीपीपी रेड 254 अच्छी प्रच्छादन क्षमता, आर्गेनिक साल्वेंट के प्रति उत्कृष्ट दृढ़ता और उत्कृष्ट प्रकाश और मौसम स्थिरता के साथ एक अत्यधिक संतृप्त मध्यम हल्का लाल रंग है। यह रंग सिंथेटिक आर्गेनिक रंग होता है जिसमें अनुप्रयोग की पूरी प्रक्रिया के दौरान उनका क्रिस्टलायन अथवा छोटा कण बना रहता है। डीपीपी रेड 254 में अत्यधिक चमक, उच्च रंग की मजबूती, अपारदर्शिता और स्रुप्ता होती है।
- ग. वर्तमान जांच एक निर्णायक समीक्षा जांच है और विचाराधीन उत्पाद वही रहता है जिसे पूर्व के आयोजित जांच में परिभाषित किया गया है क्योंकि इस अवधि के दौरान कोई महत्वपूर्ण घटनाक्रम नहीं हुआ है।

- घ. डीपीपी रेड 254 का रासायनिक नाम 3,6-बीआईएस-(4 क्लोरोफिनाइल)-2,5-डाइहाइड्रो पाइरोलो (3,4-सी) पाइरोल, 1,4 डाइओन है। डीपीपी रेड 254 का आणविक सूत्र सी18एच10सी12एन2ओ2 है। डीपीपी रेड 254 का रंग सूचकांक संख्या 56110 है और रासायनिक सार सं. 84632-65-5 है।
- ड. डीपीपी रेड 254 का निर्माण कई अलग-अलग रंगों अथवा रूपों में किया जा सकता है। डीपीपी रेड 254 के सभी रंगों और रूपों को विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र में शामिल किया जाता है। इसे अपरिष्कृत अथवा परिष्कृत रूप में बेचा जा सकता है। उत्पाद के क्षेत्र में अपरिष्कृत रंग किसी भी रूप में (अर्थात् सूखा हुआ पाउडर, पेस्ट, गीता केक, आदि) तथा किसी भी रूप में परिष्कृत रंग शामिल है उदाहरण के लिए प्रेस केक, शुष्क रंग, पिगमेंट ब्लैंड्स, पिगमेंट डिसपर्सन शामिल है।
- च. संबद्ध वस्तु प्रशुल्क मद 32041739 के अंतर्गत सीमा प्रशुल्क अधिनियम, 1975 के अध्याय 32 के अधीन वर्गीकरण योग्य है। डीपीपी रेड 254 का आयात अन्य प्रशुल्क शीर्षकों जिसके अंतर्गत डीपीपी रेड 254 का आयात किया गया है, 32041719, 32041720, 32041711, और 3204 1740 हैं। हालांकि सीमा शुल्क वर्गीकरण सांकेतिक मात्र है और यह किसी भी प्रकार से इस जांच के क्षेत्र पर बाध्यकारी नहीं है।
- छ. संबद्ध देश से भारत में आयात किए गए संबद्ध वस्तुओं और आवेदक द्वारा निर्माण की गई वस्तुओं की गुणवत्ता, उत्पादन अथवा कार्यनिष्पादन में कोई अंतर नहीं है। घरेलू उत्पादक द्वारा उत्पादित और चीन जन.गण से आयात किए गए डीपीपी रेड 254 सभी संगत मानदंडों जैसे भौतिक विशेषताओं, निर्माण की प्रक्रिया और प्रौद्योगिकी, कार्य और उपयोग आदि में तुलनीय हैं। घरेलू उत्पाद और आयात किए गए उत्पाद का उपयोग भारतीय उपभोक्ताओं द्वारा एक दूसरे के स्थान पर किया जा रहा है।

ग.2 अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किया गया अनुरोध

15. अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा विचाराधीन उत्पाद और संबद्ध वस्तु के संबंध में किया गया अनुरोध और प्राधिकारी द्वारा संगत माना गया अनुरोध निम्नानुसार है:
- क. वोक्सको ने कहा है कि घरेलू उद्योग कुछ विशिष्ट विनिर्देशों के विषय वस्तुओं का उत्पादन करने में सक्षम नहीं है जो कुछ उपयोगकर्ता उद्योग चाहते हैं। एंटी-डॉपिंग शुल्क लगाए जाने के बाद भी कई अंतिम ग्राहक आयातित विचाराधीन उत्पाद का उपयोग करना पसंद करते हैं हम समझते हैं कि विचाराधीन उत्पाद का अभी भी भारत में आयात किया जा रहा है जो इस बात की पुष्टि करता है कि गुणवत्ता अलग अलग हैं और तदनुसार, वास्तविक अंतिम उपभोक्ता अपने फार्मुलेशन में आयात किए गए उत्पाद को घरेलू उत्पाद से प्रतिस्थापित करना नहीं चाहते हैं।

ग.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

16. वर्तमान निर्णायक समीक्षा जांच में विचाराधीन उत्पाद "डिकेटोपाइरोलो पाइरोल पिगमेंट रेड 254" है। इसके एक निर्णायक समीक्षा जांच होने के कारण, विचाराधीन उत्पाद का क्षेत्र वही रहता है जो मूल जांच में था। मूल जांच में विचाराधीन उत्पाद को नीचे दिए गए अनुसार परिभाषित किया गया था:

वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद 'डिकेटोपाइरोलो पाइरोल पिगमेंट रेड 254 (डीपीपी 254)' है। डीपीपी रेड 254 अच्छी प्रच्छादन क्षमता, आर्गेनिक साल्वेंट के प्रति उत्कृष्ट दृढ़ता और उत्कृष्ट प्रकाश और मौसम स्थिरता के साथ एक अत्यधिक संतृप्त मध्यम हल्का लाल रंग है। यह रंग सिंथेटिक आर्गेनिक रंग होता है जिसमें अनुप्रयोग की पूरी प्रक्रिया के दौरान उनका क्रिस्टलाइन अथवा छोटा कण बना रहता है। डीपीपी रेड 254 में अत्यधिक चमक, उच्च रंग की मजबूती, अपारदर्शिता और सतृप्ता होती। डीपीपी रेड 254 का रासायनिक नाम 3,6-बीआईएस-(4 क्लोरोफिनाइल)-2,5-डाइहाइड्रो पाइरोलो (3,4-सी) पाइरोल, 1,4 डाइओन है। डीपीपी रेड 254 का आणविक सूत्र सी18एच10सी12एन2ओ2 है। डीपीपी रेड 254 का रंग सूचकांक संख्या 56110 है और रासायनिक अमूर्त सं. 84632-65-5 है।

डीपीपी रेड 254 का निर्माण कई अलग-अलग रंगों अथवा रूपों में किया जा सकता है। डीपीपी रेड 254 के सभी रंगों और रूपों को विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र में शामिल किया जाता है। इसे अपरिष्कृत अथवा परिष्कृत रूप में बेचा जा सकता है। उत्पाद के क्षेत्र में अपरिष्कृत रंग किसी भी रूप में (अर्थात् सूखा हुआ पाउडर, पेस्ट, गीता केक, आदि) तथा किसी भी रूप में परिष्कृत रंग शामिल है उदाहरण के लिए प्रेस केक, शुष्क रंग, पिगमेंट ब्लैंड्स, पिगमेंट डिसपर्सन शामिल है।

डीपीपी रेड 254 का व्यापक रूप से उपयोग जल जनित पेंट्स, एयर ड्राइंग एल्किड्स, स्टोविंग इनेमल्स, एसिड क्यूरिंग सिस्टम, अमाइन क्यूरिंग इपॉक्सिस, आइसोकाइनेट क्योर्ड सिस्टम, पावर कोटिंग्स, आदि में उच्च कार्य निष्पादन वाले रंग के रूप में किया जाता है। डीपीपी रेड 254 का उपयोग ऑटोमोटिव और इंडस्ट्रियल पेंट अनुप्रयोगों में भी किया जाता है। इसका उपयोग मेटेलिक प्रभाव वाले परिष्करण प्राप्त करने तथा नए संतुप्त मेटेलिक रंगों के निर्माण के लिए किया जाता है। इस उपयोग प्लास्टिक अनुप्रयोग, विशेष रूप से पोलियोलिफिंस, पीवीसी और पीएस में किया जाता है जहां ये उत्कृष्ट सर्वांगीण गुणों और उत्कृष्ट ताप प्रतिरोध देते हैं। अन्य उपयोगों में धुलाई क्रेट्स, कैप्स, ब्लो मोल्डेड कंटेनर्स और फिल्म शामिल हैं। डीपीपी रेड 254 का उपयोग इंजेक्शन मोल्डेड एचडीपीई के लिए वार्प मुक्त फार्मुलेशंस बनाने में भी किया जाता है।

संबद्ध वस्तु प्रशुल्क मद 32041739 के अंतर्गत सीमा प्रशुल्क अधिनियम, 1975 के अध्याय 32 के अधीन वर्गीकरण योग्य है। डीपीपी रेड 254 का आयात अन्य उप शीर्षकों जैसे 32041111, 32041630, 32041711,, 32041719, 32041720, 32041790, 32041973, 32041984, 32049000, 32061110, और 32064990 के अंतर्गत भी किया जा रहा है।

17. “समान वस्तु” की परिभाषा से संबंधित इस नियमावली के नियम 2 (घ) में यह उल्लेख है कि “समान वस्तु” का आशय उस वस्तु से है जो भारत में पाटित किए जाने के लिए जांच के अधीन वस्तु से सभी मामलों में सदृश्य अथवा समान हो या इस प्रकार की वस्तु के अभाव में, एक अन्य वस्तु जो यद्यपि सभी अर्थों में समान नहीं हो, में जांच के अधीन वस्तुओं के लक्षणों से निकटता से मिलता-जुलता लक्षण हो।
18. “समान वस्तु” पारिभाषिक शब्द की उपर्युक्त परिभाषा से, यह स्पष्ट है कि समान वस्तु जांच के अधीन वस्तु से सभी अर्थों में सदृश्य अथवा समान हो। पारिभाषिक शब्द समान वस्तु के क्षेत्र में वे सभी वस्तु भी शामिल होंगी जिनमें सभी अर्थों में सदृश्य अथवा समान वस्तुओं के अभाव में जांच के अधीन वस्तुओं की विशेषताओं से निकटता से मिलती-जुलती विशेषताएं हों।
19. प्राधिकरण ने ध्यान दिया कि घरेलू उद्योग के सामानों को पीयूसी के समान नहीं होने के बारे में, उपयोगकर्ताओं द्वारा उनके मामले को स्थापित करने के लिए प्रदान किए गए किसी भी तकनीकी विनिर्देश का कोई सबूत नहीं है। आगे एसएसआर होने के नाते, प्राधिकरण ने पीयूसी का दायरा नहीं बढ़ाया है।
20. रिकॉर्ड पर उपलब्ध सूचना के आधार पर, प्राधिकारी यह मानने का प्रस्ताव करते हैं कि संबद्ध देश से आयात किए गए विचाराधीन उत्पाद और भारतीय घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादन किए गए उत्पाद में कोई ज्ञात अंतर नहीं है। भारतीय घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादन किए गए विचाराधीन उत्पाद भौतिक और रासायनिक विशेषताओं, कार्य और उपयोग, उत्पाद विनिर्देशन, वितरण एवं विपणन और वस्तुओं के प्रशुल्क वर्गीकरण जैसी विशेषताओं के मामले में आयात किए गए संबद्ध उत्पाद से तुलनीय हैं। ये दोनों तकनीकी रूप से और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। उपभोक्ता इन दोनों का उपयोग एक दूसरे के स्थान पर कर रहे हैं।
21. इस प्रकार से प्राधिकारी यह मानने का प्रस्ताव करते हैं कि आवेदक घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादन किए गए उत्पाद इस नियमावली के अनुसार संबद्ध देश से आयात किए गए संबद्ध विचाराधीन उत्पाद के समान वस्तु हैं।

घ. घरेलू उद्योग का क्षेत्र एवं आधार

घ.1 घरेलू उद्योग द्वारा किया गया अनुरोध

22. घरेलू उद्योग द्वारा घरेलू उद्योग के क्षेत्र एवं आधार के में निम्नलिखित अनुरोध किए गए है:

क. वर्तमान आवेदन मै. हेउबेक कलर प्राइवेट लिमिटेड द्वारा दायर किया गया है। आवेदक भारत में किसी आयातक से अथवा संबद्ध देश के निर्यातक से संबंधित नहीं है और न ही आवेदक ने विचाराधीन उत्पाद का आयात किया है। आवेदक भारत में संबद्ध वस्तुओं का एकमात्र निर्माता है। आवेदक का भारत में संबद्ध वस्तुओं का 100 प्रतिशत कुल घरेलू उत्पादन पर अधिकार है। इस कारण से आवेदक आधार की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं और इस नियमावली के अर्थ के अनुसार घरेलू उद्योग हैं।

ख. आवेदक का यह अनुरोध है कि पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) के अधीन घरेलू उद्योग की परिभाषा के संबंध में, घरेलू उद्योग के क्षेत्र से ईओयू को स्पष्ट रूप से बाहर नहीं किया गया है। संबद्ध वस्तुओं के आयातों पर मूल जांच के अलावा, प्राधिकारी ने अनेक जाँचों में अपने अंतिम जांच परिणामों में यह माना है कि निर्यातोन्मुख एकक पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) और 5(3) के अंतर्गत घरेलू उद्योग होने के लिए पात्र हैं। प्राधिकारी ने निम्नलिखित मामलों में ईओयू को पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) और 5(3) के अंतर्गत घरेलू उद्योग के रूप में माना है:

- (i) दिनांक 22 मई 2014 की अधिसूचना सं. 14/5/2012-डीजीएडी के माध्यम से मलेशिया, चीन जन.गण., चीनी ताइपेई और यूएसए से सोलर सेल पर पाटनरोधी जांच संबंधी अंतिम जांच परिणाम को अधिसूचित किया।
- (ii) दिनांक 21 अगस्त 2013 की अधिसूचना फाइल सं. 15/7/2011-डीजीएडी के माध्यम से चीन जन.गण और स्विट्जरलैंड से विटामिन-ए पालमीटेट पर पाटनरोधी जांच संबंधी निर्णायक समीक्षा अंतिम जांच परिणाम अधिसूचित किया।
- (iii) दिनांक 9 जून, 2012 की अधिसूचना सं. 14/7/2012-डीजीएडी के माध्यम से चीन जन.गण, कोरिया गणराज्य और थाईलैंड से अलॉय रोड व्हील्स पर पाटनरोधी जांच संबंधी अंतिम जांच परिणाम अधिसूचित किया।
- (iv) दिनांक 23 अगस्त, 2010 की अधिसूचना सं. 14/5/2009-डीजीएडी के माध्यम से ओमान, सऊदी अरब और सिंगापुर से पोलीप्रोपीलीन पर पाटनरोधी जांच संबंधी अंतिम जांच परिणाम अधिसूचित किया।
- (v) दिनांक 2 अप्रैल, 2007 को अधिसूचना सं. 14/15/2005-डीजीएडी के माध्यम से चीन जन.गण., हांग कांग, सिंगापुर और चीनी ताइपेई से कम्पैक्ट डिस्क-रिकॉर्डेबल (सीडी-आर) पर पाटनरोधी जांच संबंधी अंतिम जांच परिणाम अधिसूचित किया।
- (vi) दिनांक 19 नवंबर, 2008 की अधिसूचना सं. 14/17/2007-डीजीएडी के माध्यम से चीन जन.गण., हांगकांग और चीनी ताइपेई से डिजिटल वर्सेटाइल डिस्क-रिकॉर्डेबल (डीवीडीआर और डीवीडी-आरडब्ल्यू) पर पाटनरोधी जांच संबंधी अंतिम जांच परिणाम अधिसूचित किया।
- (vii) दिनांक 6 मार्च 2009 की अधिसूचना सं. 14/9/2007-डीजीएडी के माध्यम से ईरान, मलेशिया, कोरिया गणराज्य, थाईलैंड, यूएई और वियतनाम से कम्पैक्ट डिस्क-रिकॉर्डेबल (सीडी-आर) पर पाटनरोधी जांच संबंधी अंतिम जांच परिणाम अधिसूचित किया।

उपर्युक्त जांच परिणाम यह दर्शाता है कि प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के 2(ख) और 5(3) के अंतर्गत घरेलू उद्योग के रूप में योग्य होने के लिए पूर्व में ईओयू यूनिट को स्वीकार किया है। भारत में सोलर सेल चाहे उसे मॉड्यूल अथवा पैनल में असम्बल किया गया हो अथवा नहीं, के आयातों पर रक्षोपाय जांच में भी, प्राधिकारी ने यह माना कि एक ईओयू घरेलू उद्योग के रूप में पात्र है। इस प्रकार से केवल यह तथ्य कि क्रियाकलाप ईओयू सुविधा में किया जाता है, “घरेलू उद्योग” के रूप में आवेदक की स्थिति को प्रतिकूल रूप से प्रभावित नहीं करता है।

ग. अन्य हितबद्ध पक्षकार द्वारा उल्लिखित मामलों के संबंध में, आवेदक ने यह अनुरोध किया कि पैथेलिक एनहाइड्राइड के आयातों पर पाटनरोधी जांच में, मै. आईजी पैट्रोकेमिकल्स(100 प्रतिशत ईओयू) न तो आवेदक था और न ही समर्थक। इस प्रकार से, घरेलू उद्योग के रूप में मै. आईजी पैट्रोकेमिकल्स की पात्रता के मुद्दे का निपटारा प्राधिकारी द्वारा अपने जांच परिणाम में नहीं किया गया था।

घ. अन्य हितबद्ध पक्षकार द्वारा उल्लिखित सेफट्रियाक्सोन डिसोडियम हेमिहेप्टाहाइड्रेट – स्ट्रायल के आयातों पर अन्य पाटनरोधी जांच के संबंध में आवेदक ने यह अनुरोध किया कि मै. आर्चिड केमिकल्स (100 प्रतिशत ईओयू) ने उक्त पाटनरोधी जांच की शुरुआत किए जाने के लिए कभी भी आवेदन दायर नहीं किया और संपूर्ण जांच की प्रक्रिया के दौरान कभी भी भाग नहीं लिया। इसके अलावा, जांच की

प्रक्रिया के दौरान जब निर्दिष्ट प्राधिकारी ने मैसर्स आर्चिड केमिकल्स से सूचना प्राप्त करने का अनुरोध किया, तब यह पाया गया था कि आर्चिड केमिकल्स को घरेलू बाजार में बिक्री नहीं थी। इस कारण से यह स्पष्ट है कि वह कंपनी जिसने न तो निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष आवेदन दायर किया और न ही जांच में भाग लिया और इसके साथ ही उसकी घरेलू बिक्री नहीं थी, पाटनरोधी नियमावली के अंतर्गत घरेलू उद्योग के रूप में नहीं माना जाएगा। तदनुसार, प्रतिवादी द्वारा दिए गए तर्क आधारहीन हैं और उनमें कोई दम नहीं है।

ब.2 अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किया गया अनुरोध

23. विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा घरेलू उद्योग के क्षेत्र और आधार के संबंध में किया गया अनुरोध नीचे दिया गया है:

- क. आवेदक 100 प्रतिशत निर्यातोन्मुख उपकरण ("ईओयू") है और यह वर्तमान जांच के अंतर्गत घरेलू उद्योग के रूप में माने जाने के लिए पात्र नहीं है।
- ख. प्रतिवादियों ने यह स्वीकार किया है कि याचिकाकर्ता को मूल जांच में घरेलू उद्योग के भाग के रूप में माना गया था। हालांकि, यह अनुरोध किया गया है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) और 5(3) की अपनी व्याख्या में गलती की है क्योंकि आवेदक घरेलू उद्योग बनने के लिए प्रारंभिक आवश्यकताओं को पूरा नहीं करता।
- ग. यह अनुरोध किया जाता है कि पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य पाटन के कारण घरेलू बाजार में हो रही अनुचित व्यापार जिसके फलस्वरूप घरेलू उद्योग को क्षति हो रही है, को समाप्त करना है। लेकिन यह उद्देश्य समाप्त हो जाता है जब घरेलू उद्योग एक ईओयू है क्योंकि ईओयू प्राथमिक रूप से घरेलू उद्योग के लिए नहीं है बल्कि निर्यात बाजार के लिए है और इस कारण से वे घरेलू बाजार में आयात की गई वस्तुओं से प्रतिस्पर्धा नहीं करते हैं।
- घ. यह अनुरोध किया जाता है कि ईओयू का प्राथमिक ध्यान निर्यात बाजार की मांग को पूरा करना है और वह ईओयू के कार्य-चालन तथा इसके अभिमुखीकरण के संबंध में कानून के अंतर्गत दिए गए प्रावधानों से बहुत अधिक स्पष्ट है।
- ड. विदेश व्यापार नीति के प्रावधान इसे अत्यधिक मात्रा में स्पष्ट करते हैं कि निर्यातोन्मुख एकक का ध्यान अपने उत्पादन और विदेशी बाजारों के लिए बिक्री पर केन्द्रित और यह घरेलू आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्थापित नहीं किया गया है।

ब.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

24. इस नियमावली के नियम 2(ख) में घरेलू उद्योग निम्नलिखित रूप में परिभाषित है:

"घरेलू उद्योग" का तात्पर्य ऐसे समग्र घरेलू उत्पादकों से है जो समान वस्तु के विनिर्माण और उससे जुड़े किसी कार्यकलाप में संलग्न हैं अथवा ऐसे उत्पादकों से है जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उक्त वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा भाग बनता है सिवाए उस स्थिति के जब ऐसे उत्पादक आरोपित पाटित वस्तु के निर्यातकों या आयातकों से संबंधित होते हैं अथवा वे स्वयं उसके आयातक होते हैं, तो ऐसे मामले में "घरेलू उद्योग" पद का अर्थ शेष उत्पादकों के संदर्भ में लगाया जा सकता है।"

25. वर्तमान निर्णायक समीक्षा आवेदन मै. हेउबाक कलर प्राइवेट लिमिटेड द्वारा दायर किया गया है। आवेदक न तो भारत में किसी आयातक से संबंधित है और न ही संबद्ध देश के किसी भी निर्यातक से संबद्ध है। इसके अलावा, आवेदक ने जांच की अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं का आयात नहीं किया है। आवेदक जांच की अवधि के दौरान भारत में संबद्ध वस्तुओं का एकमात्र उत्पादक है।
26. हितबद्ध पक्षकारों के इस अनुरोध के संबंध में कि आवेदक 100 प्रतिशत ईओयू और इस कारण से उसे घरेलू उद्योग के रूप में नहीं माना जा सकता है, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि इस नियमावली के नियम 2(ख) के अंतर्गत, घरेलू उद्योग के क्षेत्र से ईओयू को स्पष्ट रूप से बाहर नहीं रखा गया है। घरेलू उद्योग के पात्र घटकों के रूप में ईओयू पर विचार करना जैसाकि विगत में अनेक जांचों में किया गया है, प्राधिकारी की निरंतर कार्य-पद्धति रही है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तुओं के मूल जांच में, प्राधिकारी ने आवेदक को घरेलू उद्योग के रूप में

पात्र होने पर विचार किया है। किसी भी हितबद्ध पक्षकारों ने प्राधिकारी द्वारा आवेदक के ईओयू होने के आधार पर पात्र घरेलू उद्योग के रूप में आवेदक को मानने के निर्णय को चुनौती नहीं दी है।

27. प्राधिकरण नोट करता है कि नियमों के नियम 2 (बी) के तहत घरेलू उद्योग के दायरे से ईओयू का कोई स्पष्ट बहिष्करण नहीं है। यह ईओयू को घरेलू उद्योग के योग्य घटक के रूप में विचार करने के लिए प्राधिकरण की निरंतर अभ्यास है जैसा कि अतीत में कई जांच में किया गया था। प्राधिकरण यह भी नोट करता है कि विषय वस्तुओं की मूल जांच में, प्राधिकरण ने आवेदक को घरेलू उद्योग के रूप में पात्र माना है। किसी भी इच्छुक पक्ष ने आवेदक के ईओयू होने के आधार पर आवेदक को पात्र घरेलू उद्योग के रूप में मानने के प्राधिकरण के निर्णय को चुनौती नहीं दी थी।
28. इच्छुक पार्टी में से एक ने प्रस्तुत किया है कि ईओयू का उत्पादन और बिक्री मुख्य रूप से निर्यात बाजार के लिए होती है और वे घरेलू बाजार में आयातित वस्तुओं के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं करते हैं। इस संबंध में, रुचि पार्टी ने भारतीय ई-वैद्य बनाने वाली संस्था एसोसिएशन बनाम नामित प्राधिकारी के मामले में चीन के पीआर और सेस्टैट जजमेंट से विटामिन ई के आयात या निर्यात के बारे में सूर्यास्त समीक्षा जांच पर भरोसा किया। यह इच्छुक पार्टी द्वारा आगे प्रस्तुत किया गया है कि प्राधिकरण ने अतीत में घरेलू उद्योग के दायरे में ईओयू को शामिल नहीं किया है। इस संबंध में, प्राधिकरण नोट करता है कि ईओयू को घरेलू बाजार में बेचने से विरुद्ध नहीं किया गया है। वास्तव में, आवेदक के पास घरेलू बाजार में विषय वस्तुओं की महत्वपूर्ण बिक्री है।
29. जैसा कि विरोधी दलों द्वारा उल्लेख किए गए मामलों का संबंध है, प्राधिकरण नोट करता है कि फथेलिक एनहाइड्राइड के आयात की पाटनरोधी जांच में, एम / एस आईजी के पेट्रोकेमिकल्स (100 प्रतिशत "ईओयू") न तो आवेदक थे और न ही समर्थक। इस प्रकार, मेसर्स की पात्रता का मुद्दा। डीआई के रूप में आईजी पेट्रोकेमिकल्स को प्राधिकरण ने अपनी खोज में नहीं लिया था। इसके अलावा, जांच के दौरान जब नामित प्राधिकारी ने मेसर्स से जानकारी का अनुरोध किया। आर्किड केमिकल्स, यह पाया गया कि एम / एस। आर्किड केमिकल्स की घरेलू बाजार में बिक्री नहीं थी। इसलिए, यह ध्यान दिया जाता है कि एक इकाई जो न तो नामित प्राधिकरण के समक्ष आवेदन दायर करती है और न ही जांच में भाग लेती है और घरेलू बिक्री नहीं करती है, को नियमों के तहत घरेलू उद्योग नहीं माना जाएगा।
30. उपर्युक्त को देखते हुए, प्राधिकारी इस नियमावली के नियम 2(ख) के आशय से पात्र घरेलू उद्योग के रूप में आवेदक को मानने का प्रस्ताव करते हैं और यह मानते हैं कि यह आवेदन इस नियमावली के नियम 5(3) के संबंध में आधार के मानदंड को पूरा करता है।

ड. गोपनीयता और अन्य मुद्दे

ड.1 घरेलू उद्योग द्वारा किया गया अनुरोध

31. घरेलू उद्योग द्वारा गोपनीयता और अन्य मुद्दों के संबंध में निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:

- क. आवेदक जांच की अवधि में एकमात्र उत्पादक है और इस प्रकार से उत्पादन, बिक्री आदि जैसे मात्रा संबंधी मानदंडों के संबंध में भी इसकी सूचना वास्तविक आधार पर प्रकट नहीं की गई है क्योंकि वे पब्लिक डोमेन में नहीं हैं। इस प्रकार की अत्यधिक व्यापार संवेदनशील सूचना के प्रकटन से प्रतियोगियों और उपभोक्ताओं को बहुत अधिक प्रतिस्पर्धी लाभ मिलेगा और इसके कारण आवेदक कंपनी के हित पर गंभीर रूप से प्रभाव पड़ेगा। हालांकि आवेदक ने जहां भी आवश्यक हुआ सूचीबद्ध सूचना उपलब्ध कराई है।
- ख. आवेदक ने जांच की शुरुआत को न्यायोचित ठहराते हुए पर्याप्त सूचना उपलब्ध कराई है। आवेदक ने आवेदन प्रोफार्मा के अंतर्गत यथा-अपेक्षित सभी सूचना उपलब्ध कराई है। राइट-अप में कुछ मानदंडों के मूल्यांकन की असफलता के संबंध में, आवेदक यह अनुरोध करते हैं कि इस आवेदन में सभी मानदंडों का मूल्यांकन करने के लिए आवेदक की कोई आवश्यकता नहीं है। आवेदक सभी संगत सूचना उपलब्ध कराने के लिए जो इसने किया है, बाध्य हैं।

- ग. घरेलू उद्योग ने आवेदन दायर किया है जिसमें चीन जन.गण. और स्विट्जरलैंड के लिए अलग-अलग आंकड़े जैसे बाजार हिस्सा, आयात इत्यादि हैं। हालांकि प्राधिकारी ने केवल चीन के विरुद्ध यह जांच शुरू की है। इसके बावजूद 2016 के बाद स्विट्जरलैंड से कोई आयात नहीं हुआ है। इस प्रकार से याचिका में दी गई सूचना अधिकांशतः केवल चीन जन.गण की संभावना से लिए गए आंकड़ों को शामिल करता है। इसके साथ ही, बाजार हिस्सा, आयातों आदि के संबंध में सूचना चीन जन.गण और स्विट्जरलैंड के लिए पृथक रूप में उपलब्ध कराई गई है। तदनुसार, चीन जन.गण. के सदृश्य आंकड़ों के आधार पर विश्लेषण किया जा सकता है। अद्यतित याचिका दायर करने के का जहां तक प्रश्न है, पाटनरोधी नियमावली के अंतर्गत ऐसी कोई आवश्यकता नहीं है।
- घ. वास्तव में जांच की अवधि और पिछले दो वर्षों के दौरान स्विट्जरलैंड से कोई आयात नहीं हुआ है। डीजीसीआईएंडएस के आंकड़े गोपनीय आंकड़े हैं और इस कारण से उसे परिचालित नहीं किया जा सकता है। हितबद्ध पक्षकार यदि वे ऐसा करना चाहें तो डीजीसीआईएंडएस से लेन-देनवार आंकड़ों को संग्रह करने के स्वतंत्र हैं। दिनांक 8 दिसंबर, 2017 की व्यापार सूचना फा.सं.4/2/2017 का भी संदर्भ लिया गया है।
- ड. आवेदक ने यह अनुरोध किया है कि इसने दिनांक 7 सितंबर, 2018 की व्यापार सूचना सं. 10/2018 और इस नियमावली के नियम 7 के अनुसार आवेदन के अगोपनीय पाठ में आंकड़े अनुक्रमित रूप में उपलब्ध कराए हैं।
- च. अनुक्रमित सूचना जहां भी संभव हुआ, उपलब्ध कराई गई है। क्षति का विश्लेषण आवश्यक रूप से उस प्रवृत्ति का विश्लेषण है जिसे इस आवेदन में दिए गए विभिन्न मानदंडों की प्रवृत्तियों के माध्यम से आसानी से देखा जा सकता है।
- छ. इस तर्क के उत्तर के संबंध में कि चीन पिग्मेंट रेड 254 बाजार की गहराई का विश्लेषण और संभावना रिपोर्ट (बीजिंग झोंगजिंग सूचना प्रौद्योगिकी लिमिटेड द्वारा तैयार किया गया है) को इस आवेदन में गोपनीय रखा गया है। आवेदक ने यह अनुरोध किया कि अगोपनीय पाठ गोपनीय सूचना अधिमानतः अनुक्रमित अथवा पूरी तरह से ढका हुआ, के साथ गोपनीय पाठ की एक प्रतिकृति होनी अपेक्षित है। आगे यह अनुरोध किया जाता है कि इस रिपोर्ट में निहित सूचना तृतीय पक्षकार की सूचना है और घरेलू उद्योग से यह अपेक्षित नहीं है कि वह उसे प्रकट करे क्योंकि यह पब्लिक डोमेन में उपलब्ध नहीं है। वास्तव में प्राधिकारी ने यूरोपीय यूनियन और एमओआर और एमबीटीएस के मूल के अथवा वहांसे निर्यात किए गए तथा चीन जनतांत्रिक गणराज्य के मूल के अथवा वहां से निर्यात किए गए “कुछ रबड़ केमिकल्स अर्थात् टीडीक्यू ऐंड पीएक्स-13” के आयातों के संबंध में निर्णायक समीक्षा जांच में तृतीय पक्षकार की सूचना वाले ऐसी रिपोर्टों को गोपनीय के रूप में स्वीकार किया।

ड.2 अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किया गया अनुरोध

32. निम्नलिखित अनुरोध गोपनीयता और अन्य मुद्दों के संबंध में अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए हैं:

- क. घरेलू उद्योग ने अपनी याचिका में आयातों, एनआईपी गणना, उत्पादकता, खरीद, अनुसंधार और विकास लागत, निर्यात कीमत, खरीद (मात्रा तथा मूल्य), ऋण एवं अग्रिम राशि तथा अन्य संबंधित लागत से संबंधित आंकड़ों पर अत्यधिक गोपनीयता का दावा किया है। यह प्रतिवादी को उचित रूप से अपना बचाव करने से रोकता है।
- ख. प्राधिकारी ने एसएसआर की शुरुआत संबंधी सूचना अधिसूचना में इस जांच में केवल चीन जन.गण को संबद्ध देश होने की पहचान की है। हालांकि, इस याचिका में घरेलू उद्योग द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़े चीन जन.गण. और स्विट्जरलैंड दोनों से मेल खाते हैं। घरेलू उद्योग ने जांच की शुरुआत के अनुसरण में अद्यतित याचिका उपलब्ध नहीं कराई है। चीन जन.गण. के लिए इस प्रकार की अलग की गई सूचना के अभाव में, प्रतिवादी घरेलू उद्योग के दावे को प्रभावी रूप से गलत साबित करने में सक्षम नहीं हैं।

- ग. प्राधिकारी को घरेलू उद्योग की गोपनीयता संबंधी दावे का उपयुक्त रूप से आंकलन करना चाहिए और इस संबंध में संगत व्यापार सूचना के माध्यम से जारी किए गए स्पष्टीकरण पर विचार करना चाहिए। वर्तमान मामले में, घरेलू उद्योग की याचिका के अगोपनीय पाठ में बहुत अधिक त्रुटियां हैं जिसे घरेलू उद्योग के आर्थिक कार्य-निष्पादन से संबंधित आवश्यक सूचना के प्रकट न किए जाने के आधार पर देखा जा सकता है। इसके फलस्वरूप, घरेलू उद्योग की स्थिति का उपयुक्त रूप से आंकलन करने और अपने हित का बचाव करने में हितबद्ध पक्षकारों के अधिकारों को गंभीर नुकसान पहुंचा है। इसके अलावा, घरेलू उद्योग को निष्पक्ष जांच का लाभ और प्रतिवादी द्वारा उसका खंडन के लिए चीन जन.गण. में विचाराधीन उत्पाद के लिए कथित अत्यधिक क्षमताओं के संबंध में सूचना भी उपलब्ध करानी चाहिए। तदनुसार, प्रतिवादी आदरपूर्वक मानीय निर्दिष्ट प्राधिकारी से अनुरोध करते हैं कि वे घरेलू उद्योग द्वारा अत्यधिक गोपनीयता के दावे को अस्वीकार कर दें और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के लिए आर्थिक/क्षति के संकेतकों से संबंधित सुस्पष्ट एवं तर्कसंगत सूचना उपलब्ध कराएं।

ड.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

33. सूचना की गोपनीयता के संबंध में, इस नियमावली के नियम 7 में नीचे दिए गए अनुसार प्रावधान हैं:
- “गोपनीय सूचना: (1) नियम 6 के उपनियमों (2), (3) और (7), नियम 12 के उपनियम (2), नियम 15 के उपनियम (4) और नियम 17 के उपनियम (4) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी जांच की प्रक्रिया में नियम 5 के उपनियम (1) के अंतर्गत प्राप्त आवेदनों के प्रतियां या किसी पक्षकार द्वारा गोपनीय आधार पर निर्दिष्ट प्राधिकारी को प्रस्तुत किसी अन्य सूचना के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी उसकी गोपनीयता से संतुष्ट होने पर उस सूचना को गोपनीय मानेंगे और ऐसी सूचना देने वाले पक्षकार से स्पष्ट प्राधिकार के बिना किसी अन्य पक्षकार को ऐसी किसी सूचना का प्रकटन नहीं करेंगे।*
- (2) निर्दिष्ट प्राधिकारी गोपनीय अधिकारी पर सूचना प्रस्तुत करने वाले पक्षकारों से उसका अगोपनीय सारांश प्रस्तुत करने के लिए कह सकते हैं और यदि ऐसी सूचना प्रस्तुत करने वाले किसी पक्षकार की राय में उस सूचना का सारांश नहीं हो सकता है तो वह पक्षकार निर्दिष्ट प्राधिकारी को इस बात के कारण संबंधी विवरण प्रस्तुत करेगा कि सारांश करना संभव क्यों नहीं है।*
- (3) उप नियम (2) में किसी बात के होते हुए भी यदि निर्दिष्ट प्राधिकारी इस बात से संतुष्ट है कि गोपनीयता का अनुरोध अनावश्यक है या सूचना देने वाला या तो सूचना को सार्वजनिक नहीं करना चाहता है या उसकी सामान्य रूप में या सारांश रूप में प्रकटन नहीं करना चाहता है तो वह ऐसी सूचना पर ध्यान नहीं दे सकते हैं।*
34. विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा सूचना का अगोपनीय पाठ सभी हितबद्ध पक्षकारों को दिनांक 7 सितंबर, 2018 की व्यापार सूचना सं. 10/2018 तथा नियम 6(7) के अनुसार सार्वजनिक फाइल के माध्यम से उपलब्ध कराया गया था।
35. सूचना की गोपनीयता के संबंध में, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा गोपनीय आधार पर उपलब्ध कराई गई सूचना की जांच इस नियमावली के नियम 7 के अनुसार गोपनीयता के दावों की पर्याप्तता के संबंध में की गई थी। संतुष्ट होने पर प्राधिकारी ने जहां भी आवश्यक हुआ गोपनीयता के दावे को स्वीकार किया है और इस प्रकार की सूचना को गोपनीय माना गया है।
36. चीन जन.गण. के सदृश्य आंकड़ों वाली अद्यतित याचिका के संबंध में, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि आवेदक ने चीन जन.गण. और स्विट्जरलैंड दोनों के लिए आंकड़े उपलब्ध कराए हैं। हालांकि, वर्तमान निर्णायक समीक्षा जांच के उद्देश्य से, प्राधिकारी ने केवल चीन जन.गण. के विरुद्ध जांच की शुरुआत की क्योंकि आवेदक द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना का प्रथम दृष्टया विश्लेषण स्विट्जरलैंड से पाटन की संभावना को नहीं दर्शाता है। वर्तमान मामले की तथ्यों और परिस्थितियों को देखते हुए प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि केवल चीन जन.गण. के लिए आंकड़ों वाली अद्यतित याचिका उपलब्ध कराने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि चीन जन.गण. के सदृश्य आंकड़ों को घरेलू उद्योग द्वारा अपने आवेदन में पहले ही पृथक रूप से उपलब्ध कराया गया है।

च. सामान्य मूल, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन का निर्धारण**च.1. सामान्य मूल्य**

37. इस अधिनियम की धारा 9क(1)(ग) के अधीन, किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का तात्पर्य यह है कि:

- i व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में समान वस्तु की तुलनीय कीमत जब वह उप नियम (6) के तहत बनाए गए नियमों के अनुसार यथानिर्धारित निर्यातक देश या क्षेत्र में खपत के लिए नियत हो, अथवा
- ii जब निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में समान वस्तु की कोई बिक्री न हुई हो अथवा जब निर्यातक देश या क्षेत्र की बाजार विशेष की स्थिति अथवा उसके घरेलू बाजार में कम बिक्री मात्रा के कारण ऐसी बिक्री की उचित तुलना न हो सकती हो तो सामान्य मूल्य निम्नलिखित में से कोई एक होगा:-

क. समान वस्तु की तुलनीय प्रतिनिधिक कीमत जब उसका निर्यात उप-धारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी उचित तीसरे देश से किया गया हो; अथवा उपधारा- (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार यथानिर्धारित प्रशासनिक, बिक्री और सामान्य लागत एवं लाभ हेतु उचित वृद्धि के साथ उद्गम वाले देश में उक्त वस्तु की उत्पादन लागत;

ख. परंतु यदि उक्त वस्तु का आयात उद्गम वाले देश से भिन्न किसी देश से किया गया है और जहां उक्त वस्तु को निर्यात के देश से होकर केवल यानांतरण किया गया है अथवा ऐसी वस्तु का उत्पादन निर्यात के देश में नहीं होता है, अथवा निर्यात के देश में कोई तुलनीय कीमत नहीं है, वहां सामान्य मूल्य का निर्धारण उद्गम वाले देश में उसकी कीमत के संदर्भ में किया जाएगा।

बशर्ते कि उत्पत्ति के देश को छोड़कर किसी देश से वस्तु के आयात के मामले में और जहां उस वस्तु को निर्यात किए जाने वाले देश के माध्यम से केवल लदान किया गया है अथवा इस प्रकार की वस्तु का उत्पादन निर्यात किए जाने वाले देश में नहीं किया गया है अथवा निर्यात किए जाने वाले देश में कोई तुलनीय कीमत नहीं है, सामान्य मूल्य का निर्धारण उत्पत्ति के देश में इसकी कीमत के संदर्भ में किया जाएगा।

च.2. घरेलू उद्योग द्वारा किया गया अनुरोध

38. आवेदक द्वारा सामान्य मूल्य के संबंध में निम्नलिखित अनुरोध किया गया:

- क. चीन को प्राधिकारी द्वारा पिछले मामलों में लिए गए दृष्टिकोण और अन्य देशों में जांच करने वाले प्राधिकारियों द्वारा लिए गए दृष्टिकोण के अनुरूप एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था माना जाना चाहिए। चीन के उत्पादकों की लागत और कीमत पर सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए विश्वास नहीं किया जा सकता।
- ख. आवेदक ने यूरोपीय कमीशन द्वारा प्रकाशित एक रिपोर्ट का हवाला दिया है। यूरोपीय कमीशन ने चीन जन.गण. में विशिष्ट क्षेत्रों में बाजार की स्थिति की जांच की और इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि चीन जन.गण. में जमीन, ऊर्जा, पूंजी, कच्चा माल और अन्य सामग्री इनपुट तथा क्रमिक से संबंधित देशभर के बाजारों में तोड़-मरोड़ किया गया है।
- ग. इस नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 1 से 6 तक चीन जन.गण. से आयातों के लिए सामान्य मूल्य की गणना हेतु लागू नहीं होती है जब तक उत्पादक/निर्यातक पर्याप्त साक्ष्य के साथ यह नहीं दर्शाता हो कि वह बाजार अर्थव्यवस्था की स्थितियों के अंतर्गत कार्य कर रहा है। परिणामस्वरूप, चीन जन.गण. के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण इस नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के संबंध में किया जाना है। इस नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 में यह प्रावधान है कि गैर-बाजार अर्थव्यवस्था में सामान्य मूल्य की गणना का निर्धारण निम्नलिखित आधार पर किया जा सकता है:
 - i. बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में कीमत;
 - ii. बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में संरचित लागत;

- iii. इस प्रकार के तीसरे देश से भारत सहित अन्य देशों में कीमत;
- iv. लाभ की उचित राशि को शामिल करने के लिए समायोजित भारत में वास्तव में भुगतान की गई कीमत।
- घ. आवेदक ने निम्नलिखित तरीके से एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के रूप में मानते हुए चीन जन.गण. के लिए सामान्य मूल्य तय किया है:
- (i) **कच्चा माल और अन्य उपभोग की जाने वाली सामग्री:** कच्चे माल की खपत और कीमतें घरेलू उद्योग के अनुभव के आधार पर ली गई हैं। संबद्ध वस्तुओं के निर्माण के लिए अपेक्षित अधिकांश कच्चे माल का आयात घरेलू उद्योग द्वारा किया जाता है। इस कारण से घरेलू उद्योग के कच्चे माल के कीमतें प्रमुख कच्चे माल की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों को दर्शाती हैं और उसी कीमतों पर विचार सामान्य मूल्य की संरचना के लिए किया गया है।
 - (ii) **अन्य निर्माण लागत/परिवर्तन लागत:** अन्य निर्माण लागतों पर विचार घरेलू उद्योग के अनुभव के आधार पर किया गया है।
 - (iii) **एसजीए लागत और वित्त लागत:** एसजीए लागत और वित्त लागत पर विचार घरेलू उद्योग के अनुभव के आधार पर किया गया है।
 - (iv) **लाभ का मार्जिन:** 5 प्रतिशत लाभ के मार्जिन पर विचार सामान्य मूल्य तय करने के लिए किया गया।
- ड. डीजीसीआईएंडएस के लेन-देनवार आंकड़ों के आधार पर निबल निर्यात कीमत निकाली है। डीजीसीआईएंडएस की लेन-देनवार आंकड़ों के आधार पर परिकलित सीआईएफ निर्यात कीमत से, कारखानागत स्तर पर निबल निर्यात कीमत तय करने के लिए समुद्री भाड़ा, समुद्री बीमा, कमीशन, बैंक शुल्क, पोर्ट संबंधी खर्च और अंतर्देशीय भाड़ा प्रभारों के कारण समायोजन किया गया है।
- च. आवेदक ने यह अनुरोध किया है कि मूल्य जांच में प्राधिकारी ने कारखानागत निर्यात कीमत की गणना करते समय “अप्रतिदाय मूल्यवर्धित कर” के कारण उपयुक्त समायोजन किया है। इसके अलावा आवेदक ने अनुरोध किया है कि प्राधिकारी ने चीन जन.गण. के विरुद्ध सभी पाटनरोधी जाँचों में “अप्रतिदाय मूल्यवर्धित कर” के आधार पर समायोजन करें। जांच की अवधि के दौरान, मूल्यवर्धित कर को वापस करना/निर्यात वापसी दर शून्य प्रतिशत भी और तदनुसार प्राधिकारी के लिए यह आवश्यक है कि वे वर्तमान समीक्षा जांच में कारखानागत निर्यात कीमत की गणना करते समय “अप्रतिदाय मूल्यवर्धित कर” के आधार पर उपयुक्त समायोजन करें।
- छ. चीन के उत्पादक द्वारा मूल जांच में अपने आप इस तथ्य को स्वीकार किया गया है कि सीनिक केमिकल्स (संघाई) कंपनी लिमिटेड सीनिक होल्डिंग्स लि.(हांगकांग) की 100 प्रतिशत सहायक कंपनी है। सीनिक होल्डिंग्स लिमिटेड (हांगकांग) हांगकांग में निगमित किया गया है। सीनिक होल्डिंग्स लिमिटेड (सीनिक केमिकल्स (संघाई) कंपनी लिमिटेड को छोड़कर) की कोई भी संबंधित कंपनी विचाराधीन उत्पाद के निर्माण में शामिल नहीं है। वास्तव में किसी भी आयातक ने इस तथ्य की पुष्टि करने के लिए कोई साक्ष्य अथवा सूचना उपलब्ध नहीं कराया है कि भारत में हांगकांग से आ रही संबद्ध वस्तुओं का वास्तव में हांगकांग में उत्पादन किया जाता है। इस प्रकार से यह स्पष्ट है कि हांगकांग में विचाराधीन उत्पाद की कोई निर्माण सुविधा नहीं है। इसके अलावा यह भी अनुरोध किया जाता है कि हांगकांग से आयात की जा रही वस्तुओं का वही विवरण और ब्रॉड नाम है जो चीन जन.गण. से आयात की गई वस्तुओं का है। उसका सत्यापन प्राधिकारी द्वारा डीजीसीआईएंडएसके लेन-देनवार आयात संबंधी आंकड़ों से किया जा सकता है।
- ज. आवेदक ने यह अनुरोध किया है कि डीजीसीआईएंडएस की लेन-देनवार आयात संबंधी आंकड़ों को सामान्य तौर पर निर्यात किए जाने वाले देश के आधार पर उपलब्ध कराया जाता है। इसके अलावा, यह भी अनुरोध किया जाता है कि संबद्ध वस्तुओं को हांगकांग के द्वारा जहाज पर लादकर भेजा जाता है जो

मूल रूप से चीन की मूल का होता है क्योंकि हांगकांग में संबद्ध वस्तुओं के निर्माण की कोई सुविधा नहीं है। आवेदक ने प्राधिकारी से यह अनुरोध किया कि वे निर्यात किए जाने वाले देश के बजाए उत्पत्ति देश के आधार पर डीजीसीआईएंडएस के लेन-देनवार आयात संबंधी आंकड़ों को प्राप्त करने के बाद इस पहलू का सत्यापन करें।

- झ. चीन जन.गण. के किसी भी उत्पादक/निर्यातक ने जान-बूझकर वर्तमान समीक्षा जांच में भाग नहीं लिया है ताकि निर्णायक समीक्षा जांच को सही तरीके से किए जाने के लिए भारतीय प्राधिकारी द्वारा अपेक्षित संबंधित सूचना प्राधिकारी को उपलब्ध नहीं कराया जाए और उसके साथ ही भारतीय प्राधिकारी से इस तथ्य की छानबीन किए जाने से बचा जा सके कि क्यों चीन के उत्पादक हांगकांग के माध्यम से संबद्ध वस्तुओं का लदान कर भेज रहे हैं।
- ट. चीन के निर्यातकों ने निर्णायक समीक्षा जांच का अनुमान लगाते हुए जांच की अवधि के दौरान भारत को किए जाने वाले निर्यात की कीमत में जान-बूझकर 15-20 प्रतिशत की वृद्धि की है जबकि अन्य देशों की निर्यात कीमत में वृद्धि केवल 1-2 प्रतिशत है। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि जांच की अवधि के दौरान भारत को चीन द्वारा किए जाने वाले निर्यात की कीमतें व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में नहीं है और इसमें निर्णायक समीक्षा जांच में अच्छे जांच परिणाम प्राप्त करने के उद्देश्य से कृत्रिम रूप से बढ़ाया गया है।

च.3 अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किया गया अनुरोध

39. पाटन मार्जिन के निर्धारण के संबंध में निर्यातक/अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा कोई संगत अनुरोध नहीं किया गया।

च.4 प्राधिकारी द्वारा चीन के उत्पादकों के लिए बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे की जांच

40. चीन के एसेसन प्रोटोकॉल के अनुच्छेद 15 में निम्नलिखित प्रावधान है:

"जीएटीटी के 1994 के अनुच्छेद-VI, टैरिफ और व्यापार पर सामान्य करार, 1994 ("पाटनरोधी करार") के अनुच्छेद-VI के कार्यान्वयन पर करार तथा एससीएम करार निम्नलिखित के अनुरूप डब्ल्यूटीओ सदस्यों में चीन मूल के आयातों वाली कार्यवाहियों पर लागू होंगे:

(क) जीएटीटी के अनुच्छेद-VI और पाटनरोधी करार के तहत मूल्य की तुलना का निर्धारण करने में आयात करने वाला डब्ल्यूटीओ सदस्य या तो जांचाधीन उद्योग के लिए चीन के मूल्यों अथवा लागतों का उपयोग करेंगे या उस पद्धति को उपयोग करेंगे जो निम्नलिखित के आधार पर चीन में घरेलू मूल्यों अथवा लागतों के साथ सही तुलना के आधार पर नहीं है:

- (i) यदि जांचाधीन उत्पादक साफ-साफ यह दिखा सकते हैं कि समान उत्पाद का उत्पादन करने वाले उद्योग में उस उत्पाद के विनिर्माण, उत्पादन और बिक्री के संबंध में बाजार अर्थव्यवस्था की स्थितियां रहती हैं तो निर्यात करने वाला डब्ल्यूटीओ सदस्य मूल्य की तुलनीयता का निर्धारण करने में जांचाधीन उद्योग के लिए चीन के मूल्यों अथवा लागतों का उपयोग करेगा।
- (ii) आयातक डब्ल्यूटीओ सदस्य उस पद्धति का उपयोग कर सकता है जो चीन में घरेलू कीमतों अथवा लागतों के साथ सख्त अनुपालन पर आधारित नहीं है, यदि जांचाधीन उत्पादक साफ-साफ यह नहीं दिखा सकते हैं कि उस उत्पाद के विनिर्माण, उत्पादन और बिक्री के संबंध में बाजार अर्थव्यवस्था की स्थितियां समान उत्पाद का उत्पादन करने वाले उद्योग हैं।

(ख) जैसे ही चीन द्वारा आयात करने वाले डब्ल्यूटीओ सदस्य के राष्ट्रीय कानून के तहत चीन ने एक बार यह सिद्ध कर लिया है कि यह एक बाजार अर्थव्यवस्था है, तो उप पैराग्राफ के प्रावधान (क) समाप्त कर दिए जाएंगे, बशर्ते आयात करने वाले सदस्य के राष्ट्रीय कानून में प्राप्ति की तारीख के अनुरूप बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी मानदंड हो। किसी भी स्थिति में उप पैराग्राफ (क)(ii) के प्रावधान प्राप्ति की तारीख के बाद 15 वर्षों में समाप्त होंगे। इसके अलावा, आयात करने वाले डब्ल्यूटीओ सदस्य के राष्ट्रीय कानून के अनुसरण में चीन के द्वारा यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बाजार अर्थव्यवस्था की स्थितियां एक विशेष उद्योग अथवा क्षेत्र में प्रचलित हैं, उप पैराग्राफ (क) के गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के प्रावधान उस उद्योग अथवा क्षेत्र के लिए आगे लागू नहीं होंगे।"

41. यह नोट किया जाता है कि जबकि अनुच्छेद 15(क) (ii) में निहित प्रावधान 11.12.2016 को समाप्त हो गया है, एक्सेसन प्रोटोकॉल के 15(क) (i) के अंतर्गत दायित्व के साथ पठित विश्व व्यापार संगठन के अनुच्छेद 2.2.1.1 के अंतर्गत प्रावधान में बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा का दावा करने के लिए पूरक प्रश्नावली में दिए जाने के लिए सूचना/आंकड़ों के माध्यम से संतुष्ट किए जाने के लिए भारत की नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 8 में निर्धारित मानदंडों को पूरा करना अपेक्षित है। यह नोट किया जाता है कि चीन जन.गण. के किसी उत्पादक/निर्यातक ने वर्तमान निर्णायक समीक्षा जांच में भाग नहीं लिया है। तदनुसार, सामान्य मूल्य की गणना इस नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के प्रावधानों के अनुसार किया जाना अपेक्षित है। संबद्ध देश के सभी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत का निर्धारण नीचे दिये गए अनुसार किया गया है।

च.5 सामान्य मूल्य का निर्धारण

42. चूंकि चीन जन.गण.के किसी भी उत्पादक ने बाजार अर्थव्यवस्था बर्ताव के लिए पूरक प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है, अतः सामान्य मूल्य का निर्धारण इस नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के अनुसार किया गया है। इस नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 में उल्लिखित अन्य पद्धतियों के संबंध में रिकॉर्ड पर पर्याप्त सूचना के न होने के कारण प्राधिकारी ने "किसी अन्य तर्क संगत आधार" पर पद्धति पर विचार कर सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है। इस संबंध में, रिकॉर्ड के बारे में पर्याप्त जानकारी के अभाव में, अन्य तरीकों को नियमों के अनुबंध 1 के पैरा 7 में निहित है, प्राधिकरण ने इसलिए, चीन पीआर के लिए सामान्य मूल्य का निर्माण भारत में उत्पादन की लागत को उचित समायोजन के साथ मानकर किया है। एसजीए खर्च और नियमों के पैरा 6 (8) के अनुसार उत्पादन की लागत पर 5% की दर से उचित लाभ के लिए।
43. इस कारण से प्राधिकारी ने उचित लाभ को जोड़कर बिक्री, सामान्य और प्रशासनिक खर्च सहित विधिवत् समायोजित भारत में उत्पादन की लागत के आधार पर चीन जन.गण.के लिए सामान्य मूल्य तय किया है। चीन के उत्पादकों/निर्यातकों के लिए इस प्रकार से निर्धारित किए गए संरचित सामान्य मूल्य का उल्लेख नीचे दी गई पाटन मार्जिन तालिका में किया गया है:

च.6 निर्यात कीमत का निर्धारण

44. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि कोई भी उत्पादक/निर्यातक ने निर्धारित रूप में और तरीके से सूचना प्रस्तुत नहीं की है जिसका उपयोग अलग-अलग पाटन मार्जिन की निर्यात कीमत के निर्धारण और गणना के लिए किया जा सकता है। इस कारण से प्राधिकारी ने डीजीसीआईएंडएस के लेन-देनवार आंकड़ों के अनुसार जांच की अवधि के लिए आयातों की मात्रा और मूल्य पर विचार करते हुए संबद्ध देश से निर्यात कीमत का निर्धारण किया है।
45. जैसा कि निर्यात मूल्य की गणना करते समय प्राधिकरण को "गैर-वापसी योग्य वैट" का समायोजन करने के लिए आवश्यक विवाद का संबंध है, जबकि डीआई ने 2020 में 13% वापसी योग्य वैट की उपलब्धता की बात कही है, अन्य इच्छुक पार्टियों ने वैट के गैर निर्यात के बारे में उल्लेख किया है निर्यात खेप में। प्राधिकरण डीआई और इच्छुक पार्टियों को वैट पर प्रस्तुत करने पर ध्यान देता है। चूंकि किसी भी निर्माता / निर्यातक ने सहयोग नहीं किया है और उत्पादकों / निर्यातकों के डीआई के स्पष्टीकरण और असहयोग को ध्यान में रखते हुए, प्राधिकरण ने वैट के पूर्व कारखाने निर्यात मूल्य शुद्ध की गणना की है, क्योंकि यह निर्माता का पूर्व-कारखाना मूल्य है जो डंपिंग मार्जिन का मूल्यांकन करने के लिए कब्जा करने की जरूरत है
46. तदनुसार, निर्यात मूल्य को साक्ष्य / के आधार पर पूर्व कारखाने स्तर पर शुद्ध निर्यात मूल्य पर पहुंचने के लिए महासागर भाड़ा, बीमा, कमीशन, बैंक शुल्क, बंदरगाह व्यय, अंतर्देशीय भाड़ा शुल्क और गैर-वापसी योग्य वैट के कारण समायोजित किया गया है। असहयोग के मामले में प्राधिकरण द्वारा लगातार मानदंडों को अपनाया जा रहा है। तदनुसार, चीन पीआर से निर्यात के लिए पूर्व कारखाने के स्तर पर शुद्ध निर्यात मूल्य की गणना की गई है और नीचे डंपिंग मार्जिन तालिका में दिखाया गया है।

च.7 पाटन मार्जिन

47. सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत, जिसका निर्धारण ऊपर में दिए गए अनुसार किया गया है, के आधार पर, चीन जन.गण. के उत्पादकों/निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन का निर्धारण प्राधिकारी द्वारा किया गया है और उसे नीचे तालिका में दिया गया है। यह देखा गया है कि पाटन मार्जिन का स्तर समारात्मक और न्यूनतम स्तरों से ऊपर है।

पाटन मार्जिन सारणी

क्र.सं.	देश	उत्पादक	सामान्य मूल्य (अम.डा./कि. ग्रा.)	निर्यात कीमत (अम.डा./ किग्रा.)	पाटन मार्जिन (अम.डा./ किग्रा.)	पाटन मार्जिन %	पाटन मार्जिन रेंज %
1	चीन जन.गण	कोई भी	***	***	***	***	20-30%

छ. क्षति, कारणात्मक संबंध और पाटन और क्षति के जारी रहने अथवा उसके फिर से होने की संभावना का आंकलन

48. अनुबंध-II के साथ पठित नियमावली के नियम 11 में यह प्रावधान है कि क्षति के निर्धारण में "... पाटित आयातों की मात्रा, समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर उनके प्रभाव और ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर इस प्रकार के आयातों का परिणामी प्रभाव सहित सभी संगत तथ्यों पर विचार करते हुए ..." घरेलू उद्योग को क्षति दर्शाने वाले कारकों की जांच शामिल होगी। कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव को ध्यान में रखते हुए, इस बात की जांच करना आवश्यक माना गया है कि क्या भारत में समान वस्तु की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा कीमत में बहुत अधिक कटौती हुई है अथवा यह कि क्या इस प्रकार के आयातों के प्रभाव से अन्यथा कीमतों का बहुत अधिक मात्रा में ह्रास हुआ है अथवा कीमत में वृद्धि रुक जाती जो अन्यथा बहुत अधिक मात्रा में हुई होती।
49. इस नियमावली के नियम 23 में प्रावधान है कि नियम 6,7,8,9,10,11,16,18,19 और 20 के प्रावधान आवश्यक परिवर्तनों सहित समीक्षा के मामले में लागू होंगे। प्राधिकारी ने अपनी जांच में क्षति संबंधी मानदंडों जो नियम 11 और इस नियमावली के अनुबंध-II के अंतर्गत अपेक्षित है तथा इस बात की संभावना का विश्लेषण कि क्या शुल्क के समाप्त होने के फलस्वरूप संभवतः पाटन और क्षति जारी रहेगी अथवा फिर से होगी, का मूल्यांकन किया है।
50. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के लिए आवेदन मै. हेउबाक कलर प्रा. लि. द्वारा दायर किया गया है। इस नियमावली के नियम 2(ख) के संबंध में, आवेदक को इस जांच के उद्देश्य से घरेलू उद्योग के रूप में माना गया है। इस कारण से, आवेदक जो नियम 2(ख) में दी गई परिभाषा के अनुसार घरेलू उद्योग है, की लागत और क्षति संबंधी सूचना की जांच की गई।

छ.1 घरेलू उद्योग द्वारा किए गए निवेदन

51. क्षति और कारणात्मक संबंध के बारे में घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित निवेदन किए गए हैं :-

- क. भारत में प्रवेश कर रहे कम कीमत वाले पाटित आयातों के कारण महत्वपूर्ण कीमत कटौती/कम से कम कीमत पर बिक्री हो रही है। भारत में आ रहे कम कीमत वाले पाटित आयातों के कारण महत्वपूर्ण कीमत ह्रास हुआ है।
- ख. संबद्ध देश से पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन न केवल न्यूनतम सीमा से अधिक है बल्कि अत्यधिक भी है। घरेलू उद्योग पर पाटन का प्रभाव बहुत महत्वपूर्ण है।
- ग. प्रवृत्त ए डी डी के समापन/निरस्त करने से पाटन और क्षति के जारी रहने की संभावना है। यदि चीन जन. गण. से आयातित वस्तुओं पर लागू शुल्कों की विद्यमानता को स्थगित कर दिया जाता है तो चीनी निर्यातक भारतीय बाजार को अधिकार में ले लेंगे जिससे घरेलू बाजार को महत्वपूर्ण क्षति होगी।
- घ. पी ओ आई के पश्चात् आवेदक ने बढ़ती हुई घरेलू मांग का प्रबंध करने के लिए अपनी पी यू सी की स्थापित क्षमता का विस्तार किया है। मांग आपूर्ति का अंतर शुल्कों को जारी न रखने का कारण नहीं है जैसा कि प्राधिकारी द्वारा लगातार कहा गया है।

- ड. पाटनरोधी शुल्क का विस्तार न करने का निर्णय लेने से पहले विनिर्दिष्ट प्राधिकारी को इस निष्कर्ष पर पहुंचना है कि संबद्ध देश के पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को पाटन या क्षति अथवा अन्यथा रूप से पाटन या क्षति की पुनरावृत्ति की कोई संभावना नहीं है। इस प्रकार, जांच की अवधि के दौरान कुछ क्षति कारकों में सुधार के स्तर अथवा आयातों में कमी में स्वयं प्रत्यक्ष रूप से प्रासंगिक नहीं हैं।
- च. संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन के केवल एक प्रतिशत से भी कम भाग की घरेलू उद्योग द्वारा सीमित रूप से खपत की जाती है जो कि नगण्य है और भारतीय पेंट एसोसिएशन और आयातकों के दावे का कोई अर्थ नहीं है।
- छ. यह निवेदन किया गया है कि प्राधिकारी द्वारा लगाए गए पाटनरोधी शुल्क के सकारात्मक परिणाम के रूप में घरेलू उद्योग के निष्पादन ने कुछ सुधार दर्शाया है। तथापि, संबद्ध देश द्वारा पाटित कीमतों पर भारत को संबद्ध वस्तुओं का निर्यात करना जारी है जिस कारण घरेलू उद्योग को महत्वपूर्ण क्षति हुई है। इसलिए, पाटनरोधी शुल्क को जारी रखना घरेलू उद्योग के हित में होगा और पाटनरोधी शुल्कों को निरस्त करने से निश्चित रूप से पहले से कहीं बहुत अधिक मात्रा में, पाटन और क्षति के जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति का कारण बनेगा।
- ज. पाटन और क्षति के जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति की संभावना का मूल्यांकन करने के लिए पाटन के स्तर, आयातों की मात्रा, विभिन्न क्षति मानदंडों, निर्यातकों के पास उपलब्ध अधिशेष क्षमता, निर्यातकों की मालसूची और विश्व के लिए उनकी कीमतों की जांच किए जाने की आवश्यकता है। विद्यमान ए डी डी और निर्यातकों के भविष्य में संभावित व्यवहार को ध्यान में रखते हुए घरेलू उद्योग को पाटन और क्षति का विश्लेषण किए जाने की आवश्यकता है।
- झ. घरेलू बिक्री कीमत एन आई पी से उल्लेखनीय रूप से निम्न है।
- ट. वर्ष 2015-16 के बाद से चीन जन. गण. से आयातों में कमी आई प्रतीत होती है। तथापि, यह उल्लेख करना संगत होगा कि शुल्क के लागू होने की प्रत्याशा में अप्रैल, 2015 से अगस्त, 2015 (शुल्क के लागू होने से तुरंत पूर्व अवधि) की अवधि के दौरान भारत में भारी आयात किया गया। वास्तव में, 2015-16 के दौरान 85 प्रतिशत से अधिक आयात अप्रैल, 2015 से अगस्त, 2015 के दौरान किए गए। तदनुसार, आधार वर्ष के रूप में 2015-16 का प्रयोग करते हुए आयातों का प्रवृत्ति विश्लेषण करना उचित नहीं है, क्योंकि इस वर्ष के दौरान शुल्क लगने की प्रत्याशा में अपवाद रूप से अधिक आयात किए गए थे।
- ठ. पी ओ आई (क) के दौरान किए गए आयात अभी भी मात्रा में उल्लेखनीय है और मूल जांच की पी ओ आई की तुलना में कम या ज्यादा समान स्तर पर है जिसमें चीन जन. गण. से आयात लगभग 49 प्रतिशत मी. टन थे। कुल आयातों, भारतीय उत्पादन और भारतीय मांग के संबंध में चीन जन. गण. से आयात लगातार महत्वपूर्ण बने हुए हैं।
- ड. यू एस ए के अतिरिक्त, चीन जन. गण. के अतिरिक्त अन्य देशों से आयातों की मात्रा इतनी महत्वपूर्ण नहीं है जो घरेलू उद्योग को क्षति का कारण अथवा खतरा बन सके।
- ढ. घरेलू उद्योग ने निवेदन किया है कि यह कानून की एक व्यवस्थित स्थिति है कि निर्णायक समीक्षा जांच में कारणात्मक संबंध का विश्लेषण किया जाना अनिवार्य रूप से जरूरी नहीं है। इस संबंध में, घरेलू उद्योग ने मैक्सिको से ऑयल कंट्री टैबूलर गुड्स (डब्ल्यूटी/डी एस 282/ए बी/आर दिनांक 2 नवंबर, 2005) के मामले में अपीलीय निकाय के निर्णय की ओर प्राधिकारी का ध्यान आकर्षित किया है। आवेदक ने आगे निवेदन किया है कि "व्यापार उपचार जांच के लिए प्रचालन पद्धति आचार संहिता" के पैरा 17.28 में यह उल्लेख किया गया है कि किसी निर्णायक समीक्षा में कारणात्मक संबंध की अनुपस्थिति या कारणात्मक संबंध को तोड़ने का अंतिम जांच परिणाम के निष्कर्ष पर कोई प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं हो सकता है। तदनुसार, किसी निर्णायक समीक्षा जांच में कारणात्मक संबंध का विश्लेषण किया जाना अनिवार्य रूप से जरूरी नहीं है।
- ण. क्षति अवधि के दौरान निवेश पर आय (आर ओ आई) **** के बीच रही है। यह प्राधिकारी द्वारा उचित मानी गई 22 प्रतिशत आय से काफी निम्न है।

- त. संबद्ध वस्तुओं पर पाटनरोधी शुल्क को लागू करने के कारण आवेदक की लाभप्रदता में वर्षों के साथ-साथ सुधार हुआ है। तथापि, पी ओ आई के दौरान, आवेदक द्वारा संयंत्र में विंड टरबाइन और कोल बॉयलर की स्थापना के परिणामस्वरूप उपयोगिता लागत में महत्वपूर्ण कमी के कारण लाभप्रदता में सुधार हुआ है। अन्य अवधियों की तुलना में, पी ओ आई में उपयोगिता लागत में लगभग *** प्रतिशत की कमी आई है। यदि पी ओ आई में उपयोगिता लागत में कोई कमी नहीं आती तो, आर ओ आई लगभग *** प्रतिशत से कम होता।
- थ. हितबद्ध पक्षकार के दावे के उत्तर में, घरेलू उद्योग ने निवेदन किया है कि पाटनरोधी शुल्क को लागू करने के बावजूद चीन जन. गण. से पाटित आयात का आना जारी रहा। जांच की अवधि के दौरान पाटित आयातों की मात्रा अभी भी उल्लेखनीय है। प्राधिकारी द्वारा लगाए गए पाटनरोधी शुल्क के सकारात्मक परिणाम के रूप में घरेलू उद्योग ने कुछ सुधार दर्शाया है। तथापि, इस घरेलू उद्योग इस तथ्य के कारण ईष्टतम स्तर पर निवेश पर आय की दर को प्राप्त करने में असफल रहा है कि चीन जन. गण. से संबद्ध वस्तुओं के आयात पाटित कीमतों पर आ रहे हैं जो घरेलू उद्योग पर कीमत दबाव डाल रहे हैं। परिणामस्वरूप, घरेलू उद्योग कीमत क्षति का सामना कर रहा है और यह चीन जन. गण. से संबद्ध वस्तुओं के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क को जारी रखने का पर्याप्त आधार है।
- द. इस आरोप के उत्तर में कि घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है, आवेदक ने निवेदन किया है कि प्राधिकारी द्वारा लागू किए गए पाटनरोधी शुल्क के सकारात्मक परिणाम के रूप में घरेलू उद्योग ने कुछ सुधार दर्शाया है। तथापि, संबद्ध देश ने भारत को संबद्ध वस्तुओं का पाटित कीमत पर निर्यात करना जारी है जिस कारण घरेलू उद्योग को उल्लेखनीय क्षति हुई। संबद्ध देश से पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन न केवल न्यूनतम सीमा से अधिक है, बल्कि बहुत महत्वपूर्ण भी हैं। प्रवृत्त पाटनरोधी शुल्क की समामि/निरसन के कारण पाटन और क्षति के जारी रहने की संभावना है। यदि चीन जन. गण. से आयातित वस्तुओं पर लागू शुल्कों की विद्यमानता को समाप्त कर दिया जाता है तो चीनी निर्यातक घरेलू उद्योग को महत्वपूर्ण क्षति का कारण बनते हुए भारतीय बाजार पर कब्जा कर लेंगे।
- ध. भारतीय प्रयोक्ताओं ने उन कीमतों का उद्धरण दिया है जिन पर देश में आयातित वस्तुएं प्रवेश कर रही हैं और घरेलू उद्योग को आयातित कीमतों से मिलान करने के लिए कहा है। कारक जो घरेलू उद्योग को विपरीत रूप से प्रभावित कर रहे हैं, वे आयातों की मात्रा, साथ ही, वे कीमतें जिन पर आयातित वस्तुएं देश में प्रवेश करती हैं, दोनों हैं।
- न. यह मूल जांच में स्वयं चीनी उत्पादक द्वारा निवेदित किया गया तथ्य है कि सिनिक केमिकल्स (शंघाई) कंपनी लि० शत प्रतिशत रूप से सिनिक होल्डिंग्स लि० (हांगकांग) की सहायक कंपनी है। सिनिक होल्डिंग्स लि० (हांगकांग) हांगकांग में निगमित है। सिनिक होल्डिंग्स लि० की संबंधित कंपनियों में से कोई भी (सिनिक केमिकल्स, (शंघाई) कंपनी लि० के अतिरिक्त) पी यू सी के विनिर्माण में संलग्न नहीं हैं। वास्तव में, किसी भी आयातक ने यह सिद्ध करने के लिए कोई प्रमाण या सूचना अथवा उद्गम प्रमाणपत्र भी उपलब्ध नहीं कराया है कि संबद्ध वस्तुएं जो वे हांगकांग से भारत में आयात कर रहे हैं उनका उत्पादन हांगकांग में किया गया है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि पी यू सी की कोई विनिर्माण सुविधा हांगकांग में विद्यमान नहीं है। आगे, यह भी निवेदन किया गया है कि हांगकांग से आयात की जा रही वस्तुएं समान विवरण और ब्रांड नाम धारित करती हैं अर्थात् सिनिलेक्स जो कि चीन जन. गण. से आयातित वस्तुओं का भी ब्रांड है। प्राधिकारी डी जी सी आई एंड एस के सौदा-वार आयात संबंधी आयात आंकड़ों से इसका सत्यापन कर सकते हैं। आवेदक ने यह भी साक्ष्य उपलब्ध कराया है कि सिनिक केमिकल्स (शंघाई) कंपनी लि० की वेबसाइट में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि चीन में सिनिक की दो उत्पादन सुविधाएं हैं अर्थात् केवल शंघाई और ताईशिंग में। हांगकांग में सिनिक की कोई उत्पादन सुविधा नहीं है।
- प. चीन जन. गण. से किसी भी उत्पादक/निर्यातक ने जानबूझकर वर्तमान पुनरीक्षा जांच में भाग नहीं लिया है ताकि निर्णायक समीक्षा जांच को सही रूप से आयोजित करने के लिए भारतीय प्राधिकारी द्वारा अपेक्षित संगत जानकारी प्राधिकारी को उपलब्ध न कराई जा सके और भारतीय प्राधिकारी द्वारा की जा रही संवीक्षा से भी बचा जा सके। इसीलिए चीनी उत्पादक हांगकांग के जरिए संबद्ध वस्तुओं का नौकांतरण (ट्रांसशिपिंग) कर रही है।

- फ. भारत में आयात अग्रिम प्राधिकरण योजना के तहत भी बिना किसी सीमा शुल्क और पाटनरोधी शुल्क की अदायगी के बिना भारत में प्रवेश कर रहे हैं।
- ब. पाटनरोधी शुल्क के अधिरोपण के पश्चात मात्रा मापदंडों पर घरेलू उद्योग के निष्पादन में बड़ा सुधार हुआ है। लाभप्रदता और आर ओ आई के रूप में सुधार हुआ है, किंतु अभी भी यह ईष्टतम स्तरों से निम्न है। यह निवेदन किया गया है कि यदि शुल्कों को समाप्त किया जाता है तो मात्रा मापदंडों पर घरेलू उद्योग को क्षति की पुनः पुनरावृत्ति होगी और लाभप्रदता घट जाएगी।
- भ. जहां तक स्थापित क्षमता का संबंध है, आवेदक ने निवेदन किया है कि उत्पाद की मांग पर विचार करने के पश्चात, घरेलू उद्योग ने फिल्टरेशन और ड्राईंग स्तर पर उत्पादन के गत्यवरोध को दूर करने के लिए डी पी पी रेड संयंत्र में कंडेसर, वैक्यूम और पैकिंग व्यवस्था के साथ एक फिल्टरेशन यूनिट (फिल्टर प्रेस) और एक रोटरी वैक्यूम ड्रायर स्थापित किया है। यदि पाटनरोधी शुल्क को जारी नहीं रखा जाता तो चीन जन. गण. से पाटित आयातों में वृद्धि होगी और आवेदक द्वारा उनकी क्षमता वृद्धि करने के लिए किए गए प्रयास संकट में आ जाएंगे।
- म. अपने आवेदन में आवेदक ने पहुंच मूल्य का परिकलन करने के लिए 7.5 प्रतिशत के आधारभूत सीमा शुल्क को लागू किया है और प्राधिकारी द्वारा इसका सत्यापन किया जा सकता है। यह भी निवेदन किया गया है कि भारत में आ रहे कम कीमत वाले पाटित आयातों के कारण महत्वपूर्ण कीमत कटौती/कीमत से कम कीमत पर बिक्री हुई है।
- य. विगत में प्राधिकारी ने इस तथ्य के बावजूद निम्नलिखित निर्णायक समीक्षा जांचों में पाटनरोधी शुल्कों को जारी रखा है कि पाटनरोधी शुल्क के उद्ग्रहण के पश्चात घरेलू उद्योग के आर्थिक मापदंडों में सुधार हुआ है :-
- चीन जन. गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित 'माप टेप' (मेशजैड टेप) के आयातों के संबंध में निर्णायक समीक्षा जांच में अंतिम जांच परिणाम दिनांक 18 जून, 2020 ।
 - चीन जन. गण. और थाईलैंड के मूल के अथवा वहां से निर्यातित 'ग्राइडिंग मीडिया बॉल्स' (नकली ग्राइडिंग मीडिया बॉल्स के अतिरिक्त) के आयातों के संबंध में निर्णायक समीक्षा जांच में अंतिम जांच परिणाम दिनांक 11 जून, 2018 ।
 - कोरिया जन. गण. और थाईलैंड के मूल के अथवा वहां से निर्यातित 'प्युरीफाइड टेरफथेलिक एसिड' के आयातों के संबंध में निर्णायक समीक्षा पाटनरोधी जांच में अंतिम जांच परिणाम दिनांक 28 जून, 2019 ।
 - चीन जन. गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित 'सोडियम नाइट्रेट' के आयातों पर लागू पाटनरोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा में अंतिम जांच परिणाम दिनांक 19 जुलाई, 2017 ।

यह निवेदन किया गया है कि उक्त मामले केवल निदर्शों उदाहरण हैं और बड़ी संख्या में ऐसे अन्य जांच परिणाम हैं, जिनमें, प्राधिकारी ने इस तथ्य के बावजूद निर्णायक समीक्षा जांचों में पाटनरोधी शुल्क को जारी रखा है कि पाटनरोधी शुल्क को उद्ग्रहण के बाद घरेलू उद्योग के आर्थिक मापदंडों में सुधार हुआ है।

छ.2 अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदन

52. क्षति और कारणात्मक संबंधों के संबंध में अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निम्नलिखित निवेदन किए गए हैं :-

- क. भारत में पी यू सी के आयात भी इंगित करते हैं कि भारतीय बाजार में मांग- आपूर्ति अंतर विद्यमान है।
- ख. घरेलू विनिर्माता ने अवसर का लाभ उठाया और पाटनरोधी शुल्क को लागू करने के पश्चात अपनी लाभप्रदता और बिक्री में वृद्धि की है।
- ग. भारतीय बाजार में भारी मांग – आपूर्ति अंतर अभिभावी है। घरेलू बाजार की अपनी घरेलू बिक्रियों में 82 प्रतिशत वृद्धि के साक्ष्य के बावजूद जहां पी यू सी की मांग में 50 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, समान अवधि के दौरान मांग आपूर्ति अंतर में 30 प्रतिशत की वृद्धि जारी रही। अतः, यह स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग संपूर्ण घरेलू मांग का प्रबंध करने में सक्षम नहीं है।

- घ. घरेलू उद्योग एक ई ओ यू है और इसने वर्षों के दौरान एक 'निर्यात संकेंद्रण' बनाए रखा है। यह जारी रहेगा, क्योंकि एक ई ओ यू के लाभों को प्राप्त करने के लिए एक सकारात्मक एन एफ ई प्राप्त करना अपेक्षित है इससे पूर्व कि ये डी टी ए में अपने उत्पादों की बिक्री कर सके। अतः, भारत में घरेलू बाजार डी आई की प्राथमिकता नहीं है और भारतीय बाजार में पी यू सी की आपूर्ति के एक अतिरिक्त स्रोत की आवश्यकता है।
- ड. घरेलू उद्योग पश्चगामी समाकलित (बैकवर्ड इंटेग्रेटिड) है और सीमित खपत के रूप में पी यू सी के अपने उत्पादन के एक भाग का प्रयोग करता है। इसका अर्थ यह है कि यह न केवल पी यू सी का एक विनिर्माता/उत्पादक है, बल्कि घरेलू बाजार में उपभोक्ता उद्योग के एक भाग को भी स्थापित करता है। तदनुसार, यहां घरेलू उद्योग की प्राथमिकता निर्यात होने के साथ ही सीमित खपत होने के कारण भारत में उपभोक्ता उद्योग को पी यू सी की उपलब्धता में और कमी आई है।
- च. घरेलू उद्योग ने डी आई याचिका में गलत रूप से कीमत कटौती और कीमत से कम कीमत पर बिक्री को व्युत्पन्न किया है। पहुंच मूल्य का निर्धारण करने में, आधारभूत सीमा शुल्क की अपेक्षित दर अर्थात् 7.5 प्रतिशत के स्थान पर 5 प्रतिशत का प्रयोग किया है। कीमत से कम कीमत पर बिक्री का परिकलन करने में शुल्क की निम्न दर के प्रयोग के कारण पहुंच मूल्य का अल्पमूल्यन हुआ है। इसके अतिरिक्त, घरेलू उद्योग ने गलत रूप से हांगकांग से आयात को चीन जन. गण. से आयात के रूप में विचारित किया है।
- छ. पुनः संगणना के आधार पर, कीमत कटौती 0-10 प्रतिशत के बीच है, जो घरेलू बिक्री कीमत के लगभग समान स्तर पर है।
- ज. कीमत से कम कीमत पर बिक्री मूल जांच परिणाम में 20-30 प्रतिशत से कम होकर वर्तमान जांच में 10-20 प्रतिशत हो गई है।
- झ. कोई कीमत ह्रास/न्यूनीकरण नहीं है। 2015-16 की तुलना में पी ओ आई (क) के दौरान डी आई की बिक्री की लागत में केवल 1 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जबकि क्रमशः घरेलू बिक्री कीमत में 6 प्रतिशत की वृद्धि हुई है और पहुंच मूल्य में 15 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। अन्य शब्दों में, घरेलू बिक्री कीमत में हुई वृद्धि निर्माण और बिक्री की लागत में वृद्धि की तुलना में अधिक है।
- ट. डी आई द्वारा उपलब्ध कराया गया तर्क इस धारणा का कारण नहीं बन सकता कि हांगकांग से आने वाले आयातों का चीन से लदान किया जा रहा है जब तक कि इस संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा सकारात्मक साक्ष्य उपलब्ध न कराया जाए। अतः, इसके दावों के संबंध में किसी समर्थक साक्ष्य के अभाव में हांगकांग से आयातों को चीन जन. गण. से आयात किए जाने के रूप में माना जाना अनुचित है। ऐसा उपचार त्रुटिपूर्ण और बढ़े हुए आयात आंकड़ों का कारण है जो कि अविश्वसनीय है और इसलिए इसे प्राधिकारी द्वारा एकदम अस्वीकृत किया जाना चाहिए।
- ठ. यह निवेदन किया जाता है कि नौकांतरण (ट्रांसशिप) किए गए उत्पादों के लिए हांगकांग से उद्गम प्रमाणपत्र नियमों (रूल्स ऑफ ओरिजिन सर्टिफिकेशन) को प्राप्त करना संभव नहीं है। हांगकांग की उद्गम नियमावली में यह व्यवस्था की गई है कि हांगकांग उद्गम प्रमाणपत्र को प्राप्त करने के लिए उत्पादें या तो हांगकांग से प्राकृतिक उत्पाद होना चाहिए अथवा महत्वपूर्ण मूल्यवर्धन प्राप्त किया होना चाहिए। यह निवेदन किया जाता है कि क्षति निर्धारण करने के लिए विश्लेषण की तथ्यपरक प्रकृति को देखते हुए, उनके वास्तविक मूल देश को स्थापित करने के साक्ष्य के अभाव में वस्तुओं के उद्गम के संबंध में केवल अटकलें पर्याप्त नहीं हैं। यह भी नोट किया जाना चाहिए कि किसी कथित निवारण के विरुद्ध व उसके उपचार पर केवल किसी निवारणरोधी जांच में ही विचार किया जाना चाहिए।
- ड. हांगकांग से पी यू सी के आयात को चीन जन. गण. से नौकांतरण (ट्रांसशिप) किए जा रहे पी यू सी के रूप में माना जाना अनुचित है। हांगकांग में सक्षम प्राधिकारियों द्वारा जारी उद्गम प्रमाणपत्र के विरुद्ध पी यू सी के मूल का सत्यापन किया जाना चाहिए और यदि ऐसा प्रमाणपत्र वैध है तो इसे केवल चीन जन. गण. से आयातों के रूप में नहीं माना जा सकता।

- ड. फिर भी, यदि प्राधिकारी हांगकांग से आयातों की मात्रा के संबंध में चीन जन. गण. से आयातों के रूप में विचार करते हैं तो ऐसे एकत्रित आंकड़ों के विश्लेषण भी यह उपलब्ध कराते हैं कि आधार वर्ष की तुलना में आयातों की मात्रा में 69 प्रतिशत से ज्यादा कमी आई है। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि पी यू सी के आयातों के कारण लगातार कोई क्षति नहीं हुई है न ही इसकी पुनरावृत्ति की कोई संभावना है।
- ण. 2015-16 से पी ओ आई (क) तक पी यू सी की घरेलू मांग में 50 प्रतिशत वृद्धि हुई है। डी आई द्वारा पी यू सी के उत्पादन में 13 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। अतः घरेलू उद्योग घरेलू मांग का प्रबंध करने में सक्षम नहीं है।
- त. घरेलू उद्योग द्वारा पी यू सी की घरेलू बिक्री में 82 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इसी प्रकार, पी यू सी के घरेलू बाजार हिस्से के संबंध में, घरेलू उद्योग का हिस्सा भी 21 प्रतिशत बढ़ा है। इस प्रकार, घरेलू उद्योग द्वारा सकारात्मक वृद्धि दर्ज की गई है।
- थ. जहां, क्षति अवधि के दौरान स्थापित क्षमता वही बनी रही है, क्षमता उपयोग में 13 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग डी पी पी 254 संयंत्र में फिल्टरेशन और डाईंग स्तर पर गत्यवरोधों को दूर करने के द्वारा पी यू सी के संबंध में अपनी स्थापित क्षमता का विस्तार करने की योजना बना रहा है। तथापि, भविष्य का उत्पादन योजना की सुरक्षा, जिसे अभी सामने आना बाकी है, के संबंध में जारी निर्णायक समीक्षा जांच में विचार नहीं किया जा सकता।
- द. घरेलू उद्योग के समग्र लाभ में 4 वर्षों की अवधि में 500 प्रतिशत की भारी वृद्धि हुई है। इसी प्रकार, जांच अवधि के दौरान ब्याज और कर पूर्व लाभ (पी बी आई टी) और कर लाभों में 231 प्रतिशत और जांच अवधि के दौरान 98 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग की नियोजित औसत पूंजीपर आय (आर ओ सी ई) ने 4 वर्ष की अवधि में 125 प्रतिशत की समग्र वृद्धि दर्शाई है।
- ध. जांच अवधि के दौरान समग्र भंडार मात्रा में 70 प्रतिशत की उल्लेखनीय कमी हुई है जो इंगित करता है कि घरेलू उद्योग बिक्री द्वारा अपने अधिकतर उत्पादन को समाप्त कर सकता है।
- न. भारतीय मुद्रा की कीमत में हास हुआ है जिसके परिणामस्वरूप चीन जन. गण. से कच्ची सामग्री की कीमतों में वृद्धि हुई है। इस कारण उत्पादन लागतों में वृद्धि हुई है।
- प. जांच की अवधि के दौरान, संबद्ध देशों के अतिरिक्त अन्य देशों से पी यू सी के आयातों ने 375 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाई है। घरेलू बाजार हिस्से के संबंध में अन्य देशों से पी यू सी के आयातों का हिस्सा 215 प्रतिशत बढ़ा है।
- फ. प्रयोक्ता उद्योग में भारत में संपूर्ण पेंट उद्योग शामिल है और यह भारतीय विनिर्माण क्षेत्र के भीतर एक महत्वपूर्ण खंड है। इसलिए, प्रयोक्ता उद्योग का हित, जो स. घ. उ. में महत्वपूर्ण योगदान कर रहा है, उसे 100 प्रतिशत ई. ओ. यू. को सुरक्षा प्रदान करने के लिए उपेक्षित नहीं किया जा सकता, जो भारत में घरेलू बाजार का ज्यादा प्रबंध नहीं करता।
- ब. निष्पादन मानदंडों का विश्लेषण संकेत करता है कि घरेलू बाजार ने अत्यधिक अच्छा निष्पादन किया है। पी ओ आई तक अग्रणी अवधि के दौरान आयात कीमतों में उल्लेखनीय वृद्धि के साथ चीन जन. गण. का आयात हिस्सा 4 प्रतिशत पर स्थित है। इसके अतिरिक्त, चीन जन. गण. से वर्तमान पहुंच कीमतें घरेलू उद्योग की एन आई पी की तुलना में 15.23 प्रतिशत अधिक है। अतः यह स्पष्ट रूप से प्रदर्शन योग्य है कि घरेलू उद्योग को कोई महत्वपूर्ण क्षति विद्यमान नहीं है।
- भ. घरेलू उद्योग का तर्क कि एक बार पाटन की संभावना स्थापित हो जाने पर, यह विद्यमान पाटनरोधी शुल्क के विस्तार की सिफारिश के लिए पर्याप्त हो सकता है, आधारहीन है। 'क्षति की पुनरावृत्ति की संभावना' की अनुपस्थिति, जारी पाटन की मौजूदगी मानदंड का एकमात्र आधार नहीं हो सकती, जिसके आधार पर किसी एस एस आर जांच में एक पाटनरोधी शुल्क का विस्तार नहीं किया जा सकता। इस संबंध में यह भी नोट किया जा सकता है कि पूंजी पर आय की 22 प्रतिशत दर स्वयं में क्षति की पुनरावृत्ति की संभावनों की मौजूदगी को सिद्ध करने के लिए अपर्याप्त है।

- म. मौखिक सुनवाई के दौरान घरेलू उद्योग ने इस तथ्य को स्वीकार किया है कि चीन जन. गण. से पी यू सी के आयातों से कोई मात्रा संबंधी क्षति नहीं हुई है। अतः, इस संबंध में यदि कोई क्षति हुई है तो वह यू एस आयातों की उच्च मात्रा के कारण है जिसमें चीन जन. गण. से मात्रा में 85 प्रतिशत गिरावट के विरुद्ध आधार वर्ष की तुलना में 380 प्रतिशत वृद्धि हुई है। इसके अतिरिक्त, हांगकांग से निर्यातों को वास्तव में उनके चीन जन. गण. के मूल के होने के साक्ष्य के अभाव में चीन जन. गण. से निर्यातों के रूप में एक साथ नहीं रखा जा सकता।
- य. घरेलू उद्योग ने अपने मौखिक सुनवाई के पश्चात के निवेदनों में शुल्क के विस्तार के संबंध में सार्वजनिक हित में होने के अपने दावे के समर्थन में कोई दावा नहीं किया है। यह संकेत करता है कि यदि शुल्क का विस्तार किया जाता है तो वह कुल मिलाकर डाउनस्ट्रीम प्रयोक्ता उद्योग और जनता के हित में नहीं होगा। यह देखते हुए कि घरेलू उद्योग का स्वरूप ई ओ यू का है जिसका प्रयास निर्यात बाजारों पर केंद्रित है और यह तथ्य कि मांग आपूर्ति अंतर विद्यमान है, पाटनरोधी शुल्क का विस्तार केवल पी यू सी की नियमित आपूर्ति को खत्म करेगा जबकि घरेलू उद्योग जो कि पी यू सी का एक मात्र विनिर्माता है, प्रस्तुत आपूर्ति शृंखला पर एकाधिकार करने में समर्थ है।
- कक. उल्लेखनीय रूप से पृथक भिन्न-भिन्न एस एस आर डी पी पी रेड 254 का आयात किया गया है जो अपने प्रयोज्यों में पृथक हैं और इसलिए उल्लेखनीय रूप से विभिन्न कीमतें धारित करते हैं।
- खख. पाटनरोधी शुल्क को लागू करने के बावजूद, चीन से महत्वपूर्ण आयात प्रवेश कर रहे हैं, जो इनके आयातों को प्रतिस्थापित करने और अपनी बिक्री तथा बाजार हिस्से को बढ़ाने में घरेलू उद्योग की अक्षमता को भी प्रकट करते हैं। महत्वपूर्ण रूप से चीन से ऐसे आयात पाटनरोधी शुल्क को लागू करने के अतिरिक्त, वास्तविक आयातक के व्ययों और लाभों को भी अपरिहार्य बनाते हैं। इन तथ्यों के बावजूद, उपभोक्ता उद्योग द्वारा संबद्ध वस्तुओं की महत्वपूर्ण मात्रा आयात की गई है, क्यों उनके पास कोई विकल्प नहीं हैं। एकमात्र घरेलू उत्पादक ऐसी वांछित विशिष्टताओं वाली संबद्ध वस्तुओं को उपलब्ध कराने में समर्थ नहीं हैं जिनकी भारतीय उपभोक्ता उद्योग को आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, यह स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तुएं आयातित वस्तुओं के समतुल्य नहीं हैं अन्यथा उपभोक्ता उद्योग संबद्ध देश से आयातित संबद्ध वस्तुओं का प्रयोग करने का विकल्प क्यों चुनता जिन पर पाटनरोधी शुल्क की भारी राशि चुकानी पड़ती है ? इसके अतिरिक्त, घरेलू उद्योग ने भारत में संबद्ध वस्तुओं की अभिभावी घरेलू कीमतों की तुलना में महत्वपूर्ण रूप से निम्न कीमतों पर संबद्ध वस्तुओं के निर्यात को क्या चुना ? और भारत में इनकी बिक्री क्यों नहीं की ?
- गग. यू एस से इन आयातों का पहुंच मूल्य संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के पहुंच मूल्य की तुलना में उल्लेखनीय रूप से निम्न है। चूंकि, भारतीय प्राधिकारी ने निम्नतर शुल्क नियम लागू किया है, यह माना जाता है कि प्रवृत्त शुल्क क्षति मार्जिन आधारित है। अतः, यह पाया गया कि संबद्ध वस्तुओं की महत्वपूर्ण मात्रा यू एस से आयात की गई है जो घरेलू उद्योग के माने गए एन आई पी की तुलना में काफी निम्न पर भारत में पहुंच की गई है। चूंकि, यू एस से संबद्ध वस्तुओं का उतरान मूल्य घरेलू उद्योग को बिल्कुल चिंतित नहीं कर रहा है, यह मानना सुरक्षित होगा कि ऐसी समान कीमतों/मूल्यों, जिन पर यू एस से आयात किया जाता है, पर संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं के आयात से घरेलू उद्योग द्वारा उसके स्वयं के मानदंड के अनुसार क्षति प्राप्त करने की संभावना नहीं है।
- घघ. क्यों यू एस से आयात घरेलू उद्योग चिंतित नहीं करते, क्योंकि विशेष रूप से यू एस से पहुंच मूल्य लगातार चीन से मूल्यों की तुलना में निम्न रहे हैं ? ऐसा क्यों है कि इसे होने वाली क्षति संबद्ध देश तक प्रतिबंधित है, इसके बावजूद कि यू एस से वस्तुएं भारी मात्रा में और तुलनीय अथवा निम्न कीमतों पर प्रवेश कर रही हैं।
- ड.ड. क्या उद्योग का प्रत्येक क्षेत्र हमेशा प्रत्येक समय 22 प्रतिशत की दर पर आर ओ आई प्राप्त करता है ? हम विनम्रतापूर्वक निवेदन करते हैं कि शून्य आयातों के बावजूद, यह नहीं हो सकता और यह सुनिश्चित नहीं किया जा सकता कि प्रत्येक समय और सभी स्थितियों में घरेलू उद्योग 22 प्रतिशत की दर पर ही आर ओ आई प्राप्त करे। इसके अतिरिक्त, आर ओ आई, महत्वपूर्ण रूप से विभिन्न क्षेत्रों में और विभिन्न

समय पर और विशेष रूप में संयंत्र की आयु के आधार पर भिन्न होता है। अधिक महत्वपूर्ण रूप से यह अन्य बातों के साथ-साथ इसकी कार्यकुशलता, उत्पादकता और साथ ही बाजार प्रतियोगिता पर भी निर्भर करता है। अविवादात्मक रूप से, संबद्ध वस्तुओं की उल्लेखनीय मात्रा भारतीय बाजार में यू एस से प्रतिस्पर्धा कर रही है। किंतु आश्चर्यजनक रूप से घरेलू उद्योग को इससे क्षति नहीं हो रही ? इसके अलावा, उच्च आर ओ आई को प्राप्त करने की इसकी क्षमता भी यू एस से आयातों की भारी मात्रा में उपस्थिति का कारण भी है।

छ.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

53. डब्ल्यू टी ओ करार के अनुच्छेद 3.1 और नियमावली के अनुबंध-II में इन दोनों की तथ्यपरक जांच की व्यवस्था है, (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान उत्पाद के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों का प्रभाव, और (ख) ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों का परिणामी प्रभाव। पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप से अथवा भारत में उत्पादन या खपत की दृष्टि से भारी वृद्धि हुई है। पाटित आयातों के कीमत प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान उत्पादों की कीमतों की तुलना में भारी कीमत कटौती की गई है अथवा क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा कीमतों में महत्वपूर्ण स्तर तक कमी करना है या ऐसा कीमत वृद्धि को रोकना जो अन्यथा काफी मात्रा में बढ़ गई होती।
54. वर्तमान जांच प्रवृत्त पाटनरोधी शुल्कों की निर्णायक समीक्षा है। नियम 23 में व्यवस्था की गई है कि नियम 11 के प्रावधान आवश्यक परिवर्तनों सहित किसी पुनरीक्षा के मामले में भी लागू होंगे। इसलिए, प्राधिकारी ने आवश्यक परिवर्तन करते हुए अनुबंध-II के साथ पठित नियम 11 के प्रावधानों पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग को क्षति का निर्धारण किया है। अनुबंध-II के साथ पठित पाटनरोधी नियमावली के नियम 11 में किसी क्षति के निर्धारण में यह उपलब्ध है कि किसी क्षति जांच में”..... पाटित आयातों की मात्रा, समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर उनके प्रभाव और ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामी प्रभाव सहित सभी संगत कारकों को ध्यान में रखते हुए” ऐसे कारकों की जांच शामिल होगी जिनसे घरेलू उद्योग को हुई क्षति का पता चल सकता हो। कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते समय इस बात पर विचार करना आवश्यक है कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान वस्तु की कीमत की तुलना में अत्यधिक कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से की कीमतों में अन्यथा अत्यधिक गिरावट आई है या कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रूकावट आई है, जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती।”
55. जहां तक घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के परिणामी प्रभाव का संबंध है, नियमावली के अनुबंध-II के पैरा (iv) में यह अपेक्षित है कि -
 “(iv) घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में समस्त संगत आर्थिक मापदंडों और संकेतकों जिनमें बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्से, उत्पादकता, निवेश पर आय अथवा क्षमता उपयोग में वास्तविक एवं संभावित गिरावट पर घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले संकेतकों, घरेलू कीमतों, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकद प्रवाह, मालसूची, रोजगार, मजदूरी वृद्धि पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभावों का मूल्यांकन शामिल होगा।”
56. जहां तक हितबद्ध पक्षकारों आरोप है कि घरेलू उद्योग पिछड़े रूप से एकीकृत (बैकवर्ड इंटीग्रेटेड हैं और सीमित उपयोग के रूप में पी यू सी के अपने उत्पादन के एक भाग की खपत कर रहा है, प्राधिकारी ने नोट किया है कि घरेलू उद्योग द्वारा संबद्ध वस्तुओं की सीमित खपत बहुत नगण्य है और वास्तव में यह संबद्ध वस्तुओं के कुल उत्पादन के 1 प्रतिशत से भी कम है।
57. वर्तमान क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ, प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग पर संबद्ध वस्तुओं के पाटित आयातों के मात्रा और कीमत प्रभावों की और पाटन एवं क्षति के बीच क्षति एवं कारणात्मक संबंध, यदि कोई हो, की विद्यमानता की जांच करने के लिए कीमतों और लाभप्रदता की जांच करने के लिए कीमतों और लाभप्रदता पर इसके प्रभाव की जांच की है।

58. यह अनविर्य नहीं है कि क्षति के सभी मानदंड हास प्रदर्शित करें। कुछ मानदंड हास प्रदर्शित करते हैं जबकि कुछ सुधार प्रदर्शित करते हैं। प्राधिकारी ने सभी क्षति मानदंडों पर विचार किया है और तत्पश्चात निष्कर्ष निकाला है कि क्या पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई है अथवा नहीं। प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग और हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए तथ्यों और तर्कों को ध्यान में रखते हुए क्षति मानदंडों की तथ्यपरक जांच की है। तदनुसार, कुछ विशेष आर्थिक मानदंडों के साथ ही पाटित आयातों के मात्रा और कीमत प्रभाव की निम्नानुसार जांच की है :-

झ) मांग का आकलन

59. इस प्रयोजन हेतु भारत में उत्पाद की मांग या स्पष्ट खपत को भारतीय उत्पादकों की घरेलू बिक्रियों और सभी स्रोतों से आयातों के जोड़ के रूप में लिया गया है। प्राधिकारी द्वारा भारत में मांग/खपत में संबद्ध देश से आयातों के हिस्से को निम्नानुसार निर्धारित किया गया है :-

विवरण	इकाई	2015-16	2016-17	2017-18	पीओआई(क)	पीओआई
चीन जन. गण./हांगकांग से आयात	मी. टन	122	31	42	38	47
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	26	34	31	39
अन्य देशों से आयात	मी. टन	44	79	124	179	223
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	179	282	405	507
कुल आयात	मी. टन	166	110	166	216	270
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	66	100	130	163
आवेदक की घरेलू बिक्री	मी. टन	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	163	163	182	228
कुल मांग	मी. टन	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	104	124	150	188
बाजार हिस्सा						
घरेलू उद्योग का हिस्सा	%	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	157	131	121	121
चीन जन. गण./हांगकांग से आयात का हिस्सा	%	45%	11%	12%	9%	9%
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	25	27	21	21
अन्य देशों का हिस्सा	%	16%	28%	37%	44%	44%
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	173	227	270	270

60. जहां तक हांगकांग से निर्यातों का संबंध है, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि हांगकांग से विचाराधीन उत्पाद का ब्रांड नाम भी वही है, जो चीन के उत्पादक मै० सिनिक केमिकल्स लि० का है। घरेलू उद्योग ने साक्ष्य दिया है कि सिनिक की उत्पादन सुविधा केवल चीन में ही है जो कि हांगकांग में मै० सिनिक होल्डिंग्स लि० की एकमात्र धारित कंपनी है। अन्य हितबद्ध पक्षकार, विशेषकर ऐसे आयातक, जिन्होंने हांगकांग से आयात किए हैं, ने हांगकांग से चीन की वस्तुओं को शिपमेंट से भेजने के तथ्य के रूप में मूलता का प्रमाण पत्र, बिल्टी, वाणिज्यिक इन्वॉयस इत्यादि जैसे साक्ष्यपरक दस्तावेज दाखिल नहीं किए हैं। अतः प्राधिकारी हांगकांग से आयातों के मूल रूप से चीन से होने के संबंध में विचार करने का प्रस्ताव करते हैं।

61. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि चीन जन. गण. से आयात वर्ष 2015-16 में 122 मी. टन थे, जो जांच की अवधि (क) में कम होकर 38 मी. टन तक आ गए। तथापि, प्राधिकारी घरेलू उद्योग के इस तर्क से सहमत हैं कि वर्ष 2015-16 के दौरान के 85 प्रतिशत से अधिक आयात जांच की अवधि अप्रैल, 2015 से अगस्त, 2015 तक हुए थे, जो विगत वर्ष की तुलना में पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की प्रत्याशा में हुए थे। प्राधिकारी ने यह भी नोट किया है कि संबद्ध देश से जांच की अवधि (क) में भारत को आ रहे आयात पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से पूर्व मौजूदा स्तर के करीब ही हैं। अतः चीन जन. गण. से संबद्ध वस्तुओं के आयात अभी भी महत्वपूर्ण मात्रा में हैं।

II. पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव

I. संबद्ध देश के आयात की मात्रा और अंश

62. पाटित आयातों की मात्रा के संबंध में प्राधिकारी को यह विचार करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों में महत्वपूर्ण वृद्धि या तो निरपेक्ष दृष्टि से है या उत्पादन के सापेक्ष या भारत में खपत की दृष्टि से है। प्राधिकारी ने डीजीसीआई एंड एस द्वारा प्रदान किए गए सौदा-वार आयात संबंधी आंकड़ों के आधार पर संबद्ध देश और अन्य देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयातों की मात्रा की जांच की है। संबद्ध वस्तुओं के आयात की मात्रा और क्षति जांच की अवधि के दौरान पाटित आयातों का अंश इस प्रकार है :-

विवरण	इकाई	2015-16	2016-17	2017-18	जांच की अवधि (क)	जांच की अवधि
चीन जन. गण./हांगकांग से आयात	मी. टन	122	31	42	38	47
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	26	34	31	39
अन्य देशों से आयात	मी. टन	44	79	124	179	223
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	179	282	405	507
कुल आयात	मी. टन	166	110	166	216	270
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	66	100	130	163
कुल आयातों के संबंध में संबद्ध देश के आयात	%	73%	28%	25%	17%	17%
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	39	34	24	24
कुल भारतीय उत्पाद के संबंध में संबद्ध देश के आयात	%	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	28	35	27	27
मांग	मी. टन	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	104	124	150	188
मांग के संबंध में संबद्ध देश के आयात	%	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	25	27	21	21

63. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि यद्यपि संबद्ध देश से आयातों में निरपेक्ष दृष्टि से और साथ ही भारत में उत्पादन और खपत के संबंध में भी कमी आई है, जांच की अवधि (क) के दौरान अभी भी आयात महत्वपूर्ण मात्रा में हैं और पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से पूर्व प्रचलित स्तर के करीब हैं। अतः चीन जन. गण. से संबद्ध वस्तुओं के आयात अभी भी महत्वपूर्ण मात्रा में हैं।

III. पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव

64. नियमावली के अनलग्नक-II (ii) के अनुसार, प्राधिकारी को कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री, कीमत में मंदी और कीमत का दमन, यदि कोई हो, के संदर्भ में घरेलू कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करना अपेक्षित है।

i. कीमत कटौती

65. कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संदर्भ में प्राधिकारी को यह विचार करना अपेक्षित है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों से एक महत्वपूर्ण कीमत कटौती हुई है अथवा ऐसे आयातों का प्रभाव एक महत्वपूर्ण मात्रा में कीमतों का अन्यथा दमन करने के लिए है अथवा कीमत में वृद्धि को रोकने के लिए है, जो अन्यथा एक महत्वपूर्ण मात्रा में होती। इस संबंध में, संबद्ध देश से उत्पाद के पहुंच मूल्य और घरेलू उद्योग की औसत बिक्री कीमत व्यापार के उसी स्तर पर सभी निवल छूटों और करों के बीच एक तुलना की गई है। घरेलू उद्योग की कीमतों को कारखाना बाह्य स्तर पर निर्धारित किया गया था।

विवरण	यू ओ एम	2015-16	2016-17	2017-18	जांच की अवधि (क)
आयात की मात्रा	मी. टन	122	31	42	38
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	26	34	31
पहुंच कीमत	रु./ कि.ग्रा.	955	1,077	949	1100
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	113	99	115
माल भाड़ा को छोड़कर घरेलू बिक्री कीमत	रु./ कि.ग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	99	102	106
कीमत कटौती	रु./ कि.ग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	-37	122	20
कीमत कटौती	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	रेंज	10-20	(10)-0	10-20	0-10

66. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि चीन जन. गण. से संबद्ध वस्तुओं के आयातों से भारत में समान वस्तुओं की घरेलू बिक्री की कीमत में कटौती हो रही है।

ii. कम कीमत पर बिक्री

67. प्राधिकारी ने संबद्ध देश से पाटित आयातों पर घरेलू उद्योग की कम कीमत पर बिक्री के प्रभाव की जांच की है। इस प्रयोजन के लिए, नियमावली के अनुबंध- III के तहत निर्धारित एन आई पी की डीजीसीआई एंड एस के आयात संबंधी आंकड़ों से प्राप्त आयातों की पहुंच कीमत के साथ तुलना की गई है। घरेलू उद्योग की एन आई पी की आयातों की भारित औसत पहुंच कीमत के साथ तुलना इस प्रकार है :-

विवरण	यू ओ एम	मूल्य
आयात	मी. टन	47
पहुंच कीमत	रु./ कि.ग्रा.	1100
एन आई पी	रु./ कि.ग्रा.	***
क्षति मार्जिन	रु./ कि.ग्रा.	***
क्षति मार्जिन	%	***
प्रवृत्ति	रेंज	0-10

68. यह नोट किया गया है कि आयातों की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की गैर-क्षतिकारी कीमत से काफी कम थी। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग पर संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं के पाटित आयातों के कारण जांच की अवधि के दौरान कम कीमत पर बिक्री का प्रभाव पड़ा है।
69. प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि कम कीमत पर बिक्री अग्रिम अधिकरण के तहत किए गए आयातों के मामले में काफी अधिक होगी।

iii. कीमतों में मंदी तथा कीमतों का दमन

70. यह निर्धारित करने के लिए कि क्या पाटित आयातों से घरेलू कीमतों में मंदी होने का प्रभाव पड़ रहा है अथवा क्या ऐसे आयातों का प्रभाव कीमतों को महत्वपूर्ण मात्रा में मंद करने और कीमत में वृद्धि को रोकने के लिए है जो अन्यथा इतनी महत्वपूर्ण मात्रा में होती, इसलिए प्राधिकारी ने क्षति अवधि के दौरान लागतों और कीमतों तथा पहुंच मूल्य में परिवर्तन पर विचार किया है। इस संबंध में स्थिति नीचे तालिका में दी गई है :-

विवरण	इकाई	2015-16	2016-17	2017-18	जांच की अवधि (क)	जांच की अवधि
निर्माण करने और बिक्री की लागत	रू./ कि.ग्रा.	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	96	101	101	101
घरेलू बिक्री कीमत	रू./ कि.ग्रा.	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	99	102	106	106
पहुंच कीमत	रू./ कि.ग्रा.	955	1,077	949	1100	1100
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	113	99	115	115

छ.4 घरेलू उद्योग के आर्थिक मापदंडों पर प्रभाव

71. नियमावली के अनुलग्नक-II के तहत यह अपेक्षित है कि क्षति के निर्धारण में समान उत्पाद के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामस्वरूप होने वाले प्रभाव की एक उद्देश्यपरक जांच शामिल होगी। नियमावली के तहत यह भी अपेक्षित है कि घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में सभी संगत आर्थिक कारकों और संकेतकों का एक ऐसा उद्देश्यपरक और निष्पक्ष मूल्यांकन शामिल होगा जिसका बिक्रियों, लाभों, आउटपुट, बाजार अंश, उत्पादकता, निवेशों पर प्रतिफल अथवा क्षमता के उपयोग में वास्तविक और संभावित गिरावट, घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारकों, पाटन के मार्जिन की मात्रा, नकदी प्रवाह, इन्वेंट्री, रोजगार, मजदूरी, विकास और पूंजीगत निवेश जुटाने की क्षमता को प्रभावित करने वाले कारकों सहित घरेलू उद्योग की स्थिति से संबंध हो। घरेलू उद्योग के संबंध में विभिन्न क्षति मापदंड नीचे दिए गए हैं:-

क) क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्रियां

72. उत्पादन, घरेलू बिक्रियों, क्षमता और क्षमता उपयोग के संबंध में घरेलू उद्योग का निष्पादन इस प्रकार है :-

विवरण	यूओएम	2015-16	2016-17	2017-18	जांच की अवधि (क)	जांच की अवधि
क्षमता	मी. टन	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	100	100	100	125
उत्पादन	मी. टन	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	90	97	113	141

क्षमता उपयोग	%	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	90	97	113	113
घरेलू बिक्रियां	मी. टन	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	163	163	182	228

73. उपरोक्त तालिका से यह देखा जा सकता है कि :-

क. पूरी क्षति जांच की अवधि और जांच की अवधि के दौरान क्षमता स्थिर रही है।

ख. उत्पादन, क्षमता उपयोग और घरेलू बिक्रियों में मांग में वृद्धि को देखते हुए क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई है।

ख) लाभ, लगाई गई पूंजी पर प्रतिफल और नकदी लाभ

74. बिक्रियों की लागत, बिक्री कीमत, लाभ/हानि, नकदी लाभ और घरेलू उद्योग के निवेश पर प्रतिफल का इस प्रकार से विश्लेषण किया गया है :-

विवरण	यू ओ एम	2015-16	2016-17	2017-18	जांच की अवधि (क)	जांच की अवधि
लाभ/(हानि)	रू./ कि.ग्रा.	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	235	144	329	329
लाभ/(हानि)	रू लाख	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	381	234	600	750
पीबीआईटी	रू लाख	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	203	146	313	391
नकदी लाभ	रू लाख	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	123	125	198	247
आर ओ आई	%	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	214	125	225	225

75. यह देखा गया है कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद वर्ष 2016-17 के दौरान पहले लाभों, निवेश पर प्रतिफल और नकदी लाभ में वृद्धि हुई है उसके बाद वर्ष 2017-18 में गिरावट आई है और जांच की अवधि के दौरान पुनः सुधार आया है। लाभों, निवेश पर प्रतिफल और नकदी लाभ के संदर्भ में कोई स्थिर प्रवृत्ति नहीं है। तथापि, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि निवेश पर प्रतिफल क्षति अवधि के दौरान *** प्रतिशत के बीच रहा है, जिसका दावा घरेलू उद्योग द्वारा ईष्टतम स्तर से काफी नीचे के स्तर पर किया गया है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग की लाभप्रदता और निवेश पर प्रतिफल में घरेलू उद्योग द्वारा संयंत्र में पवन टरबाइन और कोल बायलर की स्थापना करके प्राप्त यूटिलिटी लागत में महत्वपूर्ण कमी होने के कारण जांच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की लाभप्रदता और निवेश पर प्रतिफल में सुधार आया है।

ग) मांग में बाजार अंश

76. घरेलू उद्योग की मांग में बाजार अंश पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच की गई है, जो इस प्रकार है :-

विवरण	इकाई	2015-16	2016-17	2017-18	जांच की अवधि (क)	जांच की अवधि
घरेलू उद्योग के अंश का प्रतिशत	%	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	157	131	121	121
चीन जन. गण./हांगकांग से आयातों का अंश	%	45%	11%	12%	9%	9%
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	25	27	21	21
अन्य देशों का अंश	%	16%	28%	37%	44%	44%
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	173	227	270	270

77. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग के बाजार अंश में वर्ष 2016-17 के दौरान पर्याप्त वृद्धि हुई है लेकिन उसके बाद वर्ष 2017-18 तथा जांच की अवधि (क) के दौरान गिरावट आई है।

घ) रोजगार, मजदूरी और उत्पादकता

78. रोजगार, मजदूरी और उत्पादकता के संबंध में स्थिति नीचे दी गई है :-

विवरण	यू ओ एम	2015-16	2016-17	2017-18	जांच की अवधि (क)	जांच की अवधि
कर्मचारी	संख्या	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	92	100	100	100
उत्पादन/ कर्मचारी	प्रति कर्मचारी	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	97	97	113	113
उत्पादन	मी. टन /प्रति दिन	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	90	97	113	113

79. प्राधिकरण ने नोट किया कि घरेलू उद्योग का रोजगार पूरे चोट की अवधि के दौरान समान स्तर पर रहा। प्रति कर्मचारी उत्पादकता में भी जांच की अवधि में मामूली सुधार आया है।

ड.) वस्तुसूची (इन्वेन्ट्री)

80. संबद्ध वस्तुओं की वस्तुसूची (इन्वेन्ट्री) के संबंध में डाटा नीचे तालिका में दर्शाया गया है:-

विवरण	इकाई	2015-16	2016-17	2017-18	जांच की अवधि (क)	जांच की अवधि
आरंभिक स्टॉक	मी. टन	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	299	176	85	85
अंतिम स्टॉक	मी. टन	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	59	28	12	12
औसत स्टॉक	मी. टन	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	119	65	30	30

81. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग के पास वस्तुसूची (इन्वेंट्री) के स्तर में जांच की अवधि (क) के दौरान कमी आई है।

च) पाटन की मात्रा

82. पाटन की मात्रा ऐसी सीमा का संकेतक है, जिस सीमा तक भारत में आयातों का पाटन हो रहा है और जिनके कारण घरेलू उद्योग को क्षति हो रही है अथवा क्षति होने की अशंका है। यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देश से भारत में आयात पाटित कीमतों पर प्रवेश कर रहे हैं और पाटन का मार्जिन न्यूनतम सीमा से अधिक और पर्याप्त है। पाटनरोधी शुल्क लागू रहने के बावजूद पाटन होने जारी रहे।

छ) पूंजीगत निवेश जुटाने की क्षमता

83. घरेलू उद्योग के पास देश में उत्पाद की वर्तमान और भावी मांग पर विचार करते हुए विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन के लिए वर्धित क्षमता है। तथापि, पाटन जारी रहे और पाटनरोधी शुल्क समाप्त होने के मामले में अतिरिक्त पूंजी जुटाने की घरेलू उद्योग की क्षमता पर प्रभाव पड़ेगा।

ज) विकास

84. घरेलू उद्योग के विकास के संबंध में डाटा नीचे तालिका में दिए गए हैं :-

विकास	इकाई	2015-16	2016-17	2018-19	जांच की अवधि (क)	जांच की अवधि
उत्पादन	%		***	***	***	***
घरेलू बिक्रियां	%		***	***	***	***
घरेलू लाभ- प्रति यूनिट	%		***	***	***	***
घरेलू लाभ – रु लाख में	%		***	***	***	***
नकदी लाभ	%		***	***	***	***
पी बी आई टी	%		***	***	***	***
आर ओ आई	%		***	***	***	***

85. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग के पास पाटनरोधी शुल्क लागू होने के परिणामस्वरूप मात्रा संबंधी मापदंडों में सकारात्मक वृद्धि दर्ज की गई है जैसे उत्पादन, बिक्रियां आदि। लाभप्रदता और निवेश पर प्रतिफल में भी क्षति जांच की अवधि के दौरान सकारात्मक विकास की प्रवृत्ति दर्शाई गई है। तथापि, निवेश पर प्रतिफल अभी भी ईष्टतम स्तर से नीचे है और यह क्षति जांच की अवधि के दौरान 4 प्रतिशत से 9 प्रतिशत के बीच रही है।

i) घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

86. संबद्ध देश से आयात कीमतों, लागत संरचना में परिवर्तन, घरेलू बाजार में प्रतिस्पर्धा, पाटित आयातों के अलावा ऐसे अन्य कारक, जो घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों को प्रभावित करते हैं, की जांच यह दर्शाती है कि संबद्ध देश से आयातित सामग्री की पहुंच कीमत बिक्री कीमत से कम है और घरेलू उद्योग की गैर- क्षतिकारी कीमत में कटौती हो रही है और भारतीय बाजार में कम कीमत पर बिक्री हो रही है। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि सामान्यतः विचाराधीन उत्पाद की कीमत प्रमुख कच्ची सामग्री की कीमतों को मिलाकर तय होनी चाहिए और घरेलू उद्योग इन इनपुट कीमतों और आयातों की पहुंच कीमत पर विचार करके इसकी कीमतें तय कर रहा है। इस प्रकार, संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं का पहुंच मूल्य घरेलू कीमतों का निर्धारण करने में एक महत्वपूर्ण कारक होता है।

अन्य ज्ञात कारक और कारणात्मक संबंध

87. प्राधिकारी ने नियमानुसार ऐसे अन्य सूचीबद्ध कारकों को नोट किया है, जिन्होंने पाटन और घरेलू उद्योग की क्षति की जांच के बीच कारणात्मक संबंध की जांच के लिए घरेलू उद्योग की क्षति के लिए योगदान दिया है।

क) तीसरे देशों से आयातों की मात्रा और कीमत

88. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि विचाराधीन उत्पाद के आयात महत्वपूर्ण मात्रा में संयुक्त राज्य अमेरिका से भारत में आ रहे हैं। तथापि, यू एस ए से आयात की कीमत चीन जन. गण. से आयात की कीमत (जिस पर पाटनरोधी शुल्क पहले से ही लागू है) से काफी अधिक है। इस प्रकार यह नहीं कहा जा सकता कि चीन जन. गण. के अलावा अन्य देशों से आए आयातों के कारण घरेलू उद्योग की क्षति हो रही है।

ख) निर्यात निष्पादन

89. घरेलू उद्योग द्वारा दावा की गई क्षति केवल घरेलू प्रचालनों के संबंध में हैं और घरेलू उद्योग को हुई क्षति पर निर्यातों का कोई प्रभाव नहीं है।

ख) प्रौद्योगिकी

90. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकी में कोई महत्वपूर्ण बदलाव नहीं हुआ है। प्रौद्योगिकी में संभव बदलाव घरेलू उद्योग को क्षति होने का कारक नहीं हैं।

ग) विदेशी और घरेलू उत्पादकों के बीच व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रक्रिया और प्रतिस्पर्धा

91. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि ऐसी कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रक्रिया नहीं है जिसका कि घरेलू उद्योग को क्षति होने में योगदान हो।

घ) खपत की पद्धति में परिवर्तन

92. विचाराधीन उत्पाद के संबंध में खपत की पद्धति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। खपत की पद्धति में परिवर्तन होने से घरेलू उद्योग की क्षति में योगदान होने की संभावना नहीं है।

ड.) अन्य उत्पादों के संबंध में घरेलू उद्योग का निष्पादन

93. आवेदक द्वारा उत्पादित किए जा रहे और बेचे जा रहे अन्य उत्पादों का निष्पादन घरेलू उद्योग को क्षति होने का एक संभव कारण नहीं है, क्योंकि आवेदक द्वारा प्रस्तुत किए गए निष्पादन के संबंध में सूचना केवल विचाराधीन उत्पाद के संबंध में है।

ज) क्षति की मात्रा और क्षति का मार्जिन

94. प्राधिकारी ने नियमावली के अनुलग्नक-III के साथ पठित यथा संशोधित नियम में विनिर्दिष्ट सिद्धांतों के आधार पर घरेलू उद्योग के लिए गैर-क्षतिकारी कीमत का निर्धारण किया है। जांच की अवधि के लिए उत्पादन की लागत के संबंध में पुष्टि की गई सूचना/आंकड़ों को स्वीकार कर विचाराधीन उत्पाद के लिए एन आई पी का निर्धारण किया गया है। क्षति मार्जिन की गणना करने के लिए संबद्ध देश से पहुंच कीमत की तुलना करने के लिए एन आई पी पर विचार किया गया है। एन आई पी का निर्धारण करने के लिए क्षति की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा कच्ची सामग्रियों का सर्वोत्तम उपयोग करने पर विचार किया गया है। यूटिलिटीज के साथ भी वही व्यवहार किया गया है। जांच की अवधि में उत्पादन की गणना के लिए सर्वोत्तम क्षमता के उपयोग पर विचार किया गया है और उसी उत्पादन पर प्रति यूनिट निर्धारित लागत निकाल कर विचार किया गया है। यह सुनिश्चित किया जाता है कि उत्पादन की लागत के लिए कोई भी असाधारण अथवा गैर-आवृत्ति व्यय नहीं किया गया था। विचाराधीन उत्पाद के लिए औसत पूंजी व्यय (अर्थात् औसत निवल निर्धारित परिसंपत्ति तथा औसत कार्यशील पूंजी) पर एक तर्कसंगत प्रतिफल (22 प्रतिशत की दर से प्री-टैक्स) की प्री-टैक्स लाभ के रूप में अनुमति दी गई थी ताकि अनुलग्नक-III में यथा निर्धारित और अनुसरण की जा रही एन आई पी निकाली जा सके। इस प्रकार से निर्धारित गैर-क्षतिकारी कीमत की क्षति मार्जिन के निर्धारण के लिए संबद्ध देश से आयातों के पहुंच मूल्य के साथ तुलना की गई है, जो इस प्रकार है :-

क्षति मार्जिन तालिका

क्र. सं.	देश	उत्पादन	एनआईपी यू एस डॉलर/ कि.ग्रा.	पहुंच कीमत यू एस डॉलर/ कि.ग्रा.	क्षति मार्जिन यू एस डॉलर/ कि.ग्रा.	क्षति मार्जिन %	क्षति मार्जिन रेंज- %
1	चीन जन. गण.	कोई	***	15.57	***	***	0- 10%

ट. पाटन और क्षति के जारी रहने अथवा पुनरावृत्ति होने की संभावना**ट.1 घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध**

95. यदि मौजूदा शुल्क को वापस लिया जाता है तो पाटन के जारी रहने की स्पष्ट संभावना है, जिसमें चीन जन. गण. से निर्यातकों द्वारा और भी तेजी लाए जाने की संभावना है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति की स्थिति में भी तेजी आने की संभावना है।

क. पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद भी पाटन जारी रहना

96. यह अवगत कराया जाता है कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बावजूद चीन जन. गण. से पाटित आयात होने जारी रहते हैं। यदि शुल्क वापस लिए जाते हैं तो चीन जन. गण. से भारत में आ रहे पाटित आयातों की मात्रा में वृद्धि होने की पूरी संभावना है। यह भी अवगत कराया जाता है कि चीन जन. गण. से भारत में आ रहे आयात न्यूनतम स्तर से अधिक हैं और पाटन का मार्जिन काफी महत्वपूर्ण है।

ख. वर्तमान समीक्षा जांच में चीन के उत्पादकों/ निर्यातकों की कोई भागीदारी नहीं

97. चीन जन. गण. से किसी भी उत्पादक/ निर्यातक ने वर्तमान जांच में भाग नहीं लिया है, इसमें सिनिक केमिकल्स कंपनी लि०, शंघाई भी शामिल है, जिसने मूल जांच में भाग लिया था और जिसे व्यक्तिगत शुल्क की दर प्रदान की गई थी।
98. सिनिक केमिकल्स कंपनी लि० चीन जन. गण. से सबसे बड़ा निर्यातक है, जिसने मूल जांच में प्राधिकारी के साथ सहयोग किया था। सिनिक केमिकल्स कंपनी लि० और अन्य उत्पादकों/ निर्यातकों की भागीदारी न होने से निर्णायक समीक्षा जांच के लिए अपेक्षित विभिन्न आवश्यक सूचना के प्रावधान के लिए मार्ग बंद हो गया है। नीचे दी गई सूचीबद्ध बुनियादी सूचना सामान्यतः उत्पादक/ निर्यातक द्वारा दाखिल किए गए उत्तर से आंकी जा सकती है :-
- उत्पादकों के पास उपलब्ध क्षमता और उपयुक्त क्षमता
 - जांच की अवधि और क्षति की अवधि के अंत में उत्पादकों/ निर्यातकों के पास उपलब्ध विचाराधीन उत्पाद की वस्तुसूची (इन्वेंट्री)
 - उत्पादकों/ निर्यातकों का निर्यात अभिमुखी होना
 - घरेलू बाजार में बिक्रियां और लाभप्रदता
 - विभिन्न निर्यात लाभ
 - उत्पादकों/ निर्यातकों द्वारा कोई क्षमता विस्तार योजना
99. साथ ही, चीन के उत्पादकों की भागीदारी न होने के लिए एक और कारण हो सकता है कि उनके पास यह प्रमाणित करने के लिए कोई साक्ष्य नहीं है कि चीन जन. गण. से पाटन जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की कोई संभावना नहीं है।

100. न केवल भारत में बल्कि, कनाडा, यू एस ए और ई यू जैसे अन्य क्षेत्राधिकार वाले देशों में यह एक स्थापित प्रथा है कि समीक्षा जांच में ऐसे विदेशी उत्पादक/ निर्यातक की भागीदारी नहीं है, जिसने मूल जांच में भाग लिया है, जो भविष्य में पाटन के जारी रहने की स्पष्ट संभावनाओं को दर्शाता है। इस संबंध में घरेलू उद्योग ने एस आई ग्रुप इंडिया प्रा० लि० बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी मामले में माननीय सेस्टेट के निर्णय पर भरोसा किया है। उक्त दिनांक 28 नवंबर, 2019 के निर्णय के पैरा 22 में माननीय सेस्टेट ने संबद्ध देश से उत्पादक/ निर्यातक की पाटनरोधी शुल्कों के जारी रहने के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण कारक के रूप में भाग न लेने पर विचार किया है।

ग. घरेलू उद्योग आयात की कीमतों से मेल करने और तदनुसार एनआईपी/ उचित कीमत से कम कीमतों पर बिक्री करने को मजबूर हुआ है

101. यह अवगत कराया जाता है कि घरेलू उद्योग अपने बाजार अंश को बनाए रखने के लिए चीन जन. गण. से निर्यातकों द्वारा प्रस्तावित कीमतों पर समान वस्तु की बिक्री करने को मजबूर हुआ है। जैसा कि क्षति विश्लेषण में कहा गया है, पाटित आयातों से भारत में घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हो रही है और पाटित आयातों से कम कीमत पर बिक्री का प्रभाव भी हो रहा है।

घ. चीन जन. गण. में भारी क्षमताएं और संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन में वृद्धि

102. आवेदक ने बीजिंग झोंगीजिंग इन्फार्मेशन कंसल्टिंग कंपनी लि० द्वारा तैयार "चाइना पिगमेंट रेड 254 मार्केट डेप्थ एनालिसिस एंड प्रोस्पेक्टस रिपोर्ट" नामक मार्केट रिपोर्ट प्राप्त की है। रिपोर्ट का अवलोकन करने पर संबद्ध वस्तुओं के संबंध में कतिपय संगत टिप्पणियां सामने आई हैं। ये टिप्पणियां नीचे दी गई हैं :-

(i) चीन जन. गण. में आर्गेनिक पिगमेंट की बाजार में प्रतिस्पर्धा

103. हाल के वर्षों में, चीन के आर्गेनिक पिगमेंट इंटरप्राइजेस ने तीव्र विकास हासिल किया है। आर्गेनिक पिगमेंट इंडस्ट्री में उत्पादन इंटरप्राइजेस की संख्या और माप में काफी सुधार आया है। मजबूत वैज्ञानिक अनुसंधान क्षमता और पर्याप्त उत्पादन क्षमता के साथ अनेक इंटरप्राइजेस विकसित हुए हैं, जैसे चांगझाऊ नार्थ अमेरिका केमिकल्स ग्रुप कंपनी लि०, लिलियम ग्रुप कंपनी लि० और शंघाई झिहोंग पिगमेंट केमिकल ग्रुप कंपनी लि०।
104. ऐसे करीब 10 इंटरप्राइजेस हैं, जिनकी आर्गेनिक पिगमेंट की आउटपुट चीन में **** टन से अधिक की है और करीब 30 इंटरप्राइजेस ऐसे हैं, जिनकी आउटपुट **** से **** टन के बीच है।

(ii) चीन में पिगमेंट रेड 254 का उत्पादन विश्लेषण

105. वर्ष 2014 में चीन के पिगमेंट रेड 254 का आउटपुट **** टन था, वर्ष 2015 में चीन के पिगमेंट रेड 254 उद्योग का आउटपुट **** टन था, जिसमें प्रति वर्ष 12.0 प्रतिशत की वृद्धि थी; वर्ष 2016 में चीन के पिगमेंट रेड 254 उद्योग का आउटपुट **** टन था, जो प्रति वर्ष 2.5 प्रतिशत वृद्धि थी, वर्ष 2017 में चीन के पिगमेंट रेड 254 उद्योग का आउटपुट **** टन था, जो प्रति वर्ष 4.9 प्रतिशत की वृद्धि थी; वर्ष 2018 में चीन के पिगमेंट रेड 254 उद्योग का आउटपुट **** टन था, जो 3.5 प्रतिशत प्रति वर्ष की गिरावट थी; वर्ष के प्रथम अर्ध वर्ष में चीन के पिगमेंट रेड 254 उद्योग का आउटपुट **** टन था।

(iii) पिगमेंट रेड 254 उद्योग का निवेश हीट और निर्मित की जाने वाली परियोजनाएं

106. पिगमेंट रेड 254 उत्पादों के लिए मांग में वृद्धि होने के साथ ही, भावी बाजार संभावनाएं अभी भी अपेक्षाकृत व्यापक हैं। उत्पादन के लिए और भी इंटरप्राइजेस आ रहे हैं और पिगमेंट रेड 254 के उद्योगों में शामिल हो रहे हैं और औद्योगिक निवेश हीट में वृद्धि जारी रहेगी।

(iv) चीन जन. गण. में क्षमता

107. चीन के कुछ उत्पादकों के लिए उत्पादन की क्षमताएं, रिपोर्ट के अनुसार इस प्रकार हैं :-

निर्यातक/ उत्पादक	यूओएम	क्षमता
शॉंगल पिगमेंट टैक्सिंग कंपनी, लि०	मी. टन	****
शेन्यांग बैयाओ केमिकल कंपनी, लि०	मी. टन	****
नॉनटोंग झेंजियांन न्यू मैटेरियल टेक्नोलॉजी कंपनी, लि०	मी. टन	****
फोशान शुन्दे बोस्ट पिगमेंट कंपनी, लि०	मी. टन	****

108. इसके अलावा, सिनिक केमिकल्स (शंघाई) कंपनी लि० की उत्पादन क्षमता 2500 मी. टन है (जैसा कि दिनांक 19 जून, 2015 के अंतिम जांच परिणाम में बताया गया है)
109. उपरोक्त के आधार पर यह देखा जा सकता है कि चीन जन. गण. के पास संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन के लिए भारी उत्पादन क्षमताएं उपलब्ध हैं और पाटनरोधी शुल्क वापस लेने के मामले में पूरी संभावना है कि सरप्लस उत्पादन को पाटित कीमतों पर भारत को निर्यात किया जाएगा।

(v) चीन जन. गण. के घरेलू बाजार के साइज में कमी

विवरण	यूओएम	2015	2016	2017	2018
मार्केट स्केल	आरएमबी मिलियन	****	****	****	****
विकास दर	%	****	****	****	****

110. उपरोक्त तालिका से यह देखा जा सकता है कि वर्ष 2017 में चीन के घरेलू बाजार का बाजार साइज *** आर एम बी मिलियन था, जो वर्ष 2018 में गिरकर *** आर एम बी मिलियन हो गया। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि उनके पास अप्रयुक्त उत्पादन क्षमता उपलब्ध है, जिसका उपयोग पाटनरोधी शुल्क वापस होने की स्थिति में भारत को उनके निर्यातों में वृद्धि करके किया जाएगा।

ड.) एन आई पी से कम घरेलू बिक्री कीमत

111. वर्तमान में, भारत में आवेदक के लिए संबद्ध वस्तुओं की घरेलू बिक्री कीमत एन आई पी/ उचित कीमत से कम है।

विवरण	यूओएम	मूल्य
घरेलू बिक्री कीमत	रु/ कि. ग्रा.	***
एनआईपी	रु/ कि. ग्रा.	***
अंतर	रु/ कि. ग्रा.	***
घरेलू बिक्री कीमत के प्रतिशत के रूप में अंतर	%	***
प्रवृत्ति	रेंज	0-10%

112. यदि शुल्कों को समाप्त करने दिया जाता है तो भारत में घरेलू बिक्री कीमत में और भी गिरावट आएगी, जिससे घरेलू उद्योग के लिए महत्वपूर्ण क्षति होगी

च) दिनांक 20 मार्च, 2020 से डी पी पी रेड पिगमेंट पर 13 प्रतिशत की निर्यात वापसी

पिगमेंट के निर्यातों को बढ़ावा देने के लिए चीन की सरकार ने दिनांक 20 मार्च, 2020 से डी पी पी रेड पिगमेंट और अन्य पिगमेंट के निर्यातों पर 13 प्रतिशत की वैट वापसी/ निर्यात वापसी करनी शुरू कर दी है। वैट वापसी/ निर्यात वापसी, जो पहले मौजूद नहीं थी, 0 प्रतिशत से बढ़कर 13 प्रतिशत हो गई है, जो यदि शुल्क समाप्ति नहीं होती है तो संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं के निर्यातों में महत्वपूर्ण वृद्धि होगी। ऐसी स्थिति में, चीन के उत्पादकों को 13 प्रतिशत वैट वापसी/ निर्यात वापसी का लाभ होगा और इससे वे भारत में संबद्ध वस्तुओं के निर्यातों में तेजी लाएंगे। आवेदक ने यह कहा है कि वर्तमान महामारी की स्थिति में, जहां पर कि चीन सरकार अपने निर्यातों को बढ़ावा देने के लिए कई प्रकार के लाभ प्रदान कर रही है, प्राधिकारी को कानूनन संरक्षण लेने से वंचित न किया जाए जो भारत में घरेलू उत्पादकों के पास मौजूद है और चीन के उत्पादकों/ निर्यातकों जिनके पास उनकी सरकार का समर्थन है, के साथ लड़ाई के लिए असंरक्षित रखा जाए। ऐसी स्थिति में, चीन जन. गण. में उत्पादकों को अपने अधिक्य उत्पादन को निपटाने के लिए वैकल्पिक बाजार तलाशना होगा। भारत चीन के उत्पादकों के लिए सामान्य विकल्प होगा, क्योंकि भारत में मांग निकट भविष्य में बढ़ेगी। अतः ऐसी प्रबल संभावना है कि चीन के उत्पादक पाटनरोधी शुल्क वापसी की स्थिति में भारत में घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाकर अपना अधिक्य उत्पादन बेचने के लिए अपनी कीमतों में कमी करेंगे।

ट.2 अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध

113. पाटन और क्षति के जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना के संबंध में अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं :-

- क. प्रारंभ में, आयातक दिनांक 20 मार्च, 2020 से डी पी पी रेड पिगमेंट और अन्य के निर्यातों पर 13 प्रतिशत वापसी के संदर्भ में घरेलू उद्योग से अनुरोध करते हैं कि इस संबंध में अपने दावे के समर्थन में ऐसे कार्यक्रम की मौजूदगी का प्रमाण प्रदान करें, जो कि जांच की अवधि के बाद का है। आयातक यह भी नोट करते हैं कि निर्यात वापसी निर्यात बाजार से संबद्ध न होने के कारण, यह सुझाव देने का कोई साक्ष्य नहीं है कि निर्यातों में कोई भी वृद्धि केवल भारतीय बाजार की ओर ही होगी। इसके अलावा, एक शुल्क वापसी कार्यक्रम के खिलाफ उपाय, जो कि एक सब्सिडी रोधी जांच में एक सब्सिडी के रूप में है और इसका एक पाटनरोधी शुल्क लगाने की निर्णायक समीक्षा में दावा नहीं किया जा सकता। इस प्रकार से घरेलू उद्योग ऐसे मामलों के निवारण के लिए सही मंच से आग्रह करें।
- ख. पाटनरोधी शुल्कों के जारी होने के बाद चीन जन. गण. से आयातों में 2015-16 में 100 सूचीबद्ध प्वाइंट से गिरावट जांच की अवधि (क) में 38 प्वाइंट तक हो गई है।
- ग. घरेलू उद्योग के दावे में कोई दम नहीं है कि उसे कथित कम कीमत के आयातों के कारण उचित बाजार कीमत से कम कीमत पर बिक्री करने को मजबूर होना पड़ा है। इसके अलावा, कीमतों में कटौती 0-10 प्रतिशत के बीच है और कम कीमत पर बिक्री नकारात्मक है। पहुंच कीमत की भी गलत गणना की गई है।
- घ. घरेलू उद्योग ने चीन जन. गण. में अधिक्य क्षमताएं मौजूद होने के संबंध में डाटा पर गोपनीयता का दावा किया है। यहां तक तर्क के लिए अधिक्य क्षमताएं मौजूद होना भी पाटनरोधी शुल्कों के विस्तार के लिए पर्याप्त नहीं है। जैसा कि माननीय सेस्टेट द्वारा इंडियन स्पिनर्स एसोसिएशन बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी के मामले में पाया गया था।
- ड. घरेलू उद्योग ने यह कहा है कि डी पी पी रेड हाई- एंड अनुप्रयोगों से मिड – एंड अनुप्रयोगों, दोनों के लिए काफी आकर्षक उत्पाद है। तथापि, घरेलू उद्योग केवल बी ए एस एफ, जो कि यू एस ए में अन्य सुविधा वाली एक स्विस् कंपनी है, के संबंध में ही आकर्षकता के इस तर्क पर विचार- विमर्श कर रहा है। इस प्रकार यह तर्क चीन जन. गण. से विचाराधीन उत्पाद के आयातों के लिए संगत नहीं हैं, जो कि इस जांच में केवल संबद्ध कंपनी है।
- च. घरेलू बिक्री कीमत विचाराधीन उत्पाद के लिए गैर- क्षति कीमत (एन आई पी) से कम नहीं है।
- छ. समग्र कारकों का एक विश्लेषण चीन जन. गण. से घरेलू उद्योग को क्षति की पुनरावृत्ति होने की कोई संभावना नहीं दर्शाता। अन्य कारकों में चीन जन. गण. से आयातों में गिरावट, जांच की अवधि के बाद यू एस से चीन जन. गण. से कम कीमतों पर आयात होना और एन आई पी की तुलना में काफी अधिक घरेलू बिक्री कीमतें होना शामिल है।

ट.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

114. प्राधिकारी के समक्ष लाए गए सभी कारकों के संबंध में यह तय करने के लिए जांच की गई है कि क्या शुल्क समाप्त होने की स्थिति में पाटन और क्षति के जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है। प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग और अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उपलब्ध कराई गई विभिन्न सूचना पर विचार किया है ताकि पाटन और क्षति के जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना का मूल्यांकन किया जा सके।
115. वर्तमान जांच चीन जन. गण. के संबद्ध वस्तुओं के आयातों पर पहले लगाए गए पाटनरोधी शुल्कों की एक निर्णायक समीक्षा है। नियमों के अनुसार, प्राधिकारी को यह निर्धारित करना अपेक्षित है कि क्या पाटनरोधी शुल्क लगाना जारी रखना आवश्यक है। इसमें यह विचार करना भी अपेक्षित है कि क्या लगाया गया शुल्क क्षतिकारी पाटन को दूर करने के लिए अभिप्रेत प्रयोजन को पूरा कर रहा है। इस संभावित विश्लेषण के लिए कोई विशिष्ट

कार्य पद्धति उपलब्ध नहीं है। तथापि, नियमावली के अनुलग्नक- II के क्लॉज (vii) के तहत अन्य के साथ-साथ ऐसे कारकों के लिए भी प्रावधान हैं जिन पर विचार किया जा सकता है यथा :-

- क. भारत में पाटित आयातों में वृद्धि की अत्यधिक दर जिससे आयात में अत्यधिक वृद्धि की संभावना का संकेत मिलता है ;
- ख. पर्याप्त, अत्यधिक रूप से प्रयोज्य उत्पाद अथवा निर्यातक की क्षमता में आसन्न, अत्यधिक वृद्धि जिससे भारतीय बाजारों में पर्याप्त रूप से बड़े हुए निर्यातों की संभावना का संकेत मिलता हो। इस संबंध में अतिरिक्त निर्यातों की खपत हेतु अन्य निर्यात बाजारों की उपलब्धता पर विचार किया जाएगा ;
- ग. क्या बाजार में आयातों का प्रवेश ऐसी कीमतों पर हो रहा है जिससे घरेलू कीमतों पर अत्यधिक अवमूल्यकारी अथवा ह्रासकारी प्रभाव पड़ेगा और होने वाले आयातों के लिए मांग में वृद्धि होने की संभावना होगी ; तथा
- घ. जांच की जा रही वस्तुओं की वस्तु सूचियां ।

116. इसके अलावा, प्राधिकारी ने ऐसे अन्य संगत कारकों की भी जांच की है, जिनका कि पाटन और उसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना का संबंध हो। संभावना के मापदंडों की जांच नीचे दी गई है:-

(i) पाटन का जारी रहना

117. यह नोट किया जाता है कि चीन जन. गण. से संबद्ध वस्तुओं के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बावजूद, चीन की आयात कीमतें पाटित और क्षतिकारी स्तर पर जारी रही और संबद्ध देश से आयातों की मात्रा भी लगभग उसी स्तर पर रही जो संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं पर पाटनरोधी शुल्क लगाने से पूर्व प्रचलित थीं। इसके अलावा, यह देखा गया है कि मूल जांच में और वर्तमान समीक्षा जांच में निर्धारित पाटन मार्जिन सकारात्मक और महत्वपूर्ण है। इस प्रकार पाटनरोधी शुल्क समाप्त होने की स्थिति में पाटन जारी रहने की संभावना है।

(ii) निर्यातकों के पास सरप्लस क्षमता

118. घरेलू उद्योग ने चीन जन. गण. में संबद्ध वस्तुओं की सरप्लस क्षमताएं मौजूद रहने के लिए साक्ष्य प्रदान किए हैं। घरेलू उद्योग ने बीजिंग झोंगजिंग इन्फार्मेशन कंसल्टिंग कंपनी लि० द्वारा तैयार “चाइना पिगमेंट रेड 254 मार्केट डेपथ एनालिसिस एंड प्रोस्पेक्ट्स रिपोर्ट” नामक मार्केट रिपोर्ट प्रदान की है। इस रिपोर्ट के आधार पर, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि चीन जन. गण. में संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन के लिए भारी उत्पादन क्षमताएं उपलब्ध हैं। इसके अलावा, चीन जन. गण. में संबद्ध वस्तुओं के बाजार साइज में कमी है, क्योंकि उनके पास अप्रयुक्त उत्पादन क्षमता उपलब्ध है जिसका उपयोग भारत को अनेक निर्यातों में वृद्धि करके किया जा सकता है।
119. इस तर्क के संबंध में कि प्राधिकारी को निर्यात कीमत की गणना करते समय “गैर वापसी योग्य वैट” का समायोजन करना अपेक्षित है जबकि घरेलू उद्योग ने 2020 में 13 प्रतिशत वापसी योग्य वैट की उपलब्धता के बारे में कहा है, अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने निर्यातों के कंसाइनमेंट में वैट के गैर- निर्यात का उल्लेख किया है। चूंकि घरेलू उद्योग उत्पादक की निर्यातक कीमत पर वैट की वापसी के साक्ष्य अथवा प्रभाव को प्रमाणित नहीं कर पाया है। यदि निर्यात एक ट्रेडर के माध्यम से सीधे अथवा अन्यथा निर्यात किए गए थे, तो प्राधिकारी इस समायोजन पर विचार करने का प्रस्ताव नहीं करते। तथापि, घरेलू उद्योग और अन्य हितबद्ध पक्षकार इस मामले पर अपनी टिप्पणियां दे सकते हैं। तदनुसार, समुद्री मालभाड़ा, बीमा कमीशन, बैंक प्रभार, बंदरगाह व्यय और स्वदेशी माल भाड़ा प्रभार के संबंध में निर्यात कीमत का समायोजन किया गया है ताकि असहयोग की स्थिति में प्राधिकारी द्वारा अपनाए जा रहे साक्ष्यों/ संगत मानकों के आधार पर कारखाना बाह्य स्तर पर निवल निर्यात कीमत निकाली जा सके।

120. रिकार्ड में उपलब्ध साक्ष्य के आधार पर, यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देश में अधिक्य उत्पादन क्षमताएं मौजूद हैं और पाटनरोधी शुल्कों को समाप्त किए जाने की स्थिति में भारतीय बाजार में अधिक्य क्षमताओं का अंतरण होने की संभावना है।

(iii) क्या आयात ऐसी कीमतों पर प्रवेश कर रहे हैं जिसका घरेलू उद्योग पर पर्याप्त मंदी अथवा दमनकारी प्रभाव पड़ेगा और उससे आगे आयातों के लिए मांग में वृद्धि की संभावना होगी।

121. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि भारत में जांच की अवधि के दौरान वर्तमान पहुंच कीमत पर सकारात्मक कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री हुई है।

(iv) वस्तु सूची (इन्वेंट्री)

122. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि चीन जन. गण. के पास संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन के लिए भारी उत्पादन क्षमता उपलब्ध है जिसका उपयोग भारत को निर्यातों में वृद्धि करने के लिए किया जा सकता है।

(v) चीन के उत्पादक/ निर्यातक द्वारा भाग न लेना

123. सिनिक केमिकल्स (शंघाई) कंपनी लि० ने मूल जांच में भाग लिया था और व्यक्तिगत शुल्क की दर प्राप्त की थी। तथापि, चीन जन. गण. से किसी भी उत्पादक/ निर्यातक ने वर्तमान समीक्षा जांच में भाग नहीं लिया है। घरेलू उद्योग ने यह प्रस्तुत किया है कि चीन जन. गण. से उत्पादक/ निर्यातक जान बूझकर वर्तमान समीक्षा जांच में भाग नहीं ले रहे हैं ताकि भारतीय प्राधिकारी द्वारा निर्णायक समीक्षा जांच आयोजित करने के लिए अपेक्षित संगत सूचना प्राधिकारी को उपलब्ध न हो सके और साथ ही भारतीय प्राधिकारी की इस जांच से बचा जा सके कि क्यों चीन के उत्पादक हांगकांग के जरिए संबद्ध वस्तुएं भेज रहे हैं। घरेलू उद्योग ने यह भी कहा है कि चीन के निर्यातकों ने भारत को जांच की अवधि के दौरान निर्णायक समीक्षा जांच की प्रत्याशा में जानबूझकर निर्यात कीमत में 15-20 प्रतिशत तक की वृद्धि की है, जबकि अन्य देशों में निर्यात कीमत में यह वृद्धि 1-2 प्रतिशत की है। वर्तमान मामले के तथ्य में विदेशी उत्पादक/ निर्यातक की भागीदारी न होना स्पष्ट तौर पर यह दर्शाता है कि पाटन के जारी रहने की स्पष्ट संभावना है, जिसमें आगे चीन जन. गण. से निर्यातकों द्वारा तेजी लाए जाने की संभावना है, जिसमें यदि मौजूदा शुल्क वापस लिए जाते हैं तो घरेलू उद्योग को क्षति में और भी तेजी आएगी।
124. उपरोक्त को देखते हुए, संभावना का विश्लेषण ऐसी स्थिति को इंगित करता है कि संबद्ध देश से निर्यातक पाटित कीमतों पर संबद्ध वस्तुएं निर्यात कर रहे हैं। मूल जांच में और वर्तमान समीक्षा जांच में पाटन मार्जिन सकारात्मक है और महत्वपूर्ण है। ऐसी स्थिति में, प्राधिकारी के पास यह विश्वास करने का कोई कारण नहीं है कि यदि मौजूदा शुल्क हटा लिए जाते हैं तो पाटन में तेजी नहीं जाएगी।

प्रकटीकरण के उपरांत की टिप्पणियां

घरेलू उद्योग द्वारा दायर किए गए अनुरोध

125. विचाराधीन उत्पाद और घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तावित उत्पाद चीन. जन. गण. से भारत में आयातित संबद्ध वस्तुओं के समान वस्तु है, जिसे प्राधिकारी द्वारा स्पष्ट किया जा चुका है। यह अनुरोध किया जाता है कि अंतिम जांच परिणाम में इसकी पुष्टि करें।
126. प्राधिकारी ने यह नोट किया है कि आवेदक आधार की अपेक्षा को पूरा करता है और पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) और 5(3) के प्रावधानों के तहत घरेलू उद्योग है।
127. जहां तक गोपनीयता का संबंध है, आवेदक का यह कहना है कि उनके द्वारा प्रदान की गई तीसरे पक्ष की बाजार विश्लेषण रिपोर्ट की सूचीबद्ध संख्या प्रकट न की जाए।
128. आवेदक का यह अनुरोध है कि जांच की अवधि के दौरान, संबद्ध वस्तुओं के लिए चीन जन. गण. में प्रचलित वैट की दर अप्रैल, 2018 से मार्च, 2019 तक की अवधि के लिए 16 प्रतिशत थी और अप्रैल, 2019 से जून, 2019 तक की अवधि के लिए यह 13 प्रतिशत थी (संगत साक्ष्य संलग्न हैं)। आवेदक का प्राधिकारी से यह अनुरोध है कि पाटन मार्जिन का निर्धारण करते समय, प्राधिकारी की संगत प्रथा के अनुसार प्राधिकारी को गैर-वापसी योग्य वैट के लिए समायोजन करने के संबंध में निर्यात कीमत को कम करना चाहिए।

129. पिगमेंट के निर्यातों को बढ़ावा देने के लिए, चीन की सरकार ने डी पी पी रेड पिगमेंट और अन्य पिगमेंट पर दिनांक 20 मार्च, 2020 से 13 प्रतिशत की वैट वापसी/ निर्यात वापसी प्रदान करनी शुरू कर दी है (संगत साक्ष्य संलग्न है)। वैट वापसी/ निर्यात वापसी में 0 प्रतिशत से 13 प्रतिशत की वृद्धि होने के फलस्वरूप, यह स्वभाविक है कि भारत में संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं के आयातों में महत्वपूर्ण वृद्धि होगी। चीन के उत्पादक/ निर्यातक इस 13 प्रतिशत वैट वापसी/ निर्यात वापसी का फायदा लेंगे, जो उन्हें चीन की सरकार द्वारा प्रदान किया गया है और वे भारत में अपने निर्यातों में तेजी लाएंगे। इसके कारण चीन की सरकार द्वारा दिनांक 20 मार्च, 2020 से चीन के निर्यातकों को प्रदान किए गए 13 प्रतिशत के वैट वापसी/ निर्यात वापसी के फायदे के कारण इस बात की स्पष्ट संभावना है कि चीन के निर्यातक भारत में अपने पाटित निर्यातों में तेजी लाएंगे और इसके कारण घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति होगी। ऐसी स्थिति में, यदि भारत सरकार घरेलू उद्योग को पाटनरोधी शुल्क के संरक्षण के रूप में संरक्षण प्रदान करना बंद कर देगी तो इससे निश्चय ही घरेलू उद्योग को गंभीर नुकसान होगा।
130. प्राधिकारी ने प्रकटीकरण विवरण के पैरा 41 में यह कहा है कि यदि निर्यात सीधे अथवा किसी व्यापारी के माध्यम से किए जाते हैं तो घरेलू उद्योग उत्पाद की निर्यात कीमत पर वैट की वापसी के प्रभाव को स्थापित करने में असमर्थ हैं।
131. आवेदक का यह कहना है कि चीन जन. गण. से संबद्ध वस्तुओं के निर्यातों पर अप्रैल, 2018 से मार्च, 2019 के दौरान 16 प्रतिशत और अप्रैल, 2019 से जून, 2019 तक के दौरान 13 प्रतिशत का गैर-वापसी योग्य वैट था। इस गैर-वापसी योग्य वैट का प्रभाव यह है कि गैर-वापसी योग्य वैट की मात्रा को विदेशी उत्पादकों/ निर्यातकों के पास उपलब्ध शेष वैट क्रेडिट से समायोजित किया जाना है। इसके परिणामस्वरूप निर्यात उत्पाद की लागत में वृद्धि होगी। तदनुसार, प्राधिकारी भारत सहित विश्व भर में निर्यात कीमत से गैर-वापसी योग्य समायोजन कर रहे हैं ताकि निर्यात कीमत और सामान्य मूल्य के बीच समुचित तुलना की जा सके। चूंकि निर्यात कीमत से गैर-वापसी योग्य वैट को समायोजित करने की प्राधिकारी की यह स्वीकार्य स्थिति है, इसलिए आवेदक का यह कहना है कि चीन जन. गण. के खिलाफ किसी भी पाटनरोधी जांच में साबित करने की जिम्मेदारी घरेलू उद्योग की है कि वह यह साबित करे कि निर्यात कीमत से समायोजन क्यों किया जाना चाहिए।
132. आवेदक यह समझने में विफल रहा है कि क्यों प्राधिकारी ने निर्यातकों पर वैट की वापसी के प्रभाव को स्पष्ट करने के लिए इस मामले में घरेलू उद्योग पर भार डाला है, यदि निर्यात भारत को सीधे या एक व्यापारी के माध्यम से किए जाते हैं। आवेदक का यह कहना है कि चीन जन. गण. से किसी भी उत्पादक/ निर्यातक ने वर्तमान समीक्षा में भाग नहीं लिया है और प्राधिकारी इस तथ्य के बावजूद कि उन्होंने भाग नहीं लिया है, चीन के उत्पादकों/ निर्यातकों के लिए अनावश्यक लाभ प्रदान किया जा रहा है। वर्तमान जांच में, चूंकि किसी भी चीन के उत्पादक/ निर्यातक ने घरेलू उद्योग द्वारा किए गए दावों का जवाब देने के लिए भाग नहीं लिया है, इसलिए प्राधिकारी विदेशी उत्पादकों के असहयोग के लिए घरेलू उद्योग को दंड नहीं दे सकते।
133. यदि किसी व्यापारी के माध्यम से निर्यात किए जाते हैं तो निर्यातक पर वैट वापसी के प्रभाव के संबंध में यह प्रस्तुत किया जाता है कि मूल जांच में, मै० सिनिक केमिकल्स (शंघाई) कंपनी लि० ने स्वयं ही यह स्वीकार किया है कि उन्होंने भारत को सीधे संबद्ध वस्तुओं का निर्यात किया है। अतः यदि चीन के किसी व्यापारी के माध्यम से निर्यात किया जाता है तो निर्यातक पर वैट वापसी के प्रभाव के संबंध में आवेदक से स्पष्टीकरण चाहने के लिए प्राधिकारी का कोई कारण नहीं बनता। उपरोक्त के बावजूद आवेदक का यह कहना है कि मूल जांच में सिनिक केमिकल्स (शंघाई) कंपनी लि० ने स्वयं ही गैर वापसी योग्य वैट के लिए समायोजन करने का दावा किया था और तदनुसार, प्राधिकारी ने कारखाना बाह्य निर्यात कीमत की गणना करते समय "गैर-वापसी योग्य वैट" के संबंध में उपयुक्त समायोजन किया था।
134. यह कहना है कि "व्यापार उपचार जांचों के लिए प्रचालन प्रक्रियाओं का मैनुअल" के पैरा 12.25 में, प्राधिकारी ने गैर-वापसी योग्य वैट के समायोजन की अनुमति दी है और इसे विभिन्न समायोजनों की सूची में शामिल किया गया है, जिन्हें निवल निर्यात कीमत निकालने के लिए निर्यात कीमत में समायोजित किया जाना है।
135. चीन जन. गण. के खिलाफ सभी पाटनरोधी जांचों में "गैर-वापसी योग्य वैट" के संबंध में समायोजन करने के लिए जहां कहीं भी लागू वैट दर से वापसी दर कम है तो प्राधिकारी की यही प्रथा रही है। चीन जन. गण. के खिलाफ पाटनरोधी जांचों की एक सूची, जिसमें अंतिम जांच परिणामों के संगत अंश शामिल हैं, जिनमें कि प्राधिकारी ने

“गैर-वापसी योग्य बैट” के संबंध में किए गए समायोजन भी संलग्न किया हैं। इस संबंध में, प्राधिकारी द्वारा जारी कुछ संगत जांच परिणाम इस प्रकार हैं :-

(i) चीन जन. गण. के मूल की अथवा वहां से निर्यातित 'भेजिंग टेप' के आयातों के संबंध में निर्णायक समीक्षा जांच, जिनके अंतिम जांच परिणाम दिनांक 18 जून, 2020 की अधिसूचना सं. 7/24/2019-डीजीटीआर के तहत अधिसूचित किए गए, चीन जन. गण. के मूल की अथवा वहां से निर्यातित 'सिपरो फ्लोक्सासिन हाइड्रोक्लोराइड' के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच, जिनके प्रारंभिक जांच परिणाम दिनांक 15 जून, 2020 की अधिसूचना सं. 6/36/2019-डीजीटीआर के तहत अधिसूचित किए गए, चीन जन. गण., जापान, कोरिया गणराज्य, ताइवान और वियतनाम के मूल की अथवा वहां से निर्यातित 'डिजिटल ऑफसेट प्रिंटिंग प्लेट' के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच जिनके अंतिम जांच परिणाम दिनांक 15 मई, 2020 की अधिसूचना सं. 6/7/2019-डीजीटीआर के तहत अधिसूचित किए गए। चीन जन. गण. से 'सोडियम साइट्रेट' के आयातों के संबंध में निर्णायक समीक्षा जांच जिनके अंतिम जांच परिणाम दिनांक 30 अप्रैल, 2020 की अधिसूचना सं. 7/21/2019-डीजीटीआर के तहत अधिसूचित किए गए, चीन जन. गण. वियतनाम और कोरिया गणराज्य से 'एल्यूमिनियम और जिंक कोटेड प्लेट उत्पाद' के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच जिनके अंतिम जांच परिणाम दिनांक 21 फरवरी, 2020 की अधिसूचना सं. 6/4/2019-डीजीटीआर के तहत अधिसूचित किए गए, कोरिया गणराज्य और चीन जन. गण. से 'क्लोराइड पोलिविनाइल क्लोराइड (सीपीवीसी) - कंपाउंड में आगे प्रसंस्कृत है अथवा नहीं' के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच, जिनके अंतिम जांच परिणाम दिनांक 19 फरवरी, 2020 की अधिसूचना सं. 6/3/2019-डीजीटीआर के तहत अधिसूचित किए गए।

136. उपरोक्त को देखते हुए हम गैर-वापसी योग्य बैट के लिए इसकी संगत प्रथा के अनुसार निर्यात कीमत में कमी करके उपयुक्त समायोजन करने और तदनुसार अंतिम जांच परिणामों में पाटन मार्जिन को संशोधित करने के लिए अनुरोध करते हैं।
137. प्राधिकारी ने प्रकटीकरण विवरण के पैरा 55, 56, 58, 70, 72, 61, 63, और 64 में अधिकतर विभिन्न क्षति मापदंडों को सही तरीके से लिया है। तथापि, जहां तक गैर-क्षति कीमत की गणना का संबंध है, घरेलू उद्योग की निम्नलिखित चिंताएं हैं :-
 - फार्मेट-क के क्लॉज (v) में विनिर्दिष्ट कच्ची सामग्रियों पर एन आई पी का निर्धारण करने में विचार नहीं किया गया है, जिसके कारण गैर-क्षतिकारी कीमत में एक महत्वपूर्ण कमी आई है।
 - खपत मानकों पर जांच की अवधि के लिए विचार किया गया है। जबकि सबसे उत्तम खपत मानक वर्ष 2016-17 में थे। इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के लिए गैर-क्षतिकारी कीमत में वृद्धि हुई है।
 - फार्मेट-क और घ के क्लॉज (v) में विनिर्दिष्ट यूटिलिटी पर एन आई पी का निर्धारण करने में विचार नहीं किया गया है, जिसके कारण गैर-क्षतिकारी कीमत में कमी आई है।
138. एन आई पी की गणना करते समय, प्राधिकारी ने "प्रदूषण नियंत्रण व्यय" की अनुमति नहीं दी है, जिसे अन्य निर्माण ओवरहेड के तहत शामिल किया गया है। प्रदूषण नियंत्रण व्यय कानूनी व्यय है, जो किसी संयंत्र को चलाने के लिए आवश्यक है और इन व्ययों की प्राधिकारी द्वारा सभी जांचों में एन आई पी की गणना करते समय निरंतर अनुमति दी गई है। अतः वर्तमान जांच में भी इसकी अनुमति दी जानी चाहिए।
139. प्राधिकारी अंतिम जांच परिणाम जारी करते समय एन आई पी में और साथ ही सी एन बी में उपरोक्त चूक को सही कर सकते हैं।
140. यद्यपि हम प्रकटीकरण विवरण के पैरा 119 में प्राधिकारी की टिप्पणी से सहमत हैं कि यदि मौजूदा शुल्क हटा लिए जाते हैं तो पाटन में तेजी आएगी, प्रकटीकरण विवरण के पैरा 112 में इस टिप्पणी से सहमत है कि चीन जन. गण. से संबद्ध वस्तुओं के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बावजूद चीन की आयात कीमतों में पाटन जारी रहा और संबद्ध देश से क्षतिकारी स्तर तथा आयातों की मात्रा लगभग वही रही जो संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से पहले मौजूद थी, प्रकटीकरण विवरण के पैरा 113 में इस टिप्पणी से सहमत है कि चीन जन. गण. में संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन के लिए भारी उत्पादन क्षमताएं हैं,

प्रकटीकरण विवरण के पैरा 116 में इस टिप्पणी से सहमत है कि जांच की अवधि के दौरान सकारात्मक कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री हो रही थी, प्रकटीकरण विवरण के पैरा 117 में इस टिप्पणी से सहमत है कि चीन जन. गण. के पास संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन के लिए भारी उत्पादन क्षमताएं उपलब्ध हैं, जिनका उपयोग वे भारत में अपने निर्यातों में वृद्धि करने के लिए कर सकते हैं, प्रकटीकरण विवरण के पैरा 118 में इस टिप्पणी से सहमत है कि वर्तमान मामले के तथ्य में विदेशी उत्पादक/ निर्यातक की भागीदारी न होना स्पष्ट रूप से यह दर्शाता है कि चीन जन. गण. से निर्यातकों द्वारा पाटन जारी रहने की एक स्पष्ट संभावना है, जिसमें निर्यातों में आगे और तेजी आ सकती है, जिसके कारण ऐसी स्थिति आ सकती है कि यदि मौजूदा शुल्क वापस लिए जाते हैं तो घरेलू उद्योग को अत्यधिक क्षति होगी।

141. उपरोक्त को देखते हुए, यह स्पष्ट तौर पर साबित होता है कि चीन जन. गण. से पाटन के जारी रहने की संभावना है और यदि लागू पाटनरोधी शुल्क समाप्त/ बंद नहीं किए जाते तो घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहने/ पुनरावृत्ति होने की संभावना है। यदि चीन जन. गण. से आयातित वस्तुओं पर लागू पाटनरोधी शुल्क लागू रहना बंद किया जाता है तो चीन के निर्यातक भारतीय बाजार पर कब्जा कर लेंगे जिसके कारण घरेलू उद्योग को महत्वपूर्ण क्षति होगी।
142. जहां तक गैर-वापसी योग्य वैट के समायोजन का संबंध है, हम इस बात को दोहराते हैं कि चीन के उत्पादकों को इस 13 प्रतिशत के वैट वापसी/ निर्यात वापसी के फायदे का लाभ मिलेगा और वे भारत को संबद्ध वस्तुओं का तेजी से निर्यात करेंगे।
143. यह स्पष्ट है कि लागू पाटनरोधी शुल्क समाप्त करने/ बंद करने से चीन के उत्पादकों/ निर्यातकों द्वारा पाटन में तेजी लाई जाएगी और इससे घरेलू उद्योग को महत्वपूर्ण क्षति होगी। ऐसी स्थिति में हम प्राधिकारी से नीचे दिए गए कारणों से पाटनरोधी शुल्क की मौजूदा मात्रा को जारी रखने का अनुरोध करते हैं :-
 - क. घरेलू उद्योग की यूटिलिटी लागत में गिरावट आई है, जिसके कारण कम निर्मित सामान्य मूल्य और गैर क्षतिकारी कीमतें हो रही है।
 - ख. वर्तमान जांच में चीन के उत्पादकों/ निर्यातकों का आचरण उचित नहीं है, क्योंकि चीन के उत्पादकों/ निर्यातकों की भागीदारी नहीं है, जिसके कारण प्राधिकारी को चीन उत्पादकों/ निर्यातकों द्वारा भाग न लेने के चलते तीसरे देश की निर्यात कीमत, सरप्लस क्षमताएं, वस्तु सूची इत्यादि जैसी जानकारी उपलब्ध नहीं है। तदनुसार, प्राधिकारी को निर्णायक समीक्षा जांच में पाटनरोधी शुल्क की मौजूदा मात्रा कम करके उनकी भागीदारी न होने के लिए चीन के उत्पादकों/ निर्यातकों को लाभ नहीं देना चाहिए।
 - ग. हांगकांग से आयात की जा रही संबद्ध वस्तुओं के भी वही विवरण और ब्रांड नाम है, अर्थात् सिनिलेक्स, जो कि चीन जन. गण. से आयातित वस्तुओं के हैं। इस संबंध में किसी भी भाग लेने वाले आयातक ने भी यह साबित करने के लिए कोई साक्ष्य अथवा सूचना अथवा मूलता का प्रमाणपत्र प्रदान नहीं किया है कि उनके द्वारा हांगकांग से भारत में आयात की जा रही संबद्ध वस्तुएं वास्तव में हांगकांग में उत्पादित की गई हैं। वास्तव में, हांगकांग में संबद्ध वस्तुओं के लिए कोई भी उत्पादन सुविधा नहीं है। चीन के उत्पादक/ निर्यातक केवल अपने उत्पादों को हांगकांग के जरिए भेज रहे हैं ताकि इस निर्णायक समीक्षा जांच में फायदा उठाया जा सके।
 - घ. चीन के उत्पादकों ने भारत के लिए निर्यात कीमत में जानबूझकर निर्णायक समीक्षा जांच की प्रत्याशा में जांच की अवधि के दौरान 15-20 प्रतिशत तक की वृद्धि की है, जबकि अन्य देशों के संबद्ध वस्तुओं की निर्यात कीमत में वृद्धि केवल 1-2 प्रतिशत तक की है।
144. आवेदक का प्राधिकारी से यह अनुरोध है कि चीन जन. गण. से संबद्ध वस्तुओं के आयातों पर 7.58 यू एस डॉलर/ कि. ग्रा. के पाटनरोधी शुल्क की उतनी ही मात्रा लगाई जाए और पाटनरोधी शुल्क की मात्रा में वर्तमान समीक्षा जांच में कमी न की जाए। कतिपय मामलों में निर्णायक समीक्षा जांच के संबंध में प्राधिकारी ने मूल जांच में लगाए गए पाटनरोधी शुल्क जितनी मात्रा ही लगाई है। ये इस प्रकार से हैं :-

- चीन जन. गण. के मूल की अथवा वहां से निर्यातित पार्शियली ओरिएण्टेड यार्न (पी ओ वाई) जिसके लिए अंतिम जांच परिणाम दिनांक 10 फरवरी, 2012 की अधिसूचना सं. 15/27/2010-डीजीएडी के तहत अधिसूचित किए गए।
- ईरान इस्लामिक गणराज्य के मूल की अथवा वहां से निर्यातित हेक्सा मिथाइलेन टेट्रामाइन (हेक्सामाइन), जिसके लिए अंतिम जांच परिणाम दिनांक 26 फरवरी, 2009 की अधिसूचना सं. 15/10/2017-डीजीएडी के तहत अधिसूचित किए गए।
- ताइवान और संयुक्त अरब अमीरात के मूल की अथवा वहां से निर्यातित सन/डस्ट कंट्रोल पोलिस्टर फिल्म, जिनके लिए अंतिम जांच परिणाम दिनांक 13 अगस्त, 2009 की अधिसूचना सं. 15/17/2018-डीजीएडी के तहत अधिसूचित किए गए।
- चीन जन. गण. और थाईलैंड के मूल की अथवा वहां से निर्यातित 'ग्राइंडिंग मीडिया बाल्स' (फोर्ड ग्राइंडिंग मीडिया बाल्स को छोड़कर), जिसके लिए अंतिम जांच परिणाम दिनांक 11 जून, 2018 की अधिसूचना सं. 7/7/2017-डीजीएडी के तहत अधिसूचित किए गए।
- चीन जन. गण. के मूल की अथवा वहां से निर्यातित 'शीट ग्लास', जिसके लिए अंतिम जांच परिणाम दिनांक 21 फरवरी, 2020 की अधिसूचना सं. 7/10/2019-डीजीटीआर के तहत अधिसूचित किए गए।
- चीन जन. गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित 'इलेक्ट्रॉनिक कैलकुलेटर', जिसके लिए अंतिम जांच परिणाम दिनांक 26 मार्च, 2020 की अधिसूचना सं. 7/15/2019-डीजीटीआर के तहत अधिसूचित किए गए।
- चीन जन. गण. और इंडोनेशिया के मूल के अथवा वहां से निर्यातित विस्कोस स्टेपल फाइबर (बांस फाइबर को छोड़कर), जिसके लिए अंतिम जांच परिणाम दिनांक 8 जुलाई, 2016 की अधिसूचना सं. 15/9/2015-डीजीएडी के तहत अधिसूचित किए गए।
- चीन जन. गण. के मूल की अथवा वहां से निर्यातित 'पीवीसी फ्लैक्स फिल्म', जिसके लिए अंतिम जांच परिणाम दिनांक 30 जून, 2016 की अधिसूचना सं. 15/13/2015-डीजीएडी के तहत अधिसूचित किए गए।
- चीन जन. गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित 'फ्रंट एक्सल बीम' और 'स्टीयरिंग नकल्स' जो भारी और मध्यम वाणिज्यिक वाहनों के लिए हैं, जिसके अंतिम जांच परिणाम दिनांक 11 सितम्बर, 2015 की अधिसूचना सं. 15/11/2014-डीजीएडी के तहत अधिसूचित किए गए।
- चीन जन. गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित 'डक्टाइल आयरन पाइप', जिसके लिए अंतिम जांच परिणाम दिनांक 4 सितम्बर, 2013 की अधिसूचना सं. 15/1006/2012-डीजीएडी के तहत अधिसूचित किए गए।

भारतीय पेंट एसोसिएशन और इसकी सदस्य कंपनियों की ओर से एल एंड एल द्वारा अनुरोध

145. प्रतिवादी यह नोट करते हैं कि प्रकटीकरण विवरण के पैरा 15 (क) में निर्दिष्ट प्राधिकारी ने वोक्सो (इस जांच में एक प्रतिवादी हितबद्ध पक्षकार) की इस असहमति को नोट किया है जिसमें सभी ग्रेड के विचाराधीन उत्पाद को एक समान माना गया है। तथापि, यह टिप्पणी इस संबंध में वोक्सो द्वारा किए गए अनुरोधों का पूरा प्रतिनिधित्व नहीं है। वोक्सो ने अपने दिनांक 21 जुलाई, 2020 के पृथक प्रत्यावेदन अनुरोध में कतिपय आयातित ग्रेड के भारत में निर्मित विचाराधीन उत्पाद से बेहतर होने के कारणों का उल्लेख किया गया है। इसके लिए वोक्सो ने उपयोक्ता उद्योग से इस बात का दावा करते हुए पत्र प्रदान किए हैं कि आयातित ग्रेड उत्तम हैं और घरेलू तौर पर निर्मित ग्रेड इनका मुकाबला नहीं करते। उपभोक्ता उद्योग ने यह भी दावा किया है कि घरेलू उद्योग उनके द्वारा अपेक्षित विनिर्देशनों पर विचाराधीन उत्पाद को उपलब्ध कराने में असमर्थ है, जिससे वे पाटनरोधी शुल्क के बावजूद आयातों पर भरोसा करने को मजबूर हो रहे हैं।
146. प्रतिवादी यह नोट करते हैं कि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने प्रकटीकरण विवरण के पैरा 25 में यह कहा है कि शुल्कों की समीक्षा में घरेलू उद्योग के आधार को पुनः देखने की कोई जरूरत नहीं है, क्योंकि जैसा कि निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा मूल पाटनरोधी जांच में यह निर्णय लिया गया है कि घरेलू उद्योग की स्थिति को सेस्टेट के समक्ष चुनौती नहीं दी गई है। प्रतिवादी सादर निर्दिष्ट प्राधिकारी के उपरोक्त तर्क से असहमत है और यह अनुरोध करता है कि इस प्रकार की सोच कि निर्णय पर पुनर्विचार करने की जरूरत नहीं है, क्योंकि इसे चुनौती नहीं दी गई है, तो यह बात

गलत है। ऐसी पूर्व की पाटनरोधी जांचें नहीं हैं, जिनमें कि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने मूल जांच में अपने पूर्व निर्णय को समीक्षा जांच में अपने निर्णय बदल दिया है। इस प्रकार वर्तमान मामले में भी, निर्दिष्ट प्राधिकारी को प्रतिवादी द्वारा उसके पूर्व लिखित अभ्यावेदनों में एक निर्यात उन्मुखी यूनिट (ईओयू) होने के कारण 'घरेलू उद्योग' के रूप में माने जाने के लिए घरेलू उद्योग की अपात्रता के संबंध में किए गए अनुरोधों पर विचार करना चाहिए। प्रतिवादी यह बात पुनः दोहराते हैं कि निर्दिष्ट प्राधिकारी की पूर्व की प्रथा यह साबित करती है कि उसने घरेलू उद्योग के दायरे में निर्यात पर बल देने वाले ई ओ यू को शामिल नहीं किया है। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने इंडोनेशिया से फथालिक एनहाइड्राइड के आयात के खिलाफ पाटनरोधी जांच में एक घरेलू उत्पादक (आई जी पेट्रोकेमिकल्स) को ई ओ यू होने के कारण घरेलू उद्योग के दायरे से बाहर किया था। साथ ही, चीन जन. गण. से सेफ्ट्राइएक्सोन डाइसोडियम हेमिफेफ्टाहाइड्रेड – स्टेराइल के आयात के खिलाफ पाटनरोधी जांच में, निर्दिष्ट प्राधिकारी ने यह निष्कर्ष निकाला था कि आर्किड केमिकल्स, जो 100 प्रतिशत ई ओ यू थी, एक ई ओ यू होने के गुणों के कारण घरेलू उद्योग के रूप में विचार किए जाने योग्य नहीं थी।

147. प्रतिवादी यह नोट करते हैं कि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने प्रकटीकरण विवरण के पैरा 31 में यह कहा है कि घरेलू उद्योग के गोपनीयता के दावे भारतीय पाटनरोधी नियमावली के नियम 7 के अनुसार इसकी आवश्यकता की संतुष्टि होने पर प्रदान किए गए हैं। प्रतिवादी सादर इस कथन से असहमत है। उत्पादकता, खरीद, अनुसंधान एवं विकास लागत, ऋण एवं अग्रिम संगत लागत से संबंधित आंकड़ों पर अत्यधिक गोपनीयता प्रदान की गई है। इस संबंध में चूकों को सारणीबद्ध किया गया है और दिनांक 27 मार्च, 2020 के हमारे लिखित अनुरोध में इसे विस्तार से बताया गया है।
148. प्रतिवादी यह नोट करते हैं कि प्रकटीकरण विवरण के पैरा 32 में निर्दिष्ट प्राधिकारी ने इससे स्विटजरलैंड को बाहर करने के लिए केवल चीन जन. गण. के संबंध में डाटा के साथ एक अद्यतन याचिका की जरूरत को छोड़ दिया है। प्रतिवादी इस टिप्पणी से सादर असहमत है। घरेलू उद्योग ने अपनी याचिका में यह दावा किया है कि चीन जन. गण. और स्विटजरलैंड, दोनों से क्षति की संभावना का उदाहरण है, प्रतिवादी यह नोट करते हैं कि कतिपय तर्क दोनों ही देशों से साझा क्षति के प्रभाव पर विचार करते हैं अर्थात् घरेलू उद्योग का बाजार अंश दोनों ही देशों के आयातों से प्रभावित हुआ है। इस प्रकार केवल चीन जन. गण. से संबंधित पृथक डाटा न होने के कारण 'क्षति की संभावना' का विश्लेषण व्यर्थ है, क्योंकि यह माना गया है कि स्विटजरलैंड और चीन जन. गण., दोनों से क्षति हो सकती है जबकि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने पहले ही स्विटजरलैंड को जांच शुरू करने के संबंध में अधिसूचना में संबद्ध देशों की सूची से बाहर करके इसकी संभावना को समाप्त कर दिया है। इस प्रकार से स्विटजरलैंड के संबंध में डाटा को अलग करने के लिए आवश्यक संशोधन किए बिना घरेलू उद्योग की याचिका में डाटा का उपयोग करने से वर्तमान जांच के उद्देश्य को हानि हुई है और विश्लेषण गलत हुआ है।
149. प्रतिवादी यह नोट करते हैं कि निर्दिष्ट प्राधिकारी प्रकटीकरण विवरण के पैरा 41 और 114 में निर्यात कीमत की गणना करने के संबंध में 13 प्रतिशत पर निर्यातों के लिए चीन जन. गण. में, कथित वापसी योग्य वैट कार्यक्रम के समायोजन के संबंध में घरेलू उद्योग के दावे को अस्वीकार किया है। प्रतिवादी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने इस दावे के समर्थन में कोई साक्ष्य प्रस्तुत न करके साक्ष्य सहित अपने दावों का अनिवार्य तौर पर समर्थन करने के लिए एक मूलभूत बाध्यता को पूरा नहीं किया है। इस प्रकार से, प्रतिवादी यह बात रिकार्ड में रखने की इच्छा रखता है कि यह एक ऐसे समायोजन के लिए दावे को अस्वीकार करने में निर्दिष्ट प्राधिकारी के निर्णय से सहमत है।
150. प्रतिवादी यह नोट करते हैं कि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने प्रकटीकरण विवरण के पैरा 55 में हांगकांग से हुए आयातों को चीन जन. गण. से हुए आयात माना है। ऐसा करने में, यह नोट किया गया है कि ऐसा इसलिए किया गया, क्योंकि प्रतिवादियों ने यह साबित करने के लिए कोई दस्तावेज (अर्थात् मूलता का प्रमाणपत्र, बिल्टी इत्यादि) प्रस्तुत नहीं किए कि आयात वास्तव में हांगकांग के मूल से हुए हैं और निर्यातकों द्वारा हांगकांग के जरिए चीन जन. गण. से भेजे गए हैं। हम सादर निर्दिष्ट प्राधिकारी के उपरोक्त निष्कर्ष से सहमत नहीं हैं। यह सिद्ध करने का दायित्व प्रतिवादियों का नहीं है कि आयात वास्तव में हांगकांग से आ रहे हैं और भेजे नहीं जा रहे। इसकी बजाय घरेलू उद्योग पर यह सिद्ध करने का दायित्व है कि आयात वास्तव में भेजे जा रहे हैं, इसलिए घरेलू उद्योग ने एक दावा कर दिया है। इसके साथ ही, इस मामले के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा आसानी से डी जी सी आई एंड

एस के शासकीय डाटा प्राप्त करके इसकी पुष्टि की जा सकती है, जो प्रत्येक शिपमेंट के मूलता के देश के संबंध में भी रिकार्ड रखता है। वास्तव में प्रतिवादी यह नोट करते हैं कि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने यह नोट नहीं किया है कि पैरा 55 में निष्कर्ष डी जी सी आई एंड एस के डाटा का विश्लेषण करने के बाद ही प्राप्त हुआ है। इस प्रकार साबित करने का भार प्रतिवादी पर नहीं डाला जा सकता, वह भी तब, जब घरेलू उद्योग के आरोपों की सच्चाई की पुष्टि करने के लिए शासकीय डाटा मौजूद है।

151. प्रतिवादी अतिरिक्त रूप से यह भी नोट करते हैं कि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने पैरा 56 और 58 में भी यह दावा किया है कि चीन जन. गण. से विचाराधीन उत्पादों का आयात महत्वपूर्ण रहा और पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से पूर्व के स्तर पर रहा है। इसके लिए प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाने का प्रयोजन आयातों को कम करना अथवा उसे सीमित करना नहीं है, बल्कि इसका एक उद्देश्य घरेलू उद्योग के लिए समान कारोबारी वातावरण प्रदान करना भी है, जब निर्यात सामान्य मूल्य से कम मूल्य पर आ रहे हों। उपरोक्त के बावजूद, प्रतिवादी यह बात दोहराते हैं कि आयात महत्वपूर्ण रहने संबंधी ऐसा कथन बिना प्रसंग के नहीं हो सकता। यह उल्लेखनीय है कि चीन. जन. गण. से आयातों का वर्तमान बाजार अंश भारत में विचाराधीन उत्पादन के लिए कुल मांग का अपर्याप्त 4 प्रतिशत है। उपरोक्त को देखते हुए प्रतिवादी निर्दिष्ट प्राधिकारी के इस निष्कर्ष के संबंध में अपनी असहमति दर्ज कराते हैं कि चीन. जन. गण. से आयात महत्वपूर्ण रहे।
152. प्रतिवादी यह नोट करते हैं कि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने प्रकटीकरण विवरण के पैरा 80 में यह नोट किया है कि घरेलू उद्योग की लाभप्रदता और निवेश पर प्रतिफल ('आर ओ आई') में क्षति जांच की अवधि के दौरान सकारात्मक वृद्धि की प्रवृत्ति दर्शाई गई है। इसके अलावा, यह नोट किया गया है कि निवेश पर प्रतिफल (आर ओ आई) क्षति जांच की अवधि के दौरान 4 प्रतिशत से 9 प्रतिशत के बीच रहा है, जो कि ईष्टतम स्तर से कम है। उपरोक्त प्रसंग में, प्रतिवादी यह भी दोहराते हैं कि 22 प्रतिशत आर ओ सी ई, जिस पर निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा प्रकटीकरण विवरण के पैरा 89 में विचार किया गया है, यह सभी प्रकार के विचाराधीन उत्पादों के लिए एक तय नियम के तौर पर नहीं लागू किया जा सकता, अर्थात् एफ एम सी जी उत्पादों पर मार्जिन कॉस्मेटिक्स अथवा अन्य लकजरी उत्पादों पर मार्जिन से काफी कम होगा। इस प्रकार से निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा नोट किया गया 4 प्रतिशत से 9 प्रतिशत तक का आर ओ आई पर्याप्त है और आर्गेनिक पिगमेंट उद्योग के लिए ऐतिहासिक प्रतिफल की दर के अनुसार है।
153. प्रतिवादी यह नोट करते हैं कि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने प्रकटीकरण विवरण के पैरा 83 में यह कहा है कि यू एस ए से विचाराधीन उत्पाद के लिए आयात कीमतें चीन जन. गण. से आयात की कीमतों से काफी अधिक है। प्रतिवादी सादर अनुरोध करते हैं कि यह कथन तथ्यात्मक रूप से गलत है, जैसा कि जांच की अवधि के बाद के आयात कीमत संबंधी डाटा के विश्लेषण से देखा जा सकता है। एक निर्णायक समीक्षा जांच में, जहां क्षति की पुनरावृत्ति की संभावना के आधार पर शुल्क बढ़ाया जाता है, यह आवश्यक है कि भविष्य में यह आकलन करके देखें कि क्या पाटन की पुनरावृत्ति संभव होगी और इसलिए जांच की अवधि के बाद के डाटा की जांच करना आवश्यक हो जाता है। ऐसा मै० पी टी असाहीमास केमिकल्स बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी मामले में सेस्टेट द्वारा पाया गया है, जिस पर घरेलू उद्योग ने भी भरोसा किया है। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, डी जी सी आई एंड एस से जांच की अवधि के बाद के आयात संबंधी डाटा की जांच करने पर, यह स्पष्ट हो जाता है कि विचाराधीन उत्पाद के लिए यू एस से आयातों का पहुंच मूल्य चीन जन. गण. से आयातों के पहुंच मूल्य से 46 प्रतिशत कम है। नीचे दी गई तालिका से निरंतर दो तिमाहियों अर्थात् जुलाई- सितम्बर, 2019 और अक्टूबर- दिसम्बर, 2019 के लिए जांच की अवधि के बाद के डाटा दर्ज किए गए हैं। प्रतिवादी यह नोट करते हैं कि एक निर्णायक समीक्षा जांच में अनिवार्य जांच क्षति की पुनरावृत्ति होने की संभावना की है, विशेषकर ऐसे समय जब वर्तमान में कोई क्षति नहीं हो रही हो जैसा कि वर्तमान मामले में है। अतः क्षति की पुनरावृत्ति की संभावना का आकलन करने के संदर्भ में, निर्दिष्ट प्राधिकारी का यह निष्कर्ष कि यू एस ए से कोई क्षति नहीं हुई है, जिसका कि कीमत में 40 प्रतिशत बाजार अंश है, जो चीन की कीमतों से 46 प्रतिशत कम है, ऐसा अमान्य है और इसका कोई तथ्यात्मक आधार नहीं है।
154. प्रतिवादी यह नोट करते हैं कि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने प्रकटीकरण विवरण के पैरा 113 में चीन जन. गण. में विचाराधीन उत्पाद के निर्माण के लिए सरप्लस क्षमताओं की मौजूदगी पर एक ऐसे कारक के रूप में विचार किया है जिससे क्षति की पुनरावृत्ति होने की संभावना के संबंध में एक निष्कर्ष निकाला जा सके, यह बात दोहराई जाती

है कि ऐसी स्थिति में जब घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हो रही हो तो केवल सरप्लस क्षमताएं मौजूद होने से यह सिद्ध करना पर्याप्त नहीं है कि ऐसी क्षमताएं भारतीय बाजारों में जाएगी। ऐसा इंडियन स्पिनर्स एसोसिएशन बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी मामले में सेस्टेट द्वारा पाया गया है।

155. प्रतिवादी यह नोट करते हैं कि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने प्रकटीकरण विवरण के पैरा 118 में यह कहा है कि चीन से सिनिक जैसे निर्यातकों ने जांच से बचने के लिए वर्तमान निर्णायक जांच में भाग नहीं लिया है, और यह कि इस प्रकार से भाग न लिया जाना पाटन के जारी रहने की संभावना का स्पष्ट मामला बनता है। इस संबंध में, प्रतिवादी का सानुरोध यह कहना है कि ऐसा कोई कानूनी प्रावधान अथवा तय उदाहरण नहीं है जिससे कि निर्दिष्ट प्राधिकारी को समीक्षा कार्यवाहियों में निर्यातकों के भाग न लेने के आधार पर क्षति की संभावना का निर्धारण करने का निष्कर्ष निकालने के लिए बल मिलता हो। सिनिक की भागीदारी न होने का क्षति की पुनरावृत्ति के आकलन से कोई संबंध नहीं है। इस प्रकार का आकलन जांच की अवधि तक के दौरान भारतीय निर्माता के क्षति मापदंड की जांच के आधार पर है।
156. अन्ततः प्रतिवादी यह नोट करते हैं कि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने प्रकटीकरण विवरण के खंड iv में पृष्ठ 52 पर घरेलू उद्योग के लिए एन आई पी निकालने के लिए उसके द्वारा प्रयोग किए गए तरीके की व्याख्या की है। इसके संबंध में प्रतिवादी 22 प्रतिशत आर ओ सी ई के संबंध में अपनी आपत्ति व्यक्त करता है। जैसा कि पूर्ववर्ती पैरा में कहा गया है, आर ओ सी ई को सभी प्रकार के विचाराधीन उत्पाद के लिए एक तय शुल्क नियम के रूप में प्रयोग नहीं किया जा सकता, क्योंकि यह एक उद्योग से दूसरे उद्योग तक अलग-अलग होता है। प्रत्येक पाटनरोधी जांच में एन आई पी की गणना करने के लिए इसका उपयोग करने से पूर्व संबंधित निर्माता उद्योग के लिए निवेश पर प्रतिफल की ऐतिहासिक प्रतिफल की दर का एक आकलन करना होता है।

मै० वोक्सो पिगमेंट्स एंड केमिकल्स प्रा० लि० द्वारा दायर किए गए अनुरोध

157. एक निर्णायक समीक्षा जांच में प्राधिकारी को यह देखने के लिए कि क्या ऐसे शुल्क को समाप्त किए जाने से पाटन और क्षति जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है, वे अपना निर्णय लेते समय एक राय बनाने के लिए कानूनन बाध्य है। यह स्वतः सिद्ध है कि प्राधिकारी को सबसे ताजा जानकारी और उपलब्ध डाटा अनिवार्यतः प्राप्त करना और उसकी जांच करना तथा नियमानुसार उसका मूल्यांकन करना आवश्यक है। इसी कारण से एक निर्णायक समीक्षा जांच में एक मूल जांच की तरह ही जांच की अवधि से जुड़ी कोई सुचिता नहीं होती। इस प्रकार, प्राधिकारी को जांच की अवधि के बाद सहित अब तक की सूचना और डाटा की जांच और मूल्यांकन करना चाहिए ताकि वह यह राय बना सके कि क्या ऐसे शुल्क को समाप्त करने से पाटन और क्षति के जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है। संभावना का विश्लेषण एक सार्थक तरीके से करने के लिए प्राधिकारी को अपने विश्लेषण को प्रथमतः ऐसे डाटा पर ध्यान देना चाहिए जो अधिक ताजा अवधि को कवर करता हो। वर्तमान जांच में, जांच की अवधि और वर्तमान जांच में जांच शुरू करने की तारीख करीब 6 माह की है और उसके बाद भी 7 माह से अधिक का समय बीत चुका है। इस प्रकार हमारा यह अनुरोध है कि प्राधिकारी को इस महत्वपूर्ण मामले पर समुचित ध्यान देना चाहिए और केवल दूसरी जांच और मूल्यांकन करने के बाद ही यह निर्धारित करना चाहिए कि क्या शुल्क समाप्त किए जाने से पाटन और उसके परिणामस्वरूप क्षति जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है या नहीं।
158. प्रकटीकरण विवरण के पैरा 7 की ओर ध्यान आकर्षित किया जाता है और यह कहा जाता है कि वर्तमान समीक्षा के दायरे में संबद्ध देश के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के आयातों के संबंध में पूर्व जांच के सभी पहलुओं को शामिल किया गया है। तथापि, हमारे सहित 'अन्य हितबद्ध पक्षकारों' द्वारा उठाए गए मामले का समाधान करते समय, केवल मूल जांच के पूर्व निर्णय का उल्लेख किया गया है, जिसमें उठाए गए मामलों पर पुनः ध्यान दिए बिना खुले और स्वच्छ मन से नहीं किया गया है।
159. प्रकटीकरण विवरण के पैरा झ और ज में, कार्य प्रक्रिया का उल्लेख करते समय कुछ अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दायर किए गए अनुरोधों का उल्लेख किया गया है, लेकिन आश्चर्यजनक रूप से वोक्सो के नाम का उसमें उल्लेख नहीं किया गया है। अतः हम प्राधिकारी से पुनः अनुरोध करते हैं कि वे वर्तमान मामले में दायर हमारे सभी अनुरोधों को ध्यानपूर्वक देखें और एक तर्कसंगत निर्धारण करके हमारे द्वारा उठाए गए मामलों का विधिवत समाधान करें।

160. प्रकटीकरण विवरण के पैरा 15 (क) में ऐसा गलत उल्लेख किया गया है कि 'बोक्सो को घरेलू उद्योग द्वारा निर्मित विचाराधीन उत्पाद और आयात किए गए विचाराधीन उत्पाद के बीच अंतर के बारे में जानकारी नहीं है.....।' वास्तव में बोक्सो ने इस प्वाइंट का बराबर उल्लेख किया है कि घरेलू उद्योग कतिपय विनिर्देशों के साथ संबद्ध वस्तुओं का उत्पाद करने में समर्थ नहीं है, जिससे उनके आयातों की आवश्यकता है और हमने इस तथ्य के प्रमाण के तौर पर भारतीय प्रयोक्ता उद्योग से सैंपल पत्र संलग्न करके इस संबंध में उचित साक्ष्य भी संलग्न किए हैं।
161. पैरा 25 में नियम 2 (ख) के क्षेत्र और दायरे से 'किसी ई ओ यू का विशिष्ट निष्कासन न करने' के संबंध में उल्लेख किया गया है जो 'घरेलू उद्योग' को परिभाषित करता हो लेकिन नियम का आशय बिलकुल स्पष्ट है और इसके अलावा भी ऐसे मामले हैं, जिनमें कि प्राधिकारी ने एक ई ओ यू को एक 'घरेलू उद्योग' के रूप में विचार करने से बाहर किया है।
162. पैरा 83 में, "प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि यू एस से भारत में महत्वपूर्ण मात्रा में विचाराधीन उत्पादों का आयात हो रहा है। तथापि यू एस ए से आयात की कीमत चीन जन. गण. से आयात की कीमत से काफी अधिक है (जिसके लिए पाटनरोधी शुल्क पहले से ही लागू है। इस प्रकार यह नहीं कहा जा सकता कि चीन जन. गण. के अलावा अन्य देशों से आयात होने के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हो रही है" हम सादर यह अनुरोध कर रहे हैं कि यह तथ्यात्मक रूप से गलत है जो हमारे 'लिखित अनुरोधों' के साथ संलग्न अनुलग्नक-क और ख को देखने से स्पष्ट है।
163. पैरा 84 में, यह उल्लेख किया गया है कि "घरेलू उद्योग को क्षति होने का दावा केवल घरेलू प्रचालनों के संबंध में है और उसका घरेलू उद्योग को हुई क्षति पर निर्यातों का कोई प्रभाव नहीं है।" लेकिन घरेलू उद्योग इस तथ्य को प्रकट करने में विफल रहा है कि उसने प्रचलित घरेलू कीमत की तुलना में काफी कम कीमतों पर संबद्ध वस्तुओं का महत्वपूर्ण मात्रा में निर्यात किया है, जिससे स्वयं के कारण क्षति होने की स्थिति उत्पन्न हुई है।
164. प्राधिकारी को यू एस से हुए संबद्ध वस्तुओं के आयातों के 'पहुंच मूल्य' की एन आई पी के साथ भी तुलना करनी चाहिए और घरेलू उद्योग को वास्तव में क्षति होने के संबंध में सच्चाई को जानना चाहिए। यहां यह कहना जरूरी नहीं है कि यह स्पष्ट होगा कि यू एस से संबद्ध वस्तुओं का भारत में पहुंच मूल्य एन आई पी से काफी कम है। यह महत्वपूर्ण है कि यू एस से हुए इन आयातों का भारत में पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की एन आई पी से काफी कम है। इसके अलावा, चूंकि संबद्ध वस्तुओं को पहुंच मूल्य की घरेलू उद्योग को परवाह नहीं है, इसलिए यह मान लेना चाहिए कि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं का आयात यू एस के समान कीमतों/ मूल्यों पर होने से घरेलू उद्योग को क्षति होने की संभावना नहीं है। स्पष्ट रूप से घरेलू उद्योग पाटनरोधी आवेदन के लिए मनमर्जी के स्रोत देख रहा है। तथापि, हम सादर अनुरोध करते हैं कि इसकी अनुमति नहीं दी जानी चाहिए, क्योंकि यह न केवल भेद भाव होगा बल्कि डब्ल्यू टी ओ के मूल सिद्धांतों के खिलाफ भी होगा।
165. हम घरेलू उद्योग द्वारा किए गए उक्त दावों का खंडन करते हैं, क्योंकि ऐसे दावों को करने से पूर्व, उसे निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर देना होगा। वह क्यों भारत में प्रचलित घरेलू कीमत से कम कीमतों पर निर्यात कर रहा है। यह संबद्ध देश के खिलाफ यू एस से तुलनात्मक/ कम कीमत पर भारी मात्रा में आयात करके प्रतिकूल प्रभाव क्यों डाल रहा है ? क्या यह इच्छापूर्वक स्रोत का चयन करना डब्ल्यू टी ओ के तहत अनुमत है ? निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा बोक्सो पिगमेंट एंड केमिकल्स प्रा० लि० मुंबई की ओर से जारी प्रकटीकरण विवरण पर निर्णायक समीक्षा डी पी पी रेड 254 पर टिप्पणियां। वह अपनी एन आई पी और अपने एन एस आर की तुलना में यू एस से संबद्ध वस्तुओं के कम पहुंच मूल्य के संबंध में अब तक चुप क्यों रहा ? क्या यह सच नहीं है कि कीमत का दबाव, यदि कोई है, तो वह यू एस से कम कीमत के आयातों की भारी मात्रा मौजूद होने के कारण से है ?
166. कारणात्मक संबंध की जांच : कानूनी प्रावधान यह है कि यह दर्शाया जाए कि पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को पाटन और उसके कारण क्षति के प्रभाव पड़ने की संभावना है। तथापि, घरेलू उद्योग को पाटित आयातों और क्षति के बीच के इस कारणात्मक संबंध को प्रदर्शित करना चाहिए और यह प्राधिकारियों के समक्ष सभी संगत साक्ष्यों की जांच के आधार पर होना चाहिए। प्राधिकारी पाटित आयातों के अलावा अन्य किन्हीं ज्ञात कारकों की जांच करने के लिए बाध्य है, जिससे कि घरेलू उद्योग को क्षति होने की संभावना है और इन कारकों के कारण हुई क्षति को

पाटित आयातों पर न डाला जाए। इन कुछ कारकों में, जो विशेष तौर पर उल्लिखित किए गए हैं, पाटित कीमतों पर किए गए आयातों की मात्रा और कीमत, मांग में संकुचन अथवा खपत की पद्धति में परिवर्तन, व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रक्रिया और विदेशी व घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा, प्रौद्योगिकी में बदलाव तथा निर्यात निष्पादन और घरेलू उद्योग की उत्पादकता शामिल है।

167. यह स्वतः सिद्ध है कि संबद्ध वस्तुओं के पहुंच मूल्य और संबद्ध वस्तुओं की प्रचलित घरेलू कीमत के बीच एक पारदर्शी तुलना ही की जा सकती है। चूंकि घरेलू उद्योग संबद्ध वस्तुओं का एक मात्र उत्पादक है, जहां तक चीन से किसी प्रतिस्पर्धा का संबंध है, वह बिना किसी समस्या के गैर-क्षतिकारी कीमत पर अपना माल बेचने में समर्थ होना चाहिए। यदि वह ऐसा नहीं कर पाता तो प्राथमिक रूप से यह यू एस से संबद्ध वस्तुओं के आयातों की मौजूदगी के कारण से है, क्योंकि घरेलू उद्योग ने उनके खिलाफ कोई कार्रवाई करना शुरू नहीं की है, जिसका अर्थ है कि उसे क्षति नहीं हो रही है और इन कीमतों पर संबद्ध वस्तुओं के आयातों से उसे क्षति होने की भी संभावना नहीं है।

प्राधिकरण द्वारा परीक्षा

168. प्राधिकरण नोट करता है कि इच्छुक पार्टियों को 100% ईओयू को डीआई का हिस्सा नहीं मानने के लिए प्रस्तुत करना है। प्राधिकरण का मानना है कि चूंकि ईओयू डोमेस्टिक टैरिफ एरिया (डीटीए) का हिस्सा है, इसलिए इसे घरेलू बाजार में इसके द्वारा की गई बिक्री की सीमा तक घरेलू उद्योग का हिस्सा माना जाता है, जैसा कि पिछले मामलों में माना गया है। ईटीए डीटीए में होने के कारण, गैर ईओयू घरेलू निर्माता के रूप में एक ही पायदान पर है।
169. प्राधिकरण डीआई और इच्छुक पार्टियों को वैट पर प्रस्तुत करने पर ध्यान देता है। चूंकि किसी भी निर्माता / निर्यातक ने डीआई के स्पष्टीकरण और उत्पादकों / निर्यातकों के गैर-सहयोग को ध्यान में रखते हुए सहयोग नहीं किया है, इसलिए प्राधिकरण ने पूर्व-कारखाने के निर्यात मूल्य को गैर-वापसी योग्य वैट के साथ समायोजित किया है।
170. प्राधिकरण नोट करता है कि घरेलू उद्योग के सामानों को विचाराधीन उत्पाद के समान नहीं होने के बारे में, उपयोगकर्ताओं द्वारा उनके मामले को स्थापित करने के लिए प्रदान किए गए किसी भी तकनीकी विनिर्देश का कोई सबूत नहीं है। आगे एसएसआर होने के नाते, प्राधिकरण ने पीयूसी का दायरा नहीं बढ़ाया है।

निष्कर्ष

171. जांच में किए गए सबमिशन के संबंध में, पोस्ट खुलासे की टिप्पणियां और उपलब्ध तथ्य, प्राधिकरण का निष्कर्ष है कि:
- क। विषय देश से निर्यात किए गए विषय वस्तु अपने सामान्य मूल्य से नीचे की कीमतों पर हैं, इस प्रकार डंपिंग के परिणामस्वरूप।
 - ख। आयात बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों को कम कर रहे हैं।
 - ग। विषय देश से विचाराधीन उत्पाद के आयात के संबंध में डंपिंग मार्जिन और चोट मार्जिन सकारात्मक हैं।
 - घ। डंपिंग रोधी शुल्क को समाप्त करने की स्थिति में, अंडरकटिंग जारी रह सकती है क्योंकि विषय देश में उत्पादकों / निर्यातकों के पास महत्वपूर्ण क्षमताएं हैं और जो आयात किए गए हैं और जो एंडी माप के अस्तित्व के बावजूद डंप और हानिकारक हैं, समाप्ति की स्थिति में वृद्धि की संभावना है एंटी-डंपिंग ड्यूटी। इसलिए घरेलू उद्योग का प्रदर्शन एंटी-डंपिंग ड्यूटी के समाप्त होने की स्थिति में खराब होने की संभावना है।
 - इ। इस प्रकार, प्राधिकरण, घरेलू उद्योग की संभावित चोट को दूर करने के लिए, विषय वस्तु के आयात पर विषय वस्तु के आयात पर निश्चित ए डी डी की निरंतरता की सिफारिश करना आवश्यक समझता है।

अनुशंसाएँ

172. ऊपर के रूप में निष्कर्ष निकाला गया, प्राधिकरण का विचार है कि एंटीडम्पिंग माप को नीचे दी गई तालिका में निर्दिष्ट के रूप में बढ़ाया जाना आवश्यक है।

173. प्राधिकरण ने घरेलू उद्योग के अनुरोध को वर्तमान एसएसआर जांच में भी मौजूदा ए डी डी के समान स्तर पर जारी रखने का अनुरोध किया है। प्राधिकरण नोट करता है कि पी ओ आई के दौरान चोट की सीमा भविष्य के एंटी-डंपिंग उपाय के माध्यम से कम की जानी चाहिए। भविष्य में डंपिंग या चोट बढ़ने के मामले में, डीआई हमेशा एक समीक्षा दर्ज कर सकता है और एंटी-डंपिंग झूटी में उचित संशोधन की तलाश कर सकता है। तदनुसार, प्राधिकरण वर्तमान एसएसआर जांच में पीओआई के दौरान मूल्यांकन के अनुसार डीआई को डंपिंग और परिणामी चोट की मात्रा के लिए, कम झूटी नियम के प्रावधानों को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त एंटी-डंपिंग झूटी की सिफारिश कर रहा है।

174. कम शुल्क नियम के संबंध में, प्राधिकरण डंपिंग के मार्जिन और चोट के मार्जिन के कम के बराबर एंटी-डंपिंग झूटी लगाने की सिफारिश करता है, ताकि घरेलू उद्योग को चोट को हटाया जा सके। तदनुसार, कॉलम नं 7 में इंगित राशि के बराबर एंटी-डंपिंग झूटी। नीचे दी गई तालिका में से 7 को विषय वस्तु के आयात पर केंद्र सरकार द्वारा लगाए जाने की सिफारिश की गई है, जो विषय देश से उत्पन्न या निर्यात किया जाता है।

एस	हेडिंग / सब-हेडिंग	माल का विवरण	देश का मूल	देश निर्यात	निर्माता	शुल्क राशि	मुद्रा	इकाई
1	2	3	4	5	6	7	8	9
2	32041739	डिकेटोपाइरोलो पाइरोल पिग्मेंट रेड 254 (डीपीपी 254)	चीन पीआर	चीन पीआर	कोई भी	1.31	अमेरिकी डॉलर\$	किलोग्राम
3	32041739	डिकेटोपाइरोलो पाइरोल पिग्मेंट रेड 254 (डीपीपी 254)	चीन पीआर	चीन पीआर के अलावा कोई भी देश	कोई भी	1.31	अमेरिकी डॉलर\$	किलोग्राम
4	32041739	डिकेटोपाइरोलो पाइरोल पिग्मेंट रेड 254 (डीपीपी 254)	चीन पीआर के अलावा कोई भी देश	चीन पीआर	कोई भी	1.31	अमेरिकी डॉलर\$	किलोग्राम

आगे की कार्य प्रक्रिया

175. इन निष्कर्षों से उत्पन्न होने वाली केंद्र सरकार के आदेश के खिलाफ एक अपील सीमा शुल्क, अधिनियम, 1975 के संबंधित प्रावधानों के अनुसार सीमा शुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष प्रस्तुत होगी।

बिद्युत बिहारी स्वैन, विशेष सचिव एवं निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY
(Department of Commerce)
(DIRECTORATE GENERAL OF TRADE REMEDIES)
NOTIFICATION
(Final Findings)

New Delhi, the 8th September, 2020

Case No. ADD-SSR 15/2019

Subject : Sunset Review investigation concerning anti-dumping duty on imports of ‘Diketopyrrolo Pyrrole Pigment Red 254 (DPP Red 254)’ originating in or exported from China PR.

No. 7/27/2019 - DGTR: Having regard to the Customs Tariff Act 1975, as amended from time to time (hereinafter also referred to as the ‘Act’) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules 1995, as amended from time to time (hereinafter also referred to as ‘the Rules’ or ‘AD Rules’) thereof;

A. BACKGROUND OF THE CASE

1. The Designated Authority (hereinafter also referred as the ‘Authority’) initiated an anti-dumping investigation on imports of “DPP Red 254” (hereinafter also referred as the ‘subject goods’ or ‘product under consideration’ or ‘PUC’), originating in or exported from China PR and Switzerland vide notification No. 14/8/2014- DGAD dated 20th June 2014. The Authority thereafter notified the Final Findings No. 14/8/2014-DGAD dated 19th June 2015, recommending for imposition of anti-dumping duty against imports of the subject goods from China PR and Switzerland. Definitive anti-dumping duty was imposed by Ministry of Finance vide Customs Notification No. 41/2015-Customs (ADD) dated 17th August 2015 for five years and the same is in force.
2. In terms of Section 9A (5) of the Act, anti-dumping duty imposed shall unless revoked earlier, cease to have effect on expiry of five years from the date of such imposition and the Authority is required to review, whether the expiry of duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury. In accordance with the above, the Authority is required to review, on the basis of a duly substantiated request made by or on behalf of the DI, as to whether the expiry of duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury.
3. Rule 23(1B) of the Rules provides as follows:
“...any definitive anti-dumping duty levied under the Act, shall be effective for a period not exceeding five years from the date of its imposition, unless the Designated Authority comes to a conclusion, on a review initiated before that period on its own initiative or upon a duly substantiated request made by or on behalf of the domestic industry within a reasonable period of time prior to the expiry of that period, that the expiry of the said anti-dumping duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury to the domestic industry.”
4. M/s. Heubach Colour Private Limited (hereinafter referred to as ‘Applicant’ or ‘Domestic Industry’ or ‘DI’) filed an application on behalf of the domestic industry before the Authority, in accordance with the Act and the Rules alleging likelihood of continuation or recurrence of dumping of the subject goods, originating in or exported from China PR and Switzerland and consequent injury to the domestic industry and have requested for review and continuation of the present anti-dumping duties, applicable on the imports of the subject goods, originating in or exported from China PR and Switzerland, for another five years.
5. In view of the said application with prima facie evidence of likelihood of dumping and injury filed on behalf of the DI and in accordance with Section 9A(5) of the Act, read with Rule 23 of the Rules, the Authority initiated the Sunset Review Investigation vide Notification No.7/27/2019-DGTR dated 18th December 2019, published in the Gazette of India, Extraordinary, to review the need for continued imposition of ADD in respect of the Subject Goods, originating in or exported from China PR (hereinafter referred to as ‘subject country’) and to examine whether the expiry of the said duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury to the DI.

6. The countries involved in the original investigation were China PR and Switzerland. However, for the purpose of this current sunset review investigation, the Authority initiated the investigation only against China PR, since prima facie analysis of information submitted by the Applicant did not show likelihood of dumping from Switzerland. Accordingly, China PR is the subject country for this sunset review.
7. The scope of the present review covers all aspects of the previous investigation concerning imports of the subject goods, originating in or exported from the subject country.

B. PROCEDURE

8. The scope of the present review covers all aspects of the Final Finding Notification No. 14/8/2014-DGAD dated 19th June 2015 which had recommended imposition of ADD on imports of subject goods originating in or exported from China PR and Switzerland.
9. The procedure, as described herein below, has been followed:
 - a. The Authority *vide* Notification No. 7/27/2019-DGTR dated 18th December 2019 published a notice in the Gazette of India, Extraordinary, initiating sunset review anti-dumping investigation against imports of the subject goods from the subject country.
 - b. The Embassy of the Subject Country in New Delhi was informed about the initiation of the Sunset Review investigation in accordance with Rule 6(2) along with the copy of the initiation notification and non-confidential version of the application.
 - c. The Authority forwarded copies of the notification to the known producers / exporters in the Subject Country (whose names and addresses were made available to the Authority by the Applicant) and provided an opportunity to make their views known in writing within thirty days from the date of the letter in accordance with Rule 6(2) and Rule 6(4) of the Rules.
 - d. The Authority forwarded a copy of the public notice to all the known importers and users association of the subject goods in India and advised them to make their views in writing within thirty days from the date of issue of the letter.
 - e. The Authority sent questionnaires to elicit relevant information to the following known exporters of subject goods in the subject country in accordance with Rule 6(4) of the Rules:
 - (i) CINIC Chemicals (Shanghai) Co. Ltd.
 - (ii) Shuangle Pigment Taixing Co. Ltd.
 - (iii) Shenyang Baiao Chemical Co. Ltd.
 - (iv) Nantong Zhengyan New Materials Technology
 - (v) Foshan Shunde Baost Pigment Co Ltd.
 - f. No producer/exporter from China PR has participated and filed the questionnaire response before the Authority in the present sunset review investigation.
 - g. Questionnaires were sent to the following known importers/users of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4) of the Rules:
 - (i) Nippon Paint (India) Pvt. Ltd.
 - (ii) The Indian Paint Association
 - (iii) Kansai Nerolac Paints Ltd.
 - (iv) Akzo Nobel India Limited
 - (v) Asian Paints Limited
 - (vi) Huber Group India
 - (vii) Voxco Pigments and Chemicals Pvt. Ltd.
 - (viii) Berger Paints India Limited

- (ix) PPG Asian Paints Pvt. Ltd.
 - (x) Soujanya Color Pvt. Ltd.
 - (xi) Red tone Industries
 - (xii) Parson Enterprises
- h. M/s. Berger Paints India Limited, M/s. Kansai Nerolac Paints, M/s. Voxco Pigments and Chemicals Private Limited have filed Importer/User Questionnaire response in the present investigation.
 - i. M/s Parsons Enterprises has also filed their response. All their imports were from USA and none of their imports were from China, therefore, they mentioned in their response that they are not in a position to assist the Designated Authority towards fruitful investigation of this sunset review.
 - j. L&L Partners Law Offices on behalf of Indian Paint Association and its member companies also made submissions during the course of the investigation which have been incorporated and duly addressed in these final findings.
 - k. The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by all interested parties. A list of all interested parties was uploaded on DGTR's website along with the request therein to email the NCV of their written submissions to all other interested parties since the public file was not accessible due to ongoing global pandemic.
 - l. The Authority accepted the confidentiality claims, wherever warranted after due examination and such information has been considered confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non-confidential version of the confidential information to all other interested parties via email.
 - m. Further information was sought from the Applicant and other interested parties to the extent deemed necessary. Verification of the data provided by domestic industry was conducted to the extent considered necessary for the purpose of present investigation.
 - n. Investigation was carried on for the period 1st April 2018 – 30th June 2019 (15 months) (hereinafter referred to as the 'period of investigation' or 'POI') with injury analysis covering the period April 2015 – March 2016, April 2016 – March 2017, April 2017 – March 2018 and the POI.
 - o. Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to provide details of imports of subject goods for the past three years, and the period of investigation, and the said information obtained from DGCI&S has been adopted for the purpose of the present investigation.
 - p. The Authority has examined the information furnished by the domestic industry to the extent possible on the basis of guidelines laid down in Annexure III of the Rules to work out the cost of production and the non-injurious price of the subject goods.
 - q. In accordance with Rule 6(6) of the Rules, the Authority provided opportunity to all interested parties to present their views orally in the oral hearing held on 9th July, 2020 which was attended by various parties. All the parties who presented their views in the oral hearing were requested to file written submissions of these views, in order to enable opposing interested parties to file rejoinders thereafter.
 - r. The submissions made by the interested parties during the course of this investigation, wherever found relevant, have been addressed by the Authority, in these final findings.
 - s. Wherever an interested party has refused access to or has otherwise not provided necessary information during the course of investigation, or has significantly impeded the investigation, the Authority has considered such interested parties as non-cooperative and recorded these final findings on the basis of the facts available.

- t. A Disclosure Statement was issued on 24.7.2020 containing essential facts under consideration of the Designated Authority, giving time up to 29.7.2020 to furnish comments, if any, on Disclosure Statement. The Authority has considered post disclosure comments received from interested parties appropriately.
- u. “***” in these final findings represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.
- v. The exchange rate for the POI has been taken by the Authority for the subject investigation as 1 US\$ = Rs.70.63.

C. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE

- 10. The product under consideration in the present investigation is “Diketopyrrolo Pyrrole Pigment Red 254”(“DPP Red 254”). DPP Red 254 is a highly saturated medium shade red pigment with good hiding power, excellent fastness to organic solvent and outstanding light and weather fastness. The pigments are synthetic organic colors which retain their crystalline or particulate form throughout the application process. DPP Red 254 is having a brilliant shade, high color strength, opacity and saturation. The chemical name of DPP Red 254 is 3, 6-bis-(4chlorophenyl)-2, 5-dihydro pyrrolo (3, 4- c) pyrrole ,1,4 dione. The molecular formula of DPP 254 is C₁₈H₁₀Cl₂N₂O₂. The color index number of DPP Red 254 is 56110 and chemical abstract number is 84632-65-5.
- 11. DPP Red 254 may be manufactured in many different shades or variants. All variants and shades of DPP Red 254 are covered within the scope of the product under consideration. It may be sold in crude or finished forms. The product scope includes crude pigment in any form (e.g. dry powder, paste, wet cake, etc.) and finished pigment in any form; examples include press cake, dry color, pigment blends, pigment dispersions.
- 12. DPP Red 254 is widely used as a high-performance pigment in waterborne paints, air drying alkyds, stoving enamels, acid curing systems, amine curing epoxies, isocyanate cured systems, power coatings, etc. DPP Red 254 is also used in automotive and industrial paint applications. It is used to obtain metallic effect finishes and for formulation of new saturated metallic shades. It is used in plastic applications especially in polyolefin's, PVC and PS where they offer excellent all-round properties and outstanding heat resistance. Other uses include transportation crates, caps, blow molded containers and films. DPP Red 254 is also used in making warp-free formulations for injection molded HDPE.
- 13. The subject goods are classifiable under Chapter 32 of the Custom Tariff Act, 1975 under tariff item 32041739. DPP Red 254 is also being imported under other sub-headings such as 32041111, 32041630, 32041711, 32041719, 32041720, 32041790, 32041973, 32041984, 32049000, 32061110, and 32064990.

C.1 Submissions made by the Domestic Industry

- 14. The submissions made by the domestic industry with regard to product under consideration and like article and considered relevant by the Authority are as follows:
 - a. The product description is the same as was decided by the Authority in the original investigation.
 - b. The product under consideration is ‘Diketopyrrolo Pyrrole Pigment Red 254’. DPP Red 254 is a highly saturated medium shade red pigment with good hiding power, excellent fastness to organic solvent and outstanding light and weather fastness. The pigments are synthetic organic colours which retain their crystalline or particulate form throughout the application process. DPP Red 254 is having a brilliant shade, high color strength, opacity and saturation.
 - c. The present investigation is a sunset review investigation and the PUC remains the same as defined in the previously conducted investigation as no significant developments have taken place over the period.
 - d. The chemical name of DPP Red 254 is 3, 6-bis-(4-chlorophenyl)-2, 5-dihydro pyrrolo (3, 4-c) pyrrole ,1,4 dione. The molecular formula of DPP 254 is C₁₈H₁₀Cl₂N₂O₂. The color index number of DPP Red 254 is 56110 and chemical abstract number is 84632-65-5.

- e. DPP Red 254 may be manufactured in many different shades or variants. All variants and shades of DPP Red 254 are covered within the scope of the product under consideration. It may be sold in crude or finished forms. The product scope includes crude pigment in any form (e.g dry powder, paste, wet cake, etc.) and finished pigment in any form (e.g. press cake, dry color, pigment blends, pigment dispersions, etc.).
- f. The subject goods are classifiable under Chapter 32 of the Custom Tariff Act, 1975 under tariff item 32041739. Other Tariff Headings under which DPP Red 254 have been imported are 3204 1719, 3204 1720, 3204 1711 and 3204 1740. However, custom classification is indicative only and in no way binding upon the scope of this investigation.
- g. There are no differences in quality, output or performance of the subject goods imported into India from the subject country and the goods manufactured by the Applicant. DPP Red 254 produced by the domestic producer and imported from China PR are comparable in all relevant parameters such as physical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, etc. The domestic product and the imported product are being used interchangeably by Indian consumers.

C.2. Submissions made by other interested parties

15. The submissions made by other interested parties with regard to product under consideration and like article, and considered relevant by the Authority, are as follows:
 - a. VOXCO has stated that the domestic industry is not able to produce the subject goods of certain specifications that some of the User industry wants. Many end customers prefer using the imported PUC in spite of the prices being higher after the anti-dumping duty was levied. The PUC is still being imported in India which confirms that quality is different and accordingly, the actual end users do not want to replace the imported product with the domestic product in their formulation.

C.3. Examination by the Authority

16. The PUC in the present sunset review investigation is “Diketopyrrolo Pyrrole Pigment Red 254”. This being a sunset review investigation, the scope of the PUC remains the same as that in the original investigation. The PUC in the original investigation was defined as under:

“The product under consideration in the present investigation is “Diketopyrrolo pyrrole Pigment Red 254” (herein after referred as “DPP Red 254” or “subject goods” or “product concerned”). DPP Red 254 is a highly saturated medium shade red pigment with good hiding power, excellent fastness to organic solvent and outstanding light and weather fastness. The pigments are synthetic organic colors which retain their crystalline or particulate form throughout the application process. DPP Red 254 is having a brilliant shade, high color strength, opacity and saturation. The chemical name of DPP Red 254 is 3, 6-bis-(4-chlorophenyl)-2, 5-dihydro pyrrolo (3, 4- c) pyrrole ,1,4 dione. The molecular formula of DPP Red 254 is C₁₈H₁₀Cl₂N₂O₂. The color index number of DPP Red 254 is 56110 and chemical abstract number is 84632-65-5.

DPP Red 254 may be manufactured in many different shades or variants. All variants and shades of DPP Red 254 are covered within the scope of the product under consideration. It may be sold in crude or finished forms. The product scope includes crude pigment in any form (e.g. dry powder, paste, wet cake, etc.) and finished pigment in any form; examples include press cake, dry color, pigment blends, pigment dispersions.

DPP Red 254 is widely used as a high performance pigment in waterborne paints, air drying alkyds, stoving enamels, acid curing systems, amine curing epoxies, isocyanate cured systems, power coatings, etc. DPP Red 254 is also used in automotive and industrial paint applications. It is used to obtain metallic effect finishes and for formulation of new saturated metallic shades. It is used in plastic applications especially in polyolefin's, PVC and PS where they offer excellent all round properties and outstanding heat resistance. Other uses include transportation crates, caps, blow molded containers and films. DPP Red 254 is also used in making warp-free formulations for injection molded HDPE.

The subject goods are classifiable under Chapter 32 of the Custom Tariff Act, 1975 under tariff item 32041739. DPP Red 254 is also being imported under other sub-headings such as 32041111, 32041630, 32041711, 32041719, 32041720, 32041790, 32041973, 32041984, 32049000, 32061110, and 32064990. However, the customs classification is indicative only and in no way binding on the scope of this investigation.”

17. Rule 2 (d) of the Rules relating to the definition of “like article” specifies that “like article” means an article which is identical or alike in all respects to the article under investigation for being dumped in India or in the absence of such article, another article which although not alike in all respects, has characteristics closely resembling those of the articles under investigation.
18. From the above definition of the term “like article”, it is clear that the like article has to be identical or alike in all respects to the article under investigation. The scope of the term like article shall also include those articles having closely resembling characteristics to those under investigation in the absence of articles identical or alike in all respects.
19. The Authority notes that regarding the Domestic Industry’s goods not being a like Article to PUC, there is no evidence of any technical specifications provided by the users to establish their case. Further being a SSR, the Authority has not enlarged the scope of PUC.
20. On the basis of information on record, the Authority holds that there is no known difference in product under consideration exported from subject country and the product produced by the Indian domestic industry. Product under consideration produced by the Indian domestic industry is comparable to the imported subject product in terms of characteristics such as physical & chemical characteristics, functions & uses, product specifications, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable. The consumers are using the two interchangeably.
21. Thus, the Authority holds that product produced by the applicant domestic industry is like article to the subject product under consideration imported from the subject country in accordance with the Rules.

D. SCOPE OF DOMESTIC INDUSTRY & STANDING

D.1. Submissions made by the Domestic industry

22. Following submissions have been made by the domestic industry with regard to scope and standing of the domestic industry:

- a. The present application has been filed by M/s. Heubach Colour Private Limited. The Applicant is neither related to an importer in India nor exporter from subject country, nor has the Applicant imported the product under consideration. The Applicant is the sole manufacturer of the subject goods in India. The Applicant commands 100% of the total domestic production of subject goods in India. The Applicant, therefore, satisfies the requirement of standing and constitutes domestic industry within the meaning of the Rules.
- b. Applicant submits that in terms of definition of domestic industry under Rule 2(b) of the AD Rules, there is no explicit exclusion of EOUs from the scope of domestic industry. Apart from the original investigation on imports of subject goods, the Authority in its final findings in a number of investigations has held that an EOU is eligible to be a domestic industry under Rules 2(b) and 5(3) of the AD Rules. The Authority in the following cases has considered EOUs as domestic industry under Rules 2(b) and 5(3) of the AD Rules:
 - (i) Anti-dumping investigation on Solar Cells from Malaysia, China PR, Chinese Taipei and USA, Final Findings notified vide Notification No. 14/5/2012-DGAD dated 22 May 2014;
 - (ii) Anti-dumping investigation on Vitamin-A Palmitate from China PR and Switzerland, Sunset Review Final Findings notified vide Notification F. No. 15/07/2011-DGAD dated 21 August 2013;
 - (iii) Anti-dumping investigation on Alloy Road Wheels from China PR, Korea RP and Thailand, Final Findings notified vide Notification No. 14/7/2012-DGAD dated 9 June 2014;

- (iv) Anti-dumping investigation on Polypropylene from Oman, Saudi Arabia and Singapore, Final Findings notified vide Notification No. 14/5/2009-DGAD dated 23 August 2010;
- (v) Anti-dumping investigation on Compact Discs-Recordable (CD-Rs) from China PR, Hong Kong, Singapore and Chinese Taipei notified vide Notification No. 14/15/2005-DGAD dated 2 April 2007;
- (vi) Anti-dumping investigation on Digital Versatile Discs-Recordable (DVD-R and DVD-RW) from China PR, Hong Kong and Chinese Taipei notified vide Notification No. 14/17/2007-DGAD dated 19th November 2008;
- (vii) Anti-dumping investigation on Compact Disc-Recordable (CD-R) from Iran, Malaysia, Korea RP, Thailand, UAE and Vietnam notified vide Notification No. 14/9/2007-DGAD dated 6 March 2009.

The above final findings indicate that the Authority has earlier accepted EOUs to qualify as domestic industry under Rules 2(b) and 5(3) of the AD Rules. Even in *Safeguard investigation on imports of Solar Cells whether or not assembled in modules or panels into India*, the Authority held that an EOU is eligible to be a domestic industry. Thus, mere fact that the activity is carried out in an EOU facility does not adversely affect the status of the Applicant as “domestic industry”.

- c. As regards the cases mentioned by other interested party, Applicant submitted that in *AD investigation on imports of Phthalic Anhydride*, M/s. IG Petrochemicals (100% EOU) was neither an Applicant nor supporter. Thus, issue of eligibility of M/s. IG Petrochemicals as DI was not dealt by the Authority in its finding.
- d. With respect to the other anti-dumping investigation on imports of *Ceftriaxone Disodium Hemiheptahydrate- Sterile* mentioned by other interested party, Applicant submitted that M/s. Orchid Chemicals (100% EOU) never filed an application for initiation of the said anti-dumping investigation and never participated during the course of the entire investigation. Further, during the course of the investigation when the Designated Authority requested information from M/s. Orchid Chemicals, it was found that M/s. Orchid Chemicals did not have sales in the domestic market. Therefore, it is obvious that an entity which neither filed the application before the Designated Authority nor participated in the investigation and also did not have domestic sales would not be considered as domestic industry under the Rules. Accordingly, the contentions raised by the opposing interested parties are baseless and devoid of merit.

D.2. Submissions made by other interested parties

- 23. The submissions made by various interested parties with regard to scope of domestic industry & standing are as follows:
 - a. The applicant is a 100% Export Oriented Unit (‘EOU’) and is not eligible to be treated as a domestic industry under the present investigation.
 - b. The other interested parties have acknowledged that the Applicant was considered as part of the DI in the original investigation. However, it is submitted that the DA has erred in its interpretation of Rule 2(b) and 5(3) of the AD Rules as the applicant does not qualify the threshold requirements to constitute DI.
 - c. It is submitted that the purpose of an anti-dumping duty is to eliminate unfair trade in the domestic market, occurring on account of dumping which is leading to injury to the DI. But this purpose gets defeated when the DI is an EOU since EOUs are not primarily meant for the domestic market but are meant for the export market and therefore, they do not compete with the imported goods in the domestic market. In this regard, attention of the Authority was drawn to Sunset Review Investigation concerning imports of Vitamin E originating or exported from China PR and para 10 of the CESTAT Judgment in the matter of Indian Refractory Makers Association v. Designated Authority, 2000(119) ELT319.

- d. It is submitted that the prime focus of an EOU is to cater the export market and the same is very much evident from the provisions provided under the law regarding the functioning of an EOU and its orientation.
- e. The past practice of the Authority establishes that it has in the past not included EOUs with an export focus within the scope of the DI. The Authority, in Anti-dumping investigation against import of Phthalic Anhydride from Indonesia, had noted that one of the domestic producers was IG Petrochemicals which was not included within the scope of the domestic industry as it was an EOU. Also, in Anti-dumping investigation against import of Ceftriaxone Disodium Hemiheptahydrate-Sterile from China PR, the Authority has concluded that Orchid Chemicals, which was a 100% EOU, was not fit to be considered as DI on account of its characterization as an EOU.
- f. The provisions of foreign trade policy make it abundantly clear that an EOU unit focuses its production and sales for overseas markets and is not set up to cater to the domestic need.

D.3. Examination by the Authority

24. Rule 2 (b) of the Rules defines domestic industry as under:

“(b) “domestic industry” means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in such case the term ‘domestic industry’ may be construed as referring to the rest of the producers”.

25. The present sunset review application has been filed by M/s. Heubach Colour Private Limited. The Applicant is neither related to an importer in India nor any exporter from the subject country. Further, the Applicant has not imported the subject goods during the POI. Applicant is the sole producer of the subject goods in India during the POI.
26. The Authority notes the submission of interested parties to not to consider 100% EOU as part of DI. The Authority holds that since EOU is a part of Domestic Tariff Area (DTA), it has been considered as a part of DI to the extent of the sales made by it in the domestic market as has been considered in past cases. EOU by virtue of being in DTA, is at the same footing as a non EOU domestic producer.
27. The Authority notes that under Rule 2(b) of the Rules there is no explicit exclusion of EOUs from the scope of domestic industry. It is the consistent practice of the Authority to consider EOUs as eligible constituents of the domestic industry as done in a number of investigations in the past. The Authority also notes that in the original investigation of the subject goods, the Authority has considered the Applicant to be eligible as a domestic industry. None of the interested parties had challenged the decision of the Authority to treat the Applicant as an eligible domestic industry on the ground of the Applicant being an EOU.
28. One of the interested party has submitted that production and sales of the EOU are primarily meant for export market and they do not compete with the imported goods in the domestic market. In this regard, interested party relied on Sunset Review Investigation concerning imports of Vitamin E originating or exported from China PR and CESTAT Judgment in the matter of Indian Refractory Makers Association v. Designated Authority. It is further submitted by interested party that Authority in the past has not included EOUs within the scope of the Domestic industry. In this regard, Authority notes that EOUs are not debarred from selling in the domestic market. In fact, Applicant has significant sales of the subject goods in the domestic market.
29. As regards the cases mentioned by opposing parties, the Authority notes that in AD investigation on imports of Phthalic Anhydride, M/s. IG Petrochemicals (100% EOU) was neither an Applicant nor supporter. Thus, issue of eligibility of M/s. IG Petrochemicals as DI was not dealt by the Authority in its finding. With respect to the other anti-dumping investigation on imports of Ceftriaxone Disodium Hemiheptahydrate- Sterile mentioned by Respondent, it is submitted that M/s. Orchid Chemicals (100% EOU) never filed an application for initiation of the said anti-dumping investigation and never participated during the course of the entire investigation.

Further, during the course of the investigation when the Designated Authority requested information from M/s. Orchid Chemicals, it was found that M/s. Orchid Chemicals did not have sales in the domestic market. Therefore, it is noted that an entity which neither filed the application before the Designated Authority nor participated in the investigation and also did not have domestic sales would not be considered as domestic industry under the Rules.

30. In view of the above, the Authority considers the Applicant as the eligible domestic industry within the meaning of Rule 2(b) of the Rules and considers that the applicant satisfies the criteria of standing in terms of Rule 5(3) of the Rules.

E. CONFIDENTIALITY AND OTHER ISSUES

E.1 Submissions made by the Domestic Industry

31. The following submissions have been made by the domestic industry with regard to confidentiality and other issues:
- Applicant is the sole producer in the POI and, thus, its information, even in terms of volume parameters such as production, sales, etc. has not been disclosed on actual basis as the same are not in public domain. Disclosure of such highly business sensitive information, would be of significant competitive advantage to competitors and consumers and would seriously impact the interest of Applicant Company. The Applicant has, however, provided indexed information wherever required.
 - Applicant has provided sufficient information justifying initiation of the investigation. Applicant has provided all information as required under the application proforma. As regards failure of evaluation of certain parameters in the write up, the Applicant submits that it is not necessary for the Applicant to evaluate all the parameters in the application. The Applicant is obliged to provide all relevant information, which it has done.
 - DI has filed the application containing data for China PR and Switzerland separately such as market share, imports etc. However, the Authority has initiated the investigation only against China PR. Nevertheless, there are no imports from Switzerland after 2016. Thus, the information provided in the petition largely covers the data from the prospect of China PR only. Also, the information with regard to market share, imports etc. has been provided separately for China PR and Switzerland. Accordingly, the analysis based on the data corresponding to China PR can be done. As regards the filing of updated petition, there is no such requirement under the Rules.
 - In fact, there are no imports from Switzerland during POI and previous two years. DGCI&S data is a confidential data and therefore cannot be circulated. The interested party is free to collect transaction-wise data from DGCI&S if they so desire. Reference is made to the trade notice F. No. 4/2/2017 dated 8th December 2017.
 - The Applicant submitted that it has provided the data in indexed form in the non-confidential version of the application in accordance with Rule 7 of the Rules and Trade Notice No. 10/2018 dated September 7, 2018.
 - Indexed information has been provided wherever possible. The injury analysis is essentially an analysis of trend which can be easily seen through trends of various parameters provided in the application.
 - In reply to the contention that China Pigment Red 254 market depth analysis and prospect report (prepared by Beijing Zhongjing Information Technology Co. Ltd.) has been kept confidential in the application, Applicant submitted that non-confidential version is required to be a replica of the confidential version with the confidential information preferably indexed or blanked out. It is further submitted that the information contained in the report is third party information and the domestic industry is not required to disclose the same as it is not available in the public domain. In fact, Authority in sunset review investigation concerning imports of "*Certain Rubber Chemicals, namely, TDQ & PX-13*" originating in or exported from the European Union and MOR and MBTS originating in or exported from the Peoples Republic of China accepted such reports containing third party information as confidential.

E.2 Submissions made by Other interested parties

32. The following submissions have been made by other interested parties with regard to confidentiality and other issues:
- a. The DI in their petition have claimed excess confidentiality on the figures related to imports, NIP calculation, productivity, purchases, research and development cost, export price, purchase (quantity as well as value), loan and advances and other related cost. This prevents the respondents from properly defending themselves.
 - b. The Authority in the SSR initiation notification has identified the subject country in the investigation to be China PR only. However, the data provided by the DI in its petition corresponds to both China PR and Switzerland. The DI has not provided an updated petition pursuant to initiation of investigation. In the absence of such segregated information for China PR, the respondents are unable to effectively rebut the DI's claims.
 - c. The Authority should appropriately assess the confidentiality claims of the DI and take into consideration the clarifications issued in this regard vide relevant Trade Notices. In the present case, the NCV of the DI petition has significant errors, based on its nondisclosure of essential information relating to the economic performance of the DI. This has resulted in serious impairment of the rights of the interested parties in appropriately assessing the position of the DI and defending their interest. In addition, the DI should also make available information pertaining to the alleged excess capacities for the PUC in China PR for the benefit of a fair examination and rebuttal by the respondents. Accordingly, the respondents respectfully request the Authority to reject the claims of excessive confidentiality by the DI and make available the cogent information pertaining to the economic/ injury indicators, to the other interested parties.

E.3 Examination by the Authority

33. With regard to confidentiality of information, Rule 7 of the Rules provides as follows:
- “Confidential information: (1) Notwithstanding anything contained in sub-rules (2), (3) and (7) of rule 6, sub-rule(2) of rule 12, sub-rule(4) of rule 15 and sub-rule (4) of rule 17, the copies of applications received under sub-rule (1) of rule 5, or any other information provided to the designated authority on a confidential basis by any party in the course of investigation, shall, upon the designated authority being satisfied as to its confidentiality, be treated as such by it and no such information shall be disclosed to any other party without specific authorization of the party providing such information.*
- (2) The designated authority may require the parties providing information on confidential basis to furnish non-confidential summary thereof and if, in the opinion of a party providing such information, such information is not susceptible of summary, such party may submit to the designated authority a statement of reasons why summarization is not possible.*
- (3) Notwithstanding anything contained in sub-rule (2), if the designated authority is satisfied that the request for confidentiality is not warranted or the supplier of the information is either unwilling to make the information public or to authorise its disclosure in a generalized or summary form, it may disregard such information.”*
34. Non-confidential version of the information provided by various interested parties were made available to all interested parties through the public file as per Rule 6(7) and Trade Notice No. 10/2018 dated September 7, 2018.
35. With regard to the confidentiality of information, the Authority notes that the information provided by the domestic industry on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claims in accordance with Rule 7 of the Rules. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims, wherever warranted and such information has been considered confidential.
36. With regard to updated petition containing data corresponding to China PR, the Authority notes that the Applicant has provided the data for both China PR and Switzerland. However, for the

purpose of present sunset review investigation, the Authority initiated the investigation only against China PR, since prima facie analysis of information submitted by applicant does not show likelihood of dumping from Switzerland. In the facts and circumstances of the present case, the Authority notes that there is no requirement to provide an updated petition containing data for China PR only as the data corresponding to China PR has already been provided separately by the domestic industry in its application.

F. DETERMINATION OF NORMAL VALUE, EXPORT PRICE AND DUMPING MARGIN

F.1 Normal Value

37. Under Section 9A(1)(c) of the Act, normal value in relation to an article means:

- (i) *the comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or*
- (ii) *when there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either-*
 - (a) *comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or*
 - (b) *the cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6):*
Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transhipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.

F.2 Submissions made by the Domestic industry

38. The following are the submissions made by the Applicant in respect of normal value:

- a. China should be considered a non-market economy, in line with the position taken by the Authority in previous cases, and by investigating authorities in other countries. Chinese producers' cost and price cannot be relied upon for determination of normal value.
- b. Applicant has referred to a report published by European Commission. European Commission examined the market situation in the China PR in specific sectors and found that there exist countrywide market distortions related to land, energy, capital, raw materials and other material inputs, and labour in China PR.
- c. Paragraph 1 to 6 of Annex I of the Rules do not apply for computation of normal value for imports from China PR, unless a producer/exporter shows with sufficient evidence that he is operating under market economy conditions. As a result, normal value for China PR has to be determined in terms of paragraph 7 of Annex I of the Rules. Para 7 of Annex I of the Rules provides that the calculation of the normal value in a non-market economy may be determined on the following basis:
 - i. the price in a market economy third country;
 - ii. constructed cost in a market economy third country;
 - iii. the price from such a third country to other countries, including India;
 - iv. the price actually paid in India, adjusted to include a reasonable amount of profit.
- d. The Applicant has constructed the normal value for China PR, treating it as a non-market economy, in the following manner:

- (i) **Raw materials and other consumables:** The raw material consumption and prices have been taken on the basis of domestic industry's experience. The majority of raw materials required for manufacture of subject goods are imported by domestic industry. Therefore, the raw material prices of domestic industry reflect the international prices of the major raw materials and the same prices have been considered for construction of normal value.
 - (ii) **Other Manufacturing Costs/ Conversion Costs:** Other manufacturing costs have been considered based on the experience of the domestic industry.
 - (iii) **SGA Costs and Finance costs:** SGA costs and Finance costs have been considered based on the experience of the domestic industry.
 - (iv) **Profit Margin:** A profit margin of 5% has been considered for working out the normal value.
- e. Applicant has derived net export price based on DGCIS transactions wise data. From the CIF price calculated based on DGCIS transaction wise data, adjustment has been done on account of ocean freight, marine insurance commission, bank charges, port expenses and inland freight charges to arrive at the net export price at ex-factory level.
 - f. Applicant submitted that in the original investigation the Authority has made appropriate adjustments on account of "Non Refundable VAT" while calculating the ex-factory exports price. Applicant further submitted that Authority make adjustment on account of "Non Refundable VAT" in all anti-dumping investigations against China PR. During the period of investigation, VAT refund/export refund rate was 0% and accordingly, Authority needs to make appropriate adjustment on account of "Non Refundable VAT" while calculating the ex-factory export price in the present review investigation.
 - g. It is an admitted fact by the Chinese producer itself in the original investigation that CINIC Chemicals (Shanghai) Co. Ltd. is 100% subsidiary of CINIC Holdings Ltd. (Hong Kong). CINIC Holdings Ltd. (Hong Kong) is incorporated in Hong Kong. None of the related companies of CINIC Holdings Ltd. (except CINIC Chemicals (Shanghai) Co. Ltd.), are engaged in the manufacturing of PUC. In fact, no importer has provided any evidence or information to substantiate that the subject goods coming from Hong Kong into India are in fact produced in Hong Kong. Thus, it is clear that no manufacturing facility of PUC exists in Hong Kong. It is further submitted that the goods being imported from Hong Kong bear the same description and brand name as that of the goods imported from China PR. The same can be verified by the Authority from the transaction wise DGCIS import data.
 - h. Applicant submitted that transaction wise DGCIS import data is usually provided on the basis of country of export. It is further submitted that the subject goods are transhipped through Hong Kong which are basically originated from China as there is no manufacturing facility of subject goods is available in Hong Kong. Applicant requested the Authority to verify this aspect after obtaining transaction wise DGCIS import data on the basis of country of origin rather than country of export.
 - i. None of the producer/exporter from China PR has participated in the present review investigation deliberately so that the relevant information required by the Indian authority for proper conduct of the sunset review investigation is not made available to the Authority and also to escape scrutiny from the Indian authority as to why the Chinese producers are transhipping the subject goods through Hong Kong.
 - j. Chinese exporters have increased the export price to India by 15-20% during the POI deliberately in anticipation of sunset review investigation, whereas, increase in export price of other countries is only 1-2%. This clearly shows that the Chinese export prices to India during the POI are not in the ordinary course of trade and have been artificially inflated with the intent of getting a good result in the sunset review investigation.

F.3 Submissions made by other interested parties

- 39. No relevant submission has been made by the exporters/other interested parties with regards to determination of dumping margin.

F.4 Examination by the Authority**Market Economy status for Chinese producers**

40. Article 15 of China's Accession Protocol provides as follows:

"Article VI of the GATT 1994, the Agreement on Implementation of Article VI of the General Agreement on Tariffs and Trade 1994 ("Anti-Dumping Agreement") and the SCM Agreement shall apply in proceedings involving imports of Chinese origin into a WTO Member consistent with the following:

- a) In determining price comparability under Article VI of the GATT 1994 and the Anti-Dumping Agreement, the importing WTO Member shall use either Chinese prices or costs for the industry under investigation or a methodology that is not based on a strict comparison with domestic prices or costs in China based on the following rules:*

- i. If the producers under investigation can clearly show that market economy conditions prevail in the industry producing the like product with regard to the manufacture, production and sale of that product, the importing WTO Member shall use Chinese prices or costs for the industry under investigation in determining price comparability;*
- ii. The importing WTO Member may use a methodology that is not based on a strict comparison with domestic prices or costs in China if the producers under investigation cannot clearly show that market economy conditions prevail in the industry producing the like product with regard to manufacture, production and sale of that product.*

b) Once China has established, under the national law of the importing WTO Member, that it is a market economy, the provisions of subparagraph (a) shall be terminated provided that the importing Member's national law contains market economy criteria as of the date of accession. In any event, the provisions of subparagraph (a) (ii) shall expire 15 years after the date of accession. In addition, should China establish, pursuant to the national law of the importing WTO Member, that market economy conditions prevail in a particular industry or sector, the non-market economy provisions of subparagraph (a) shall no longer apply to that industry or sector."

41. It is noted that while, the provision contained in Article 15 (a) (ii) have expired on 11.12.2016, the provision under Article 2.2.1.1 of WTO Anti-Dumping Agreement read with obligation under 15 (a) (i) of the Accession Protocol require criterion stipulated in para 8 of the Annexure I of the India's Rules to be satisfied through the information/data to be provided in the supplementary questionnaire for claiming the market economy status. It is noted that no producer/exporter from China PR has participated in the present sunset review investigation. Accordingly, the normal value computation is required to be done as per provisions of para 7 of Annexure I of the Rules. The normal value and export price for the all the producers/ exporters from the subject country have been determined as below.

F.5 Determination of Normal Value

42. As none of the producers from China PR have filed the Supplementary Questionnaire response for market economy treatment, the normal value has been determined in accordance with Para 7 of Annexure I of the Rules. In the absence of sufficient information on record, regarding, the other methods enshrined in Para 7 of Annexure I of the Rules, The Authority has, therefore, constructed the normal value for China PR by adopting cost of production in India as normated with due adjustment for SGA expenses and a reasonable profit at the rate of 5% on cost of production in accordance with Para 6(8) of the Rules.
43. The constructed normal value so determined for Chinese producers/exporters is mentioned in the dumping margin table below.

F.6 Determination of Export Price

44. The Authority notes that none of the producers/exporters have furnished information in the form and manner prescribed which could be used for determination of the export price and calculation of individual dumping margin. Therefore, the Authority has determined the export price from subject country considering volume and value of imports for the period of investigation as per DGCIS transaction wise data.
45. As regards the contention that Authority is required to make adjustment of “non-refundable VAT” while calculating the export price, while DI has stated availability of 13% refundable VAT in 2020, the other interested parties have mentioned about non export of VAT in exports consignments. The Authority notes the submission of the DI and the interested parties on VAT. Since no producer/exporter has cooperated and keeping in view DI’s clarification and non-cooperation of producers/exporters, the Authority has computed the ex-factory export price net of VAT, since it is the ex-factory price of producer which needs to be captured for evaluating the dumping margin.
46. Accordingly, the export price has been adjusted on account of ocean freight, insurance, commission, bank charges, port expenses, inland freight charges and non-refundable VAT to arrive at the net export price at ex-factory level on the basis of evidence/consistent norms being adopted by the Authority in case of non-cooperation. Accordingly, the net export price at ex-factory level for exports from China PR has been calculated and is shown in the dumping margin table below.

F.7 Dumping Margin

47. Based on normal value and export price determined as above, the dumping margin for producers/exporters from China PR has been determined by the Authority and the same is provided in the table below. It is seen that the level of dumping margin is positive and above *de-minimis* levels.

Dumping Margin Table

S.No.	Country	Producer	Normal Value (US\$/KG)	Export price (US\$/KG)	Dumping Margin (US\$/KG)	Dumping Margin %	DM Range %
1	China PR	Any	****	****	****	****	20-30

G. ASSESSMENT OF INJURY, CAUSAL LINK AND LIKELIHOOD OF CONTINUANCE OR RECURRENCE OF DUMING AND INJURY

48. Rule 11 of the Rules read with Annexure–II provides that an injury determination shall involve examination of factors that may indicate injury to the domestic industry, “.... *taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles....*”. In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.
49. Rule 23 of the Rules provides that the provisions of Rule 6, 7, 8, 9, 10, 11, 16, 18, 19 and 20 shall apply mutatis mutandis in case of a review. The Authority in its examination has evaluated the injury parameters which are required under Rule 11 and Annexure II of the Rules and likelihood analysis as to whether the expiry of duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury.

50. The Authority notes that the application for imposition of antidumping duty has been filed by M/s. Heubach Colour Pvt. Ltd. In terms of Rule 2(b) of the Rules, the Applicant has been treated as the domestic industry for the purpose of this investigation. Therefore, the cost and injury information of the Applicant, constituting the domestic industry as defined in Rule 2(b) has been examined.

G.1 Submissions made by the Domestic Industry

51. The following submissions have been made by the domestic industry with regard to injury and causal link:
- a. There is significant price undercutting/underselling due to low priced dumped imports coming into India. There is significant price suppression due to low priced dumped imports coming into India.
 - b. The dumping margin and the injury margin from the subject country is not only more than *de minimis* but also very substantial. The impact of dumping on the domestic industry is very significant.
 - c. The cessation / discontinuance of ADD in force is likely to lead to continuation of dumping and injury. In case the duties applicable on the imported goods from China PR cease to exist, the Chinese exporters would capture the Indian market causing significant injury to the DI.
 - d. After POI, the applicant has expanded its installed capacity of PUC to cater to the increasing domestic demand. Demand supply gap is not a reason for discontinuation of duties as has been consistently held by the Authority.
 - e. Designated Authority has to reach a conclusion that there is no possibility of any continued dumping or injury or otherwise recurrence of dumping or injury to the domestic industry from the dumped imports from subject country before deciding not to extend the anti-dumping duty. Thus, the level of improvement in some of the injury factors *per se* during the period of investigation or the decrease in imports is not directly relevant.
 - f. Only less than 1% of the production of subject goods is captively consumed by the domestic industry which is negligible and the claim of the Indian Paint Association and importers does not have any merit.
 - g. It is submitted that the performance of the domestic industry has shown some improvement as a positive outcome of the anti-dumping duty levied by the Authority. However, the subject country continues to export the subject goods to India at dumped prices causing significant injury to the domestic industry. Therefore, continuation of anti-dumping duty would be in the interest of domestic industry and the discontinuance of anti-dumping duties would certainly lead to continuation or recurrence to even greater extent, of dumping and injury.
 - h. The level of dumping, volume of imports, various injury parameters, surplus capacities available with the exporters, inventories of the exporters and their prices to the world need to be examined to evaluate the likelihood of continuance or recurrence of dumping and injury. The analysis of dumping and injury to the DI is required to be made keeping in view the level of ADD in existence and the likely future behaviour of the exporters.
 - i. Domestic selling price is significantly below the NIP.
 - j. Imports from China PR seem to have reduced from 2015-16 onwards. However, it is pertinent to mention that huge imports were made into India during the period April 2015 to August 2015 (Period just prior to levy of duty) in anticipation of levy of duty. In fact, more than 85% of the imports during 2015-16 took place during the period April 2015 to August 2015. Accordingly, it is not appropriate to do a trend analysis for imports using 2015-16 as the base year as imports during this year were exceptionally high in anticipation of levy of duty.

- k. Imports during POI(A) are still significant in volume and more or less at the same level as compared to the POI of the original investigation wherein imports from China PR were approx. 49 MT. Imports from China PR continue to be significant in relation to total imports, Indian production and Indian demand.
- l. Imports from countries other than China PR are not significant in volume terms so as to cause or threaten to cause injury to the domestic industry except USA. In case of USA, price is much higher than the price from China PR.
- m. The DI has submitted that it is a settled position of law that causal link analysis is not mandatorily required to be done in sunset review investigations. In this connection, the DI has invited the attention of the Authority to the Appellate Body's decision in the case of Oil Country Tubular Goods from Mexico (WT/DS282/AB/R dated 2 November 2005). Applicant further submitted that in Para 17.28 of *Manual of Operating Practices for Trade Remedy Investigations*, it is mentioned that absence of causal link or breaking of the causal link in a sunset review may not have a direct bearing on the outcome of the sunset review. Accordingly, causal link analysis is not mandatorily required to be done in a sunset review investigation.
- n. Return on investment (ROI) is ranging between **** to **** during injury period. This is well below the 22% return considered appropriate by the Authority.
- o. The profitability of the Applicant has improved over the years due to imposition of anti-dumping duty on the subject goods. However, during the POI the profitability of the Applicant has also improved due to significant reduction in utility cost as a result of setting up of a wind turbine and coal boiler in the plant. Utility cost in POI is reduced by approximately **** in comparison to other periods. If there were no reduction in utility cost in POI, ROI would be approximately below ****.
- p. In response to the contention of interested party, domestic industry submitted that dumped imports continue to come from China PR despite imposition of anti-dumping duty. The volume of dumped imports is still significant during the period of investigation. The performance of the domestic industry has shown some improvement as a positive outcome of the anti-dumping duty levied by the Authority, however, domestic industry is unable to achieve optimum level of rate of return on investment because of the fact that imports of subject goods from China PR are coming at dumped prices which are exerting price pressure on the domestic industry. Consequently, domestic industry is suffering price injury and it is sufficient ground to continue the anti-dumping duty on imports of subject goods from China PR.
- q. In response to the contention that there is no injury to the domestic industry, Applicant submitted that the performance of the domestic industry has shown some improvement as a positive outcome of the anti-dumping duty levied by the Authority. However, the subject country continues to export the subject goods to India at dumped prices causing significant injury to the domestic industry. The dumping margin and the injury margin from the subject country is not only more than *de minimis* but also very substantial. The cessation / discontinuance of Anti-dumping duty in force is likely to lead to continuation of dumping and injury. In case the duties applicable on the imported goods from China PR cease to exist, the Chinese exporters would capture the Indian market causing significant injury to the Domestic Industry.
- r. The Indian customers quote the prices at which the imported goods are coming into the country and ask the domestic industry to match the imported prices. The factors that adversely affect the domestic industry are both the volume of imports as well as the prices at which the imported goods enter the country.
- s. It is an admitted fact by the Chinese producer itself in the original investigation that CINIC Chemicals (Shanghai) Co. Ltd. is 100% subsidiary of CINIC Holdings Ltd. (Hong Kong). CINIC Holdings Ltd. (Hong Kong) is incorporated in Hong Kong. None of the related companies of CINIC Holdings Ltd. (except CINIC Chemicals (Shanghai) Co. Ltd.), are

engaged in the manufacturing of PUC. In fact, no importer has also provided any evidence or information or certificate of origin to substantiate that the subject goods they are importing from Hong Kong into India are produced in Hong Kong. Thus, it is clear that no manufacturing facility of PUC exists in Hong Kong. It is further submitted that the goods being imported from Hong Kong bear the same description and brand name i.e. Cinilex as that of the goods imported from China PR. The Authority can verify the same from the transaction wise DGCI&S import data. Applicant has also provided the evidence that website of CINIC Chemicals (Shanghai) Co., Ltd. clearly mentions that CINIC has two production facilities in China i.e. Shanghai and Taixing only. CINIC doesn't have any production facility in Hongkong.

- t. None of the producer/exporter from China PR has participated in the present review investigation deliberately so that the relevant information required by the Indian authority for proper conduct of the sunset review investigation is not made available to the Authority and also to escape scrutiny from the Indian authority as to why the Chinese producers are transhipping the subject goods through Hong Kong.
- u. Imports are also coming into India under advance authorisation scheme without payment of any customs duty and anti-dumping duty.
- v. DI performance has improved largely on volume parameters after imposition of anti-dumping duty. In terms of profitability and ROI there has been improvement, but it is still well below the optimum levels. It is submitted that there is a likelihood that if duties are removed injury to the domestic industry on volume parameters will again recur and the profitability will diminish.
- w. As regards to the expansion of installed capacity, Applicant submitted that after considering the demand of the product, domestic industry has invested additional capital and installed one Filtration unit (Filter press) and one Rotary Vacuum Dryer with condenser, vacuum and packing system in DPP Red plant to remove bottleneck at filtration and drying stage of the production. If the anti-dumping duty is not continued, dumped imports from China PR will surge and the efforts made by the Applicant to increase its capacity will be jeopardized.
- x. Applicant in its application has applied basic custom duty of 7.5% for calculating the landed value and the same can be verified by the Authority. It is also submitted that there is significant price undercutting/underselling due to low priced dumped imports coming into India.
- y. The Authority in the past has continued the anti-dumping duties in the following sunset review investigations despite the fact that economic parameters of DI have been improved after levy of anti-dumping duty:
 - Final Findings in Sunset review investigation concerning imports of '**Measuring Tapes**' originating in or exported from China PR dated 18th June 2020.
 - Final Findings in Sunset review investigation concerning imports of '**Grinding Media Balls**' (excluding Forged Grinding Media Balls) originating in or exported from China PR and Thailand dated 11th June, 2018.
 - Final Findings in Sunset review anti -dumping investigation concerning imports of '**Purified Terephthalic Acid**', originating in or exported from Korea RP and Thailand dated 28th June, 2019.
 - Final Findings in Sunset Review of Anti-dumping duty imposed on the imports of '**Sodium Nitrite**' originating in or exported from China PR dated 19th July, 2017.

It is submitted that the aforesaid cases are only illustrative examples and there are a number of other findings, wherein, the Authority has continued the anti-dumping duty in sunset review investigations despite the fact that economic parameters of Domestic Industry have improved after levy of anti-dumping duty.

G.2 Submissions made by other interested parties

52. The following submissions have been made by other interested parties with regard to injury and causal link:
- a. The imports of PUC in India also indicates that there is demand-supply gap existing in the Indian market.
 - b. Domestic manufacturer has capitalized on the opportunity and increased its profitability and sales after imposition of anti-dumping duty.
 - c. There is huge demand supply gap prevailing in the Indian market. Despite witnessing an increase in its domestic sales of DI by 82% where the demand for the PUC increased by 50%; the demand supply gap continued to increase by 30% during the same period. Therefore, it is clear that the DI is not capable of catering to the entire domestic demand.
 - d. The DI is an EOU and has maintained an 'export focus' over the years. This would continue as it is required to achieve a positive NFE to enjoy the benefits of an EOU before it can sell its production in the DTA. Thus, the domestic market in India is not a priority of the DI and there is a requirement of an extra source of supply of PUC in Indian market.
 - e. The DI is backward integrated and consumes a part of its production of the PUC as captive consumption. This implies that it is not only a manufacturer/producer of the PUC but also constitutes a part of the user industry in domestic market. Accordingly, the availability of the PUC to the user industry in India is further reduced due to priority of the DI here being exports as well as captive consumption.
 - f. The DI has wrongly derived price undercutting and price underselling in the DI's petition. In determining the landed value, the DI has used 5%, instead of the requisite i.e. 7.5% rate of basic custom duty. The use of lesser rate of duty in calculating price underselling has led to undervaluation of the landed value. Moreover, the DI has also wrongly considered imports from Hong Kong as imports from China PR.
 - g. On the basis of re-calculation, the price undercutting is between 0-10%, which is almost at the same level as the domestic selling price.
 - h. There is a decrease in price underselling from 20-30% in the original findings to 10-20% in the present investigation.
 - i. There is no price depression/suppression. The cost of sales of the DI has increased by merely 1% during the POI(A) when compared with 2015-16; whereas the domestic selling price has increased by 6% and landed value has increased by 15% respectively. In other words, the increase in domestic selling price is more than the increase in the cost to make and sell.
 - j. The reasoning provided by the DI cannot lead to the assumption that imports coming from Hong Kong are being transhipped from China unless a positive evidence is provided in this respect by the DI. Thus, in the absence of any supporting evidence with respect to its claims, treatment of import of PUC from Hong Kong as being imported from China PR is unjustified. Such a treatment leads to incorrect and inflated import data which is unreliable and hence must be outrightly rejected by the Authority.
 - k. It is submitted that it is not possible to get a Rules of Origin certification from Hong Kong for transhipped products. Hong Kong Rules of Origin provides that products must either be natural products from Hong Kong or must have undergone significant value addition to obtain the Hong Kong Certificate of Origin. It is submitted that given the objective nature of the analysis to determine injury, mere speculation regarding the origin of goods is not sufficient in the absence of proof to establish their actual origin country. It is also to be noted that the remedy against any alleged circumvention may only be addressed in an anti-circumvention investigation.
 - l. Treatment of import of PUC from Hong Kong as being transhipped from China PR is unjustified. The origin of the PUC must be verified against the certificate of origin issued by the competent authorities in Hong Kong and cannot merely be assigned as imports from China PR in case such certificate is valid.

- m. Even if the Authority considers the import volume from Hong Kong as part of the imports from China PR, an analysis of such aggregated data too provides that import volumes have decreased by more than 69% in comparison to the base year. This clearly shows that there is no continued injury on account of imports of the PUC, nor is there any possibility of its recurrence.
- n. Domestic demand of the PUC has increased from 2015-16 to POI (A) by 50%. The production of the PUC by the DI has increased by 13%. Thus, the DI is not equipped to cater to the domestic demand.
- o. The domestic sales of the PUC by the DI have significantly increased by 82%. Similarly, the share of DI in relation to domestic market share of the PUC has also increased by 21%. Thus, there is positive growth by DI.
- p. While the installed capacity has remained the same during the injury period, the capacity utilization has increased by 13%. The DI is also planning to expand their installed capacity with respect to the PUC by removing bottlenecks at filtration and dying stage in DPP 254 plant. However, the protection of future production plan which is still to come up cannot be addressed in the ongoing sunset review investigation.
- q. The overall profit of the DI has tremendously increased by 500% in span of 4 years. Similarly, Profit before Interest and Tax ('PBIT') and Cash Profits has increased by 231% and 98% during the investigation period. Return on Average Capital Employed ('ROCE') of the DI, shows an overall increase by 125% in a span of 4 years.
- r. There is a significant decrease of 70% in overall stock volume during the investigation period which indicates that the DI can exhaust most of its production by sales.
- s. India currency has depreciated which resulted in increase in raw material prices from China PR. This may have led to increased production costs.
- t. The imports of the PUC from other countries excluding the subject countries has shown an increase of 375% during investigation period. The share of import of PUC from other countries in relation to domestic market share has also increased by 215%.
- u. The user industry comprises of the entire paint industry in India and it is an important segment within the Indian manufacturing sector. Therefore, the interest of the user industry which is making significant contribution to the GDP should not be overlooked to provide protection to a 100% EOU which does not cater much to the domestic market in India.
- v. There is a significant increase in import volume of PUC from USA. In terms of volume of import of PUC from USA, there is an increase from 34.16 MT in 2015-16 to 164.10 MT during the POI (A). Similarly, the imports of PUC from the USA in relation to total imports of PUC has increased from 20.59% in 2015-16 to 75.89% during the POI (A).
- w. An analysis of the performance parameters indicate that the DI has performed exceedingly well. The import share of China PR stands at 4% with significant rise in the import prices during the injury period leading up to the POI. Moreover, the current landed prices from China PR is higher than the NIP of the DI by 15.23%. Thus, it is clearly demonstrable that there is exists no material injury to the DI.
- x. DI's argument that once a likelihood of dumping is established, the same can be sufficient for recommending extension of the existing anti-dumping duty is without merit. In the absence of 'likelihood of recurrence of injury', presence of on-going dumping cannot be the sole criterion basis which an anti-dumping duty can be extended in an SSR investigation. In this regard it may also be noted that less than 22% rate of return on capital is insufficient to prove existence of likelihood of recurrence of injury on its own.
- y. The DI during the oral hearing has accepted the fact that there is no volume injury from the imports of the PUC from China PR. Thus, injury if any in this regard is on account of the high volume of US imports which has increased by 380% in comparison to the base year against an 85% decline in volumes from China PR. Additionally, exports from Hong Kong

cannot be clubbed as exports from China PR in the absence of proof of their actual origin being China PR.

- z. The DI has also not made any claims in their post oral hearing submissions to support their claim regarding the extension of the duty being in public interest. This indicates that the duty if extended will not be in the interest of the downstream user industry and the public at large. Given that the nature of the DI is that of an EOU whose focus is on export markets and the fact that there exists a demand supply gap, an extension of the anti-dumping duty will only cut the steady supply of the PUC while the DI which is the sole manufacturer of the PUC is able to monopolize the supply chains at whim.
- aa. Significantly different SSR DPP Red 254 variants have been imported that are different in their application and therefore command significantly different prices.
- bb. Despite the levy of the antidumping duty, significant imports are coming in from China; which also exposes the inability of the domestic industry to substitute these imports and increase its sale and market share. Importantly such imports from China also entail expenses and profits of the actual importer, besides the levy of the antidumping duty. Despite these facts, significant volumes of the subject goods have been imported by the User industry as they do not have a choice. The sole domestic producer is simply not able to provide the subject goods of the desired specifications that are needed by the Indian User industry. It is further apparent that the goods produced by the domestic industry are not at par with the imported goods, else Why would the User industry choose to use the subject goods imported from the subject country that is attracting huge amount of antidumping duty? Further, why does the domestic industry choose to export the subject goods at significantly lower prices as compared to the prevailing domestic prices of the subject goods in India? And not sell these in India?
- cc. The Landed values of these imports from the US are significantly lower than the landed values of the subject goods from the subject country. Since the Indian Authority applies the Lesser Duty Rule, it is assumed that the duty in force is based upon the injury margin. Thus, it would be found that significant volumes of the subject goods have been imported from the US that have landed into India at much lower than the assumed NIP of the domestic industry. As the landed values of the subject goods from the US in particular hasn't bothered the domestic industry at all, it would be safe to assume that import of the subject goods from the subject country at similar prices/values as those from the US, is not likely to injure the domestic industry by their own yardstick.
- dd. Why do the imports from the US do not bother it at all, in particular because the Landed values from the US have been consistently lower than the Landed values from China? How is it that the Injury to it, is restricted to the subject country; despite the US goods have come in huge volumes and at comparable or lower prices.
- ee. Does every sector of the industry always at all points of time achieve a ROI @ 22%? We humbly submit that irrespective of NIL imports, it cannot be and ought not to be assured that every time and in all situations the domestic industry must obtain an ROI @ 22%. Besides, ROI significantly vary from sector to sector and time to time and in particular varies as per the age of the plant. Importantly it also depends, inter alia, upon its efficiency, productivity and as well as the competition in the market. Undisputedly, significant volumes of the subject goods are competing in the Indian market from the US. But amazingly, the domestic industry is not injured by it? Besides, its inability to realise a higher ROI is also due to the presence of huge volumes of imports from the US.

G.3 Examination by the Authority

- 53. Article 3.1 of the WTO Agreement and Annexure-II of the Rules provide for an objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices, in the domestic market, for the like products; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. With regard to the volume effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute term or relative to production or consumption in India. With

regard to the price effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress the prices to a significant degree, or prevent price increases, which would have otherwise occurred to a significant degree.

54. The present investigation is a sunset review of anti-dumping duties in force. Rule 23 provides that provisions of Rule 11 shall apply, mutatis mutandis in case of a review as well. The Authority has, therefore, determined injury to the domestic industry considering, mutatis mutandis, the provisions of Rule 11 read with Annexure II. Rule 11 of the Rules read with Annexure-II provides that an injury determination shall involve examination of factors that may indicate injury to the domestic industry, “... taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles...”. In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.
55. As regards the consequent impact of dumped imports on the domestic industry, Para (iv) of Annexure II of the Rules states as under:
- “(iv) The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices; the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments.”*
56. As regards the contention of the interested parties that domestic industry is backward integrated and consumes a part of its production of the PUC as captive consumption, the Authority notes that the captive consumption of the subject goods by the domestic industry is very negligible and it is in fact less than 1% of the total production of the subject goods.
57. For the purpose of current injury analysis, the Authority has examined the volume and price effects of dumped imports of the subject goods on the domestic industry and its effect on the prices and profitability to examine the existence of injury and causal link between the dumping and injury, if any.
58. It is not necessary that all parameters of injury show deterioration. Some parameters may show deterioration, while some may show improvement. The Authority considers all injury parameters and, thereafter, concludes whether the domestic industry has suffered injury due to dumping or not. The Authority has examined the injury parameters objectively taking into account the facts and arguments submitted by the domestic industry and interested parties. Accordingly, certain economic parameters as well as the volume and price effect of dumped imports have been examined as follows:

I. ASSESSMENT OF DEMAND

59. For this purpose, demand or apparent consumption of the product in India is taken as the sum of domestic sales of the Indian producers and imports from all sources. Share of imports from the subject country in demand/consumption in India determined by the Authority is as under:

Particulars	Unit	2015-16	2016-17	2017-18	POI(A)	POI
Imports from China PR/Hong Kong	MT	122	31	42	38	47
Trend	Indexed	100	26	34	31	39
Imports from other countries	MT	44	79	124	179	223
Trend	Indexed	100	179	282	405	507

Particulars	Unit	2015-16	2016-17	2017-18	POI(A)	POI
Total imports	MT	166	110	166	216	270
Trend	Indexed	100	66	100	130	163
Domestic Sales of Applicant	MT	****	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	163	163	182	228
Total Demand	MT	****	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	104	124	150	188
<u>Market Share</u>						
Share of Domestic Industry	%	****	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	157	131	121	121
Share of Imports from China PR/Hong Kong	%	45%	11%	12%	9%	9%
Trend	Indexed	100	25	27	21	21
Share of Other countries	%	16%	28%	37%	44%	44%
Trend	Indexed	100	173	227	270	270

60. As regards exports from Hong Kong, the Authority notes that the brand name of PUC from Hong Kong is same as that of China of the producer M/s CINIC Chemicals Ltd. DI has evidenced that the production facility of CINIC is only in China and only the holding company of M/s CINIC Holdings Ltd. in Hong Kong. The other interested parties especially importers who have imported from Hong Kong have not filed any evidential documents like certificate of origin, Bill of lading, commercial invoice etc. disputing the fact of transshipment of China goods from Hong Kong. The Authority therefore proposes to consider the imports from Hong Kong having its origin in China.
61. The Authority notes that imports from China PR have reduced from 122 MT in 2015-16 to 38 MT in POI (A). However, the Authority agrees with the Domestic Industry's contention that more than 85% of the imports during 2015-16 took place during the period April 2015 to August 2015 in anticipation of levy of anti-dumping duty as compared to previous years. The Authority also notes that the imports from the subject country are coming into India in POI (A) are more or less at the same level as prevailing before levy of anti-dumping duty. Therefore, the imports of subject goods from China PR are still significant in quantum.

II. VOLUME EFFECT OF DUMPED IMPORTS

i. Import Volumes and Share of Subject Country

62. With regard to the volume of the dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. The Authority has examined the volume of imports of the subject goods from the subject country and other countries based on the transaction-wise import data provided by DGCI&S. The import volumes of the subject goods and share of the dumped imports during the injury investigation period are as follows:

Particulars	Unit	2015-16	2016-17	2017-18	POI(A)	POI
Imports from China PR/Hong Kong	MT	122	31	42	38	47
Trend	Indexed	100	26	34	31	39
Imports from other countries	MT	44	79	124	179	223
Trend	Indexed	100	179	282	405	507
Total imports	MT	166	110	166	216	270
Trend	Indexed	100	66	100	130	163
Subject country import in relation to total	%	73%	28%	25%	17%	17%

Particulars	Unit	2015-16	2016-17	2017-18	POI(A)	POI
imports						
Trend	Indexed	100	39	34	24	24
Subject country import in relation to total Indian Production	%	****	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	28	35	27	27
Demand	MT	****	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	104	124	150	188
Subject country import in relation to demand	%	****	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	25	27	21	21

63. The Authority notes that even though imports from subject country have reduced in absolute terms and also in relation to production and consumption in India, imports during POI(A) are still significant in volume and more or less at the same level as prevailing during the period prior to levy of anti-dumping duty.

III. PRICE EFFECT OF THE DUMPED IMPORTS

64. In terms of Annexure II (ii) of the Rules, the Authority is required to consider the effect of the dumped imports on domestic prices in terms of price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any.

i. Price Undercutting

65. With regard to the effect of dumped imports on prices, the Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. In this regard, a comparison has been made between the landed value of the product from the subject country and the average selling price of the domestic industry, net of all rebates and taxes, at the same level of trade. The prices of the domestic industry were determined at ex-factory level.

Particulars	UOM	2015-16	2016-17	2017-18	POI(A)
Import Volume	MT	122	31	42	38
Trend	Indexed	100	26	34	31
Landed Price	Rs./KG	955	1,077	949	1100
Trend	Indexed	100	113	99	115
Domestic Sales Price excluding Freight	Rs./KG	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	99	102	106
Price Undercutting	Rs./KG	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	-36	122	20
Price Undercutting	%	****	****	****	****
Trend	Range	10-20	(10)-0	10-20	0-10

66. The Authority notes that imports of the subject goods from China PR are undercutting the domestic selling price of the like article in India.

ii. Price Underselling

67. The Authority has also examined price underselling suffered by the domestic industry on account of dumped imports from the subject country. For this purpose, the NIP determined in terms of Annexure III of the Rules has been compared with the landed price of imports as obtained from the DGCI&S import data. Comparison of the NIP of the domestic industry with weighted average landed price of imports shows as follows:

Particulars	UOM	Value
Imports	MT	47
Landed Price	Rs/KG	1100
NIP	Rs/KG	****
Injury Margin	Rs/KG	****
Injury Margin	%	****
Trend	Range	0-10

68. It is noted that the landed price of imports is below the non-injurious price of the domestic industry. The Authority notes that the domestic industry has suffered price underselling during POI due to dumped imports of the subject goods from the subject country.
69. The Authority further notes that the price underselling would be much higher in case of imports made under Advance Authorisation.

iii. Price Suppression and Depression

70. In order to determine whether the dumped imports are depressing the domestic prices or whether the effect of such imports is to suppress prices to a significant degree and prevent price increases which otherwise would have occurred to a significant degree, the Authority considered the changes in the costs and prices and landed value over the injury period. The position is shown as per the table below:

Particulars	Unit	2015-16	2016-17	2017-18	POI(A)	POI
Cost to make and sell	Rs. /KG	****	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	96	101	101	101
Domestic Selling Price	Rs. /KG	****	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	99	102	106	106
Landed Value	Rs./KG	955	1,077	949	1100	1100
Trend	Indexed	100	113	99	115	115

G.4 Impact on Economic Parameters of the Domestic Industry

71. Annexure II to the Rules requires that determination of injury shall involve an objective examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of like product. The Rules further provide that the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry should include an objective and unbiased evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential

decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth and the ability to raise capital investments. The various injury parameters relating to the domestic industry are discussed below:

a) Capacity, Production, Capacity Utilization and Sales

72. The performance of the domestic industry with regard to production, domestic sales, capacity & capacity utilization is as follows:

Particulars	UOM	2015-16	2016-17	2017-18	POI(A)	POI
Capacity	MT	****	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	100	100	100	125
Production	MT	****	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	90	97	113	141
Capacity utilization	%	****	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	90	97	113	113
Domestic Sales	MT	****	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	163	163	182	228

73. From the above table, the following can be seen:

- Capacity throughout the injury investigation period and the period of investigation has remained constant.
- Production, capacity utilisation and domestic sales have increased over the injury period in view of increase in demand.

b) Profits, Return On Capital Employed and Cash Profit

74. The cost of sales, selling price, profit/ loss, cash profits and return on investment of the domestic industry has been analysed as follows:

Particulars	UOM	2015-16	2016-17	2017-18	POI(A)	POI
Profit/(Loss)	Rs/KG	****	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	235	144	329	329
Profit/(Loss)	Rs Lacs	****	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	381	234	600	750
PBIT	Rs Lacs	****	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	203	146	313	391
Cash Profit	Rs Lacs	****	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	123	125	198	247
ROI	%	****	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	214	125	225	225

75. It is seen that profits, and return on investment first increased during 2016-17 after levy of anti-dumping duty, thereafter declined in 2017-18, and again improved during the POI. There is no constant trend in terms of profits, return on investment and cash profits. However, the Authority notes that return on investment is ranging between **** to **** during injury investigation period which has been claimed by the domestic industry to be much below the optimum levels. The Authority also notes that the profitability and return on investment of the domestic industry has improved during the POI due to significant reduction in utility cost achieved by the domestic industry by setting up of a wind turbine and coal boiler in the plant.

c) Market Share in Demand

76. The effect of the dumped imports on the market share in demand of the domestic industry has been examined as below:

Particulars	Unit	2015-16	2016-17	2017-18	POI(A)	POI
Share of Domestic Industry %	%	****	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	157	131	121	121
Share of Imports from China PR/Hong Kong	%	45%	11%	12%	9%	9%
Trend	Indexed	100	25	27	21	21
Share of Other countries	%	16%	28%	37%	44%	44%
Trend	Indexed	100	173	227	270	270

77. The Authority notes that the market share of the domestic industry increased significantly during the year 2016-17 but has declined thereafter during 2017-18 and POI (A).

d) Employment, Wages and Productivity

78. The position with regard to employment, wages and productivity is as follows:

Particulars	UOM	2015-16	2016-17	2017-18	POI(A)	POI
Employee	No.s	****	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	92	100	100	100
Production/E employee	Per Employee	****	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	97	97	113	113
Production	MT/Day	****	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	90	97	113	113

79. The Authority notes that employment of the domestic industry remained at the same level during the entire injury period. Productivity per employee has marginally improved in the POI.

e) Inventory

80. The data relating to inventory of the subject goods is shown in the following table:

Particular	Unit	2015-16	2016-17	2017-18	POI(A)	POI
Opening Stock	MT	****	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	299	176	85	85
Closing Stock	MT	****	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	59	28	12	12
Average Stock	MT	****	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	119	65	30	30

81. The Authority notes that level of inventories with the domestic industry has decreased during the POI (A).

f) Magnitude of Dumping

82. Magnitude of dumping is an indicator of the extent to which the imports are being dumped in India and are consequently causing or likely to cause injury to the domestic industry. It is noted that imports from the subject country are entering into India at dumped prices and the margin of dumping are above *de minimis* limits and significant. The dumping continues to exist despite anti-dumping duty in force.

g) Ability to raise capital investment

83. The domestic industry has enhanced capacity for production of product under consideration considering the present and potential demand for the product in the country. However, dumping has continued and would affect the domestic industry's ability to raise additional capital in case of cessation of anti-dumping duty.

h) Growth

84. The data relating to growth of the domestic industry is shown in the following table:

Growth	Unit	2016-17	2018-19	POI(A)	POI
Production	%	****	****	****	****
Domestic Sales	%	****	****	****	****
Domestic Profit - Per unit	%	****	****	****	****
Domestic Profit - Rs Lacs	%	****	****	****	****
Cash Profit	%	****	****	****	****
PBIT	%	****	****	****	****
ROI	%	****	****	****	****

85. The Authority notes that domestic industry has registered positive growth in volume parameters such as production, sales etc. as a result of anti-dumping duty being in place. Profitability and return on investment have also shown positive growth trend during the injury investigation period.

i) Factors Affecting Domestic Prices

86. The examination of the import prices from the subject country, change in the cost structure, competition in the domestic market, factors other than dumped imports that might be affecting the prices of the domestic industry in the domestic market shows that the landed value of imported material from the subject country is below the selling price and the non-injurious price of the domestic industry causing price undercutting and price underselling in the Indian market. The Authority notes that the prices of the product under consideration in general should move in tandem with the prices of key raw materials and the domestic industry has been fixing its prices considering these input prices and landed price of imports. Thus, the landed value of subject goods from the subject country is an important factor for determination of domestic prices.

Other Known Factors & Causal Link

87. The Authority has noted other factors listed under the Rules, which could have contributed to injury to the domestic industry for examination of causal link between dumping and material injury to the domestic industry.

a) Volume and price of imports from third countries

88. The Authority notes that significant volume of imports of PUC are coming into India from USA. However, the import price from USA is significantly higher than the import price from China PR (against which anti-dumping duties are already in force). Thus, it cannot be said that imports from countries other than China PR are causing injury to the domestic industry.

b) Export Performance

89. The claimed injury to the Domestic Industry is solely on account of domestic operations and there is no impact of exports on the injury suffered by the domestic industry.

b) Technology

90. The Authority notes that the technology for producing the PUC has not undergone any significant development. Possible development in technology is not a factor to cause injury to the domestic industry.

c) Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers

91. The Authority notes that there is no trade restrictive practice which could have contributed to the injury to the domestic industry.

d) Changes in pattern of consumption

92. The pattern of consumption with regard to the product under consideration has not undergone any change. Change in the pattern of consumption is unlikely to contribute to the injury to the domestic industry.

e) Performance of the domestic industry with respect to other products

93. Performance of other products being produced and sold by the Applicant is not a possible cause of injury to the domestic industry as the information on performance furnished by the Applicant relates to product under consideration only.

H. MAGNITUDE OF INJURY AND INJURY MARGIN

94. The Authority has determined Non-Injurious Price for the domestic industry on the basis of principles laid down in the Rules read with Annexure III, as amended. The NIP of the product under consideration has been determined by adopting the verified information/data relating to the cost of production for the period of investigation. NIP has been considered for comparing the landed price from the subject country for calculating injury margin. For determining NIP, the best utilisation of the raw materials by the domestic industry over the injury period has been considered. The same treatment has been carried out with the utilities. The best utilisation of production capacity over the injury period has been considered. The production in POI has been calculated considering the best capacity utilisation and the same production has been considered for arriving per unit fixed cost. It is ensured that no extraordinary or non-recurring expenses were charged to the cost of production. The non-injurious price so determined has been compared with the landed price of imports from the subject country to determine the injury margin as follows:

Injury Margin Table

S.No.	Country	Producer	NIP- US\$ / Kg	Landed Value US\$/ Kg	Injury Margin US\$/ Kg	Injury Margin %	Injury Margin Range- %
1	China PR	Any	****	15.57	****	****	0-10

J. LIKELIHOOD OF CONTINUANCE OR RECURRENCE OF DUMPING AND INJURY**J.1 Submissions made by the domestic industry**

95. There is a clear likelihood of the continued dumping being further intensified by exporters from China PR leading to a situation of further intensified injury to the domestic industry, if the existing duties are withdrawn.

a. Continued dumping even after imposition of AD Duty

96. It is submitted that the dumped imports continue to come from China PR despite imposition of anti-dumping duty. If the duty is withdrawn, there is a strong likelihood of an increased volume of

dumped imports coming into India from China PR. It is further submitted that the imports coming into India from China PR are above *de minimis* level and dumping margin is quite significant.

b. No participation by Chinese Producers/Exporters in the present review investigation

97. None of the producer/exporter from China PR has participated in the present review investigation including CINIC Chemicals Co. Ltd., Shanghai who had participated in the original investigation and to whom individual rate of duty was granted.
98. CINIC Chemicals Co. Ltd is the biggest exporter from China PR who had cooperated with the authority in the original investigation. Non-participation of CINIC Chemicals Co. Ltd. and other producers/exporters have foreclosed the gate for provision of various necessary information required for the sunset review investigation. Below listed basic information can normally be assessed from the response filed by the producer/exporter:
 - i. Capacity and idle capacity available with the producers
 - ii. Inventory of the product under consideration available with producers/exporters at the end of the POI and injury period
 - iii. Export orientation of the producers/exporters
 - iv. Sales and profitability in domestic market
 - v. Various export benefits
 - vi. Any capacity expansion plans by producers/exporters
99. Also, there could be one more reason for non-participation of Chinese producers that they don't have any evidence to establish that there is no likelihood of continuation or recurrence of dumping from China PR.
100. It is an established practise not only in India but in other jurisdictions like Canada, US and EU that non-participation of foreign producer/exporter in the review investigation who have participated in the original investigation indicates a clear likelihood of continuation of dumping in future. In this regard, domestic industry has relied on the judgment of Hon'ble CESTAT in the matter of *SI Group India Pvt. Ltd. v. Designated Authority*. In para 22 of the said judgment dated 28th November, 2019, Hon'ble CESTAT has considered non-participation of producer/exporter from the subject country as one of the most important factor for continuation of the anti-dumping duties.

c. Domestic industry has been forced to match the import prices and accordingly sell at prices below NIP/Fair Price

101. It is submitted that the domestic industry has been forced to sell the like article at prices offered by the exporters from China PR in order to maintain its market share. As stated in injury analysis, dumped imports are undercutting the prices of the domestic industry in India and the dumped imports are also causing a price underselling effect.

d. Huge capacities and increased production of subject goods in China PR

102. The Applicant has obtained market report titled "China Pigment Red 254 market depth analysis and prospect report" prepared by Beijing Zhongjing Information Consulting Co., Ltd. A perusal of the Report brings out certain relevant observations regarding the subject goods. These observations are presented below:

(i) Market Competition of Organic Pigment in China PR

103. In recent years, China's organic pigment enterprises have achieved rapid development. The number and scale of production enterprises in the organic pigment industry have been greatly improved. A number of enterprises with strong scientific research strength and considerable production capacity have emerged, such as Changzhou North America Chemical Group Co., Ltd., Lilium Group Co., Ltd. and Shanghai Jiehong Pigment Chemical Group Co., Ltd.
104. There are about 10 enterprises whose output of organic pigment is more than 10000 tons in China, and about 30 enterprises whose output is between 1000 and 10000 tons.

(ii) Production analysis of Pigment Red 254 in China

105. The output of China's Pigment Red 254 industry in 2014 was **** tons; the output of China's Pigment Red 254 industry in 2015 was **** tons, a year-on-year increase of 12.0%; the output of China's Pigment Red 254 industry in 2016 was **** tons, a year-on-year increase of 2.5%; the output of China's Pigment Red 254 industry in 2017 was **** tons, a year-on-year increase of 4.9%; the output of China's Pigment Red 254 industry in 2018 was **** tons, a year-on-year decrease of 3.5%; the output of China's Pigment Red 254 industry in the first half of 2019 was **** tons.

(iii) Investment heat of Pigment Red 254 industry and projects to be built

106. With the growth of demand for Pigment Red 254 products, the future market prospect is still relatively broad. More enterprises join the production and supporting industry chain of Pigment Red 254, and the industrial investment heat will continue to rise.

(iv) Capacity in China PR

107. Production capacities for some of the Chinese producers as per the report are mentioned below:

Exporters/Producers	UOM	Capacity
Shuangle Pigment Taixing Co., Ltd	MT	****
Shenyang Baiao Chemical Co., Ltd	MT	****
Nantong Zhengyan New Material Technology Co., Ltd	MT	****
Foshan Shunde BAOST Pigment Co., Ltd	MT	****

108. In addition to this, the production capacity of CINIC Chemicals (Shanghai) Co., Ltd is 2500 MT (as reported in final finding dated 19th June 2015).
109. Based on the above, it can be seen that China PR has huge production capacities available for production of subject goods and in case the anti-dumping duty is withdrawn, there is a strong likelihood that surplus production will be exported to India at dumped prices.

Decrease in domestic market size of China PR

Particulars	UOM	2015	2016	2017	2018
Market scale	RMB Million	****	****	****	****
Growth rate	%	****	****	****	****

110. It can be seen from the above table that in 2017 market size of Chinese domestic market was **** RMB Million which decreased to **** RMB Million in 2018. This clearly shows that there is idle production capacity available with them which can be utilized to increase their exports to India in the event of withdrawal of the anti-dumping duty in force.

e. Domestic selling price below NIP

111. Currently, domestic selling price of the subject goods in India for the applicant is below the NIP.

Particulars	UOM	Value
Domestic selling price	Rs./Kg	****
NIP	Rs./Kg	****
Difference	Rs./Kg	****
Difference as a % of domestic selling price	%	****
Difference as a % of domestic selling price	Range	0-10

112. If the duties are allowed to lapse, the domestic selling price in India will fall further leading to significant damage to the domestic industry.

f. Export refund of 13% on DPP Red Pigments w.e.f. 20 March, 2020

In order to promote exports of pigments, Chinese government has started granting VAT refund/export refund of 13% on exports of DPP Red pigment and other Pigments with effect from 20th March, 2020. The VAT refund/export refund which was not in existence earlier has been increased from 0% to 13% which will lead to significant increase in imports of subject goods from the subject country in case the duty ceases to exist. In this situation, Chinese producers will take the benefit of this 13% VAT refund/export refund advantage and will aggressively export the subject goods to India. The Applicant submitted that in the present pandemic situation wherein Chinese government is granting all sorts of benefits to promote its exports, Authority should not take away the legitimate protection which is existing with domestic producers in India and leave them unprotected to fight with Chinese producers/exporters having strong support of their government. In such a scenario, producers in China PR must look for alternative markets to dispose of their excess production. India would be a natural choice for Chinese producers as demand in India would remain strong in near future. Therefore, there is a strong likelihood that Chinese producers would reduce their prices further to sell-off their excess production causing injury to domestic industry in India in the event of withdrawal of anti-dumping duty.

J.2 Submissions made by other interested parties

113. The following submissions have been made by other interested parties with regard to likelihood of continuation or recurrence of dumping and injury:
- a. With reference to 'Refund of 13% on exports of DPP Red pigment and other Pigments with effect from 20th March, 2020, at the outset, the importers request the DI to provide proof of the existence of such a program to even make a claim in this regard which is beyond even the Post-POI period. The importers also note that the export refund being export market neutral, there is no evidence to suggest that any increase in exports will be directed toward Indian markets only. Additionally, the remedy against a duty drawback program which is in the nature of a subsidy lies in an anti-subsidy investigation and cannot be claimed in the SSR of an anti-dumping duty levy. Thus, the DI may approach the correct forum for the redressal of such issues.
 - b. Post the issuance of anti-dumping duties, imports from China PR have reduced from 100 indexed points in 2015-16 to 38 indexed points in POI(A).
 - c. There is no merit in the DI's claim that it has been forced to sell at prices below fair market price on account of alleged low-priced imports. Additionally, the price undercutting is in the range of 0-10% and the price underselling is negative. The landed value has also been calculated incorrectly.
 - d. The DI has claimed confidentiality on the data relating to existence of excess capacities in China PR. Even for the sake of argument, the existence of excess capacities is not sufficient for the extension of anti-dumping duties as was held by Hon'ble CESTAT in *Indian Spinners Association v. Designated Authority*.
 - e. The DI has stated that DPP Red is a highly attractive product for both high-end applications to mid-end applications. However, the DI goes on to discuss this argument on attractiveness only with respect to BASF which is a Swiss company having another facility in the USA. Thus, this argument is not relevant for imports of PUC from China PR which is the only subject country in this investigation.
 - f. Domestic selling price is not below the non-injurious price (NIP) for the PUC.
 - g. An analysis of overall factors does not indicate any likelihood of recurrence of injury to the DI from China PR. Among other factors these are – declining imports from China PR, low priced imports at prices lower than China PR from the US in the post POI period and significantly higher domestic selling prices as compared to the NIP.

J.3 Examination by the Authority

114. All factors brought to the notice of the Authority have been examined to determine as to whether there is a likelihood of continuation or recurrence of dumping and injury in the event of cessation

of the duty. The Authority has considered various information, as made available by the domestic industry and other interested parties in order to evaluate the likelihood of continuation or recurrence of dumping and injury.

115. The present investigation is a sunset review of anti-dumping duties earlier imposed on the imports of subject goods from China PR. Under the Rules, the Authority is required to determine whether continued imposition of antidumping duty is warranted. This also requires a consideration of whether the duty imposed is serving the intended purpose of eliminating injurious dumping. There are no specific methodologies available to conduct such a likelihood analysis. However, Clause (vii) of Annexure II of the Rules provides, inter alia for factors which may be taken into consideration viz.:
- a) A significant rate of increase of dumped imports into India indicating the likelihood of substantially increased importation;
 - b) Sufficient freely disposable, or an imminent, substantial increase in, capacity of the exporter indicating the likelihood of substantially increased dumped exports to Indian markets, taking into account the availability of other export markets to absorb any additional exports;
 - c) Whether imports are entering at prices that will have a significant depressing or suppressing effect on domestic prices, and would likely increase demand for further imports; and
 - d) Inventories of the article being investigated.
116. Further, the Authority has also examined other relevant factors having a bearing on the likelihood of continuation or recurrence of dumping and consequent injury to the domestic industry. The examination of the parameters of likelihood is as follows:
- (i) **Continued dumping**
117. It is noted that despite imposition of anti-dumping duties on imports of subject goods from China PR, the Chinese import prices continue to be at dumped and injurious levels and the volume of imports from the subject country are almost at the same level as prevailing prior to the imposition of anti-dumping duties on the subject goods from the subject country. Further, it is seen that dumping margin determined in the original investigation and in the present review investigation are all positive and significant. Thus, dumping is likely to continue in the event of cessation of anti-dumping duty.
- (ii) **Surplus capacity with the exporters**
118. The domestic industry has provided evidence for existence of surplus capacities of the subject goods in China PR. Domestic Industry has provided the market report “China Pigment Red 254 market depth analysis and prospect report” prepared by Beijing Zhongjing Information Consulting Co., Ltd. Based on the report the Authority notes that, there are huge production capacities available for production of subject goods in China PR. Further, there is a decrease in market size of subject goods in China PR because of which there is idle production capacity available with them which can be utilized to increase their exports to India.
119. As regards the contention that Authority is required to make adjustment of “non-refundable VAT” while calculating the export price, while DI has stated availability of 13% refundable VAT in 2020, the other interested parties have mentioned about non export of VAT in exports consignments. The Authority notes the submission of the DI and the interested parties on VAT. Since no producer/exporter has cooperated and keeping in view DI’s clarification and non-cooperation of producers/exporters, the Authority has adjusted the ex-factory export price with the non-refundable VAT. Accordingly, the export price has been adjusted on account of ocean freight, insurance, commission, bank charges, port expenses, non-refundable VAT and inland freight charges to arrive at the net export price at ex-factory level on the basis of evidence/consistent norms being adopted by the Authority in case of non-cooperation.
120. On the basis of evidence on record, it is noted that there exist excess production capacities in the subject country and there is a possibility of diversion of the excess capacities to Indian market, in the event of cessation of anti-dumping duties.

(iii) **Whether imports are entering at prices that will have a significant depressing or suppressing effect on domestic prices, and would likely increase demand for further imports**

121. The Authority notes that at the current landed price in India, there is positive price undercutting and price underselling during POI.

(iv) **Inventories**

122. The Authority notes that China PR has huge production capacity available for production of subject goods which can be utilized to increase their exports to India.

(v) **Non-participation by Chinese producer/exporter**

123. CINIC Chemicals (Shanghai) Co. Ltd. had participated in the original investigation and received an individual rate of duty. However, none of the producer/exporter from China PR has participated in the present review investigation. Domestic industry has submitted that the producer/exporter from China PR are not participating in the present review investigation deliberately so that the relevant information required by the Indian authority for proper conduct of the sunset review investigation is not made available to the Authority and also to escape scrutiny from the Indian authority as to why the Chinese producers are transshipping the subject goods through Hong Kong. Domestic industry has also submitted that Chinese exporters have increased export price to India by 15-20% during the POI deliberately in anticipation of sunset review investigation, whereas, increase in export price of other countries is only 1-2%. In view of these submissions and the facts available on record, the Authority notes that non-participation of foreign producer/exporter in the facts of the present case shows that there is a likelihood of the continued dumping by exporters from China PR leading to a situation of continued injury to the domestic industry, if the existing duty is withdrawn.

124. In view of the above, the likelihood analysis points to the situation that exporters from the subject country are exporting the subject goods at dumped prices. In the original investigation as well as in the present review investigation, the dumping margin is positive. In such a situation, the Authority has no reason to believe that dumping will not continue if the existing duty is revoked.

K. POST DISCLOSURE COMMENTS

Submission filed by Domestic Industry

125. The product under consideration and the product offered by the domestic industry is a like article to the subject goods imported into India from China PR has been clarified by the Authority. It is requested to confirm the same in the final finding.

126. The Authority has noted that the Applicant satisfies the standing requirement and constitutes the domestic industry in terms of Rule 2(b) and Rule 5 (3) of the AD Rules. The same may be confirmed in the final findings.

127. As regards confidentiality, Applicant submits that the indexed numbers of the third party market analysis report provided by them may only be disclosed.

128. The Applicant submits that during the period of investigation, VAT rate prevailing in China PR for the subject goods was 16% for the period April 2018 to March 2019 and 13% for the period April 2019 to June 2019. VAT refund/export refund rate applicable on subject goods was 0% for the entire period of investigation. Accordingly, non-refundable VAT was 16% during April 2018 to March 2019 and 13% during April 2019 to June 2019 (relevant evidence is attached. Applicant sincerely requests the Authority that while determining dumping margin, Authority should reduce the export price on account of adjustment for non-refundable VAT as per the consistent practice of the Authority.

129. In order to promote exports of pigments, Chinese government has started granting VAT refund/export refund of 13% on exports of DPP Red pigment and other Pigments with effect from 20th March, 2020 (relevant evidence is attached. Consequent to this increase in VAT refund/export refund from 0% to 13% it is but natural that there will be a significant increase in imports of subject goods from the subject country to India. Chinese producers/exporters will take the benefit

of this 13% VAT refund/export refund advantage provided to them by the Chinese government and will aggressively export the subject goods to India. Due to this 13% VAT refund/export refund advantage granted to Chinese exporters by the Chinese government with effect from 20th March, 2020, there is a clear likelihood that Chinese exporters will intensify their dumped exports to India and this will result in aggravated injury to the domestic industry. In such a situation, if Government of India will remove the shield provided to the domestic industry in the form of anti-dumping duty protection, this will certainly lead to collapse of the domestic industry.

130. Authority in Para 41 of the disclosure statement has stated that domestic industry was unable to establish the impact of refund of VAT on the export price of the producer if the exports were made directly or through a trader.
131. Applicant submits that non-refundable VAT was 16% during April 2018 to March 2019 and 13% during April 2019 to June 2019 on the exports of subject goods from China PR. The impact of this non-refundable VAT is that the quantum of non-refundable VAT is to be adjusted from the VAT credit balance available with the foreign producers/exporters. This results in enhancing the cost of the export product. Accordingly, authorities' world over including India have been making the adjustment of non-refundable from the export price so that a proper comparison can be made between export price and normal value. Since it is the admitted position of the Authority to adjust the non-refundable VAT from the export price, Applicant submits that in none of the anti-dumping investigations against China PR, the burden of proof is put on the domestic industry to establish the fact as to why adjustment should be made from the export price.
132. Applicant fails to understand as to why the Authority has put the burden on the domestic industry in this particular case to explain the impact of VAT refund on the exporter if the exports are made directly to India or through a trader. Applicant submits that none of the producers/exporters from China PR have participated in the present review investigation and the Authority is giving unnecessary advantage to Chinese producers/exporters despite the fact that they have not participated. In the present investigation, since no Chinese producer/exporter has participated to counter the claims made by the domestic industry, the Authority cannot penalize the domestic industry for non-cooperation of the foreign producers.
133. Impact of VAT refund on the exporter if the exports are made through a trader, it is submitted that in the original investigation M/s. CINIC Chemicals (Shanghai) Co. Ltd. itself admitted that they exported the subject goods directly to India. So, there is no cause for the Authority to seek explanation from the Applicant regarding the impact of VAT refund on the exporter if the exports made through a Chinese trader. Notwithstanding the above, Applicant submits that in the original investigation, CINIC Chemicals (Shanghai) Co. Ltd. had themselves claimed adjustment for non-refundable VAT and accordingly, the Authority had made appropriate adjustments on account of "Non Refundable VAT" while calculating the ex- factory exports price.
134. It is submitted that in Para 12.25 of *Manual of Operating Practices for Trade Remedy Investigations*, Authority allows the adjustment of non-refundable VAT and the same is included in the list of various adjustments which are to be made in export price for arriving at the net export price.
135. It is the consistent practice of the Authority to make adjustment on account of "Non-Refundable VAT" in all anti-dumping investigations against China PR wherever the refund rate is lower than the applicable VAT rate. A list of anti-dumping investigations against China PR containing relevant portions of the final findings, wherein, the Authority has made adjustment on account of "Non-Refundable VAT" is also annexed. In this regard, some of the relevant findings issued by Authority are as under:
 - (i) Sunset review investigation concerning imports of 'Measuring Tapes' originating in or exported from People's Republic of China, Final Findings notified vide Notification No. 7/24/2019-DGTR dated 18 June 2020, Anti-Dumping Investigation concerning imports of 'Ciprofloxacin Hydrochloride' originating in or exported from People's Republic of China, Preliminary Findings notified vide Notification No. 6/36/2019-DGTR dated 15 June 2020, Anti-dumping investigation concerning imports of "Digital Offset Printing Plates" originating in or exported from China PR, Japan, Korea RP, Taiwan and Vietnam. Final Findings notified

- vide Notification No. 6/7/2019-DGTR dated 15 May 2020, Sunset Review Investigation concerning imports of “*Sodium Citrate*” from *People’s Republic of China*. Final Findings notified vide Notification No. 7/21/2019-DGTR dated 30th April 2020, Anti-dumping investigation concerning imports of “*Aluminium and Zinc Coated Flat Products*” from *China PR, Vietnam and Korea RP*. Final Findings notified vide Notification No. 6/4/2019-DGTR dated 21 February 2020, Anti-dumping investigation concerning imports of “*Chlorinated Polyvinyl Chloride (CPVC)- Whether or not further processed into compound*” from *Korea RP and China PR*. Final Findings notified vide Notification No. 6/3/2019-DGTR dated 19 February 2020.
136. In view of the above, we request to make appropriate adjustment by reducing the export price for non-refundable VAT as per its consistent practice and accordingly, revise the dumping margin in the final findings.
 137. The Authority has correctly undertaken most of various injury parameters in para Paragraphs 55, 56, 58, 70, 72, 61, 63, and 64 of the disclosure statement. However, as regards the calculation of non-injurious price, the domestic industry has following concerns:
 - The raw materials specified at clause (v) of Format-A has not been considered in determining the NIP which has led to a significant reduction in the non-injurious price.
 - The consumption norms have been considered for the period of investigation, whereas, the best consumption norms were in 2016-17. Resultantly, the non- injurious price for the domestic industry has increased.
 - The utilities specified at clause (v) of Format-A and D have not been considered in determining the NIP which has led to a significant reduction in the non-injurious price.
 138. While calculating the NIP, the Authority has disallowed “*Pollution Control Expenses*” which is grouped under other Manufacturing Overheads. Pollution Control Expenses are legitimate expenses which are necessary to run the plant and these expenses are consistently allowed by the Authority while calculating NIP in all the investigations. Therefore, the same should be allowed in the present investigation as well.
 139. The Authority many correct the above errors in NIP and also CNV while issuing the final findings.
 140. While we agree with Authority’s observation in para 119 of the disclosure statement that dumping will intensify if the existing duty is revoked, in para 112 of the disclosure statement that despite imposition of anti-dumping duties on imports of subject goods from China PR, the Chinese import prices continue to be at dumped and injurious levels and the volume of imports from the subject country are almost at the same level as prevailing prior to the imposition of anti-dumping duties on the subject goods from the subject country, in para 113 of the disclosure statement that there are huge production capacities available for production of subject goods in China PR, in para 116 of the disclosure statement that there is positive price undercutting and price underselling during POI, in para 117 of the disclosure statement that China PR has huge production capacity available for production of subject goods which can be utilized to increase their exports to India, in para 118 of the disclosure statement that non- participation of foreign producer/exporter in the facts of the present case clearly demonstrates that there is a clear likelihood of the continued dumping being further intensified by exporters from China PR leading to a situation of further intensified injury to the domestic industry, if the existing duty is withdrawn.
 141. In view of the above, it is clearly established that there is a likelihood of continuation of dumping from China PR and continuation/recurrence of injury to the domestic industry in the event of cessation / discontinuance of Anti-dumping duty in force. In case the anti-dumping duties applicable on the imported goods from China PR cease to exist, the Chinese exporters would capture the Indian market causing significant impairment to the Domestic Industry.
 142. As regards the adjustment of non-refundable VAT, we reiterate that the Chinese producers will take the benefit of this 13% VAT refund/export refund advantage and will aggressively export the subject goods to India.

143. It is clear that cessation / discontinuance of Anti-dumping duty in force is likely to lead to intensified dumping by Chinese producers/exporters causing significant injury to the domestic industry. *In such a situation, we request the Authority to continue the existing quantum of anti-dumping duty because of the reasons enumerated below:*
- A. Utility cost of Domestic Industry has decreased resulting in low Constructed Normal Value and Non-Injurious Price.
 - B. Conduct of Chinese producers/exporters is not proper in the present investigation due to non-participation of Chinese Producers/Exporters due to which information such as third country export price, surplus capacities, inventories etc. is not made available to the Authority due to non-participation of Chinese producers/exporters. Accordingly, the Authority should not give benefit to the Chinese producers/exporters for their non-participation by reducing the existing quantum of anti-dumping duty in the sunset review investigation.
 - C. The subject goods being imported from Hong Kong bear the same description and brand name i.e. Cinilex as that of the goods imported from China PR. In this regard, no participating importer has also provided any evidence or information or certificate of origin to substantiate that the subject goods being imported by them from Hong Kong into India are actually produced in Hong Kong. In fact, there is no production facility for subject goods in Hong-Kong. Chinese producers/exporters are merely transshipping their products through Hong-Kong to take advantage in this sunset review investigation.
 - D. Chinese exporters have increased the export price to India by 15-20% during the period of investigation deliberately in anticipation of sunset review investigation, whereas, increase in export price of the subject goods from other countries is only 1-2%.
144. *Applicant requests the Authority to extend the same quantum of anti- dumping duty of US\$ 7.58/ KG on imports of subject goods from China PR and the quantum of anti-dumping duty should not be reduced in the present sunset review investigation.* In certain cases with regard to the sunset review investigation the Authority has extended the same quantum of anti-dumping duty as levied in the original investigation. These are as under:
- Partially Oriented Yarn (POY) originating in or exported from China PR, Final Findings notified vide Notification No. 15/27/2010-DGAD dated 10 February 2012.
 - Hexa Methylene Tetramine (Hexamine) originating in or exported from Islamic Republic of Iran, Final Findings notified vide Notification No. 15/10/2007-DGAD dated 26 February 2009.
 - Sun/Dust Control Polyester Film) originating in or exported from Taiwan and UAE, Final Findings notified vide Notification No. 15/17/2008-DGAD dated 13 August 2009.
 - ‘Grinding Media Balls’ (excluding Forged Grinding Media Balls) originating in or exported from China PR and Thailand, Final Findings notified vide Notification No. 7/7/2017-DGAD dated 11 June 2018.
 - ‘Sheet Glass’ originating in or exported from People’s Republic of China, Final Findings notified vide Notification No. 7/10/2019-DGTR dated 21 February 2020.
 - ‘Electronic Calculators’ originating in or exported from People’s Republic of China, Final Findings notified vide Notification No. 7/15/2019-DGTR dated 26 March 2020.
 - Viscose Staple Fibre excluding Bamboo Fibre, originating in or exported from China PR and Indonesia, Final Findings notified vide Notification No. 15/9/2015-DGAD dated 8 July 2016.
 - ‘PVC Flex Film’ originating in or exported from China PR, Final Findings notified vide Notification No. 15/13/2015-DGAD dated 30 June 2016.

- 'Front Axle Beam' and 'Steering Knuckles' meant for heavy and medium commercial vehicles originating in or exported from China PR, Final Findings notified vide Notification No. 15/11/2014-DGAD dated 11 September 2015.
- 'Ductile Iron Pipes' originating in or exported from China PR, Final Findings notified vide Notification No. 15/1006/2012-DGAD dated 4 September 2013.

Submission by L & L representing Indian Paint Association and its member companies

145. The respondent notes that the DA in paragraph 15 (a) of the DS has noted VOXCO's (one of the opposing interested parties in this investigation) disagreement with treating all grades of the PUC as one and the same. However, this quote is not the entire representation of the submissions made by VOXCO in this regard. VOXCO in its separate rejoinder submission dated 21 July 2020 has elucidated on the reasons for certain imported grades being better than the PUC manufactured in India. To this end VOXCO has provided letters from the user industry claiming that the imported grades are superior and cannot be substituted by the domestically manufactured grades. The user industry has also claimed that the DI is unable to provide the PUC to the specifications required by them which is forcing them to rely on imports despite the anti-dumping levy.
146. The respondent notes that the DA in paragraph 25 of the DS has stated that there exists no need to revisit the standing of the DI in a review of anti-dumping duties because the status of the DI as decided by the DA in the original anti-dumping investigation has not been challenged before the CESTAT. The respondent respectfully disagrees with the above rationale of the DA and submits that such an understanding, that the decision does not need to be revisited merely because it was not challenged – is misplaced. There have been past anti-dumping investigations wherein the DA has changed its decisions in the review investigation as compared to its previous decision in the original investigation. Hence, even in the present case the DA must consider the submissions made by the respondent in all its previous written representations – with regard to the DI's ineligibility to be considered 'domestic industry' on account of it being an export oriented unit ('EOU'). The respondents reiterates that the past practice of the DA establishes that it has not included EOUs with an export focus within the scope of the DI. The DA, in Anti-dumping investigation against import of Phthalic Anhydride from Indonesia, excluded one of the domestic producers (IG Petrochemicals) from the scope of the DI for being an EOU. Also, in Anti-dumping investigation against import of Ceftriaxone Disodium Hemiheptahydrate-Sterile from China PR, the DA has concluded that Orchid Chemicals, which was a 100% EOU, was not fit to be considered as DI on account of its characterization as an EOU.
147. The respondent notes that the DA in paragraph 31 of the DS has stated that the DI's confidentiality claims have been granted on being satisfied of its necessity in accordance with Rule 7 of the Indian Anti-dumping Rules. The respondent respectfully disagrees with this statement. Excess confidentiality has been granted on the figures related to productivity, purchases, research and development cost, loan and advances and other related cost. The discrepancies in this regard have been tabulated and detailed in our written submissions dated 27 March 2020.
148. The respondent notes that the DA in paragraph 32 of the DS has dispensed with the requirement for an updated petition with data pertaining to China PR only, to the exclusion of Switzerland. The respondent respectfully disagrees with this observation. The DI in its petition has claimed that there is an instance of likelihood of injury from both China PR and Switzerland, the respondent notes that certain arguments consider the effect of collective injury from both the countries; e.g. market share of the DI is affected by imports from both countries. Thus, in the absence of segregated data pertaining solely to China PR, the 'likelihood of injury' analysis is vitiated because it presumes that the injury may recur from both Switzerland and China PR while the DA has already ruled against the same by excluding Switzerland from the list of subject countries in the initiation notification. Thus, using the data in the DI petition without the necessary revision to exclude data pertaining to Switzerland leads to a loss of objectivity and vitiates the analysis in the present investigation.
149. The respondent notes that the DA in paragraphs 41 and 114 of the DS has rejected the DI's claim regarding adjustment of an alleged refundable VAT program in China PR for exports at 13% - with regard to calculation of the Export Price. The respondent notes that the DI by not submitting

any evidence to back such a claim, has not fulfilled a fundamental obligation to necessarily support its claims with evidence. Thus, the respondent wishes to put on record that it agrees with the decision of the DA in rejecting the claim for such an adjustment.

150. The respondent notes that the DA in paragraph 55 of the DS has considered imports from Hong Kong as imports from China PR. In doing so it has noted that the same has been done because the respondents have not submitted any documents (e.g. certificates of origin, bills of lading, etc.) to prove that the imports are actually of Hong Kong origin, and have not been transhipped by exporters of the PUC from China PR, through Hong Kong. We respectfully disagree to the above conclusion of the DA. The obligation is not on the respondents to prove that the imports are actually coming from Hong Kong and are not being transhipped. Rather the obligation lies on the DI to prove that the imports have actually been transhipped, as such a claim has been made by the DI. Also, this issue can easily be verified by the DA by perusing the official DGCI&S data which will also record country of origin for each shipment. In fact, the respondent notes that the DA has not noted that the conclusion in paragraph 55 is arrived at after analyzing DGCI&S data. Thus, the burden of proof cannot be shifted on the respondent, especially when official data exists to verify the authenticity of the DI's allegations.
151. The respondent additionally notes that the DA in paragraph 56 and 58, has also claimed that imports of the PUC from China PR remains significant and at the same level preceding the anti-dumping duty levy. To begin, the respondent notes that the purpose on an anti-dumping duty is not to reduce or limit imports, it is rather singularly aimed at providing a level playing field to the DI in case exports are being made at lesser than normal value. Notwithstanding the above, the respondent reiterates that, such a statement regarding imports remaining significant, cannot be taken without context. Notably, the current market share of imports from China PR stand at an insignificant 4% of the total demand for the PUC in India. Considering the above the respondent records its disagreement regarding the DA's conclusion that imports from China PR still remain significant.
152. The respondent notes that the DA in paragraph 80 of the DS has noted that the DI's profitability and return on investment ('ROI') has shown positive growth trend during the injury investigation period. Further, it has been noted that the ROI is ranging between 4%-9% during the injury investigation period, which is below the optimum level. In the above context, the respondent also reiterates that a 22% ROCE as considered by the DA in paragraph 89 of the DS – cannot be applied as a set yardstick for all kinds of PUC, e.g. the margins on FMCG products will be much lower than margins on cosmetics or other luxury goods. Thus, the ROI of 4-9% as noted by the DA is adequate and in line with the historical rate of return for the organic pigment industry.
153. The respondent notes that the DA in paragraph 83 of the DS has stated that the import prices for the PUC from USA is significantly higher than the import prices from China PR. The respondent respectfully submits that this statement is factually incorrect as would be evident from an analysis of the post-POI import price data. In an SSR investigation where the duty is extended on the basis of a likelihood of recurrence of injury, it is necessary to look into the future to assess whether the dumping could possibly recur and this necessitates a look into the post POI data. The same has been held by the CESTAT in *M/s. P.T. Asahimas Chemicals v. Designated Authority* which the DI too has relied upon. As submitted earlier, on an examination of the post-POI import data from DGCI&S21 it becomes amply clear that the landed value of US imports of the PUC is 46% lower than the landed value of imports from China PR. The table below records the post-POI data for the two subsequent quarters i.e. July – September 2019 and October – December 2019. The respondent notes that the essential examination in an SSR investigation is a likelihood of recurrence of injury, especially so when there is no ongoing injury as is the present case. Therefore, in terms of assessing likelihood of recurrence of injury the DA's conclusion that there is no injury from USA which has a 40% market share at price which is 46% lower than Chinese prices is untenable and has no factual basis to stand upon.
154. The respondent notes that the DA in paragraph 113 of the DS has considered the presence of surplus capacities for manufacturing the PUC in China PR as one of the factors that would lead to a conclusion regarding the likelihood of recurrence of injury. It is reiterated that in a situation where the DI is not suffering from injury, mere presence of surplus capacities is insufficient to

prove that such capacities would be directed to Indian markets. This held by the CESTAT in Indian Spinners Association v. Designated Authority.

155. The respondent notes that the DA in paragraph 118 of the DS has stated that that exporters from China such as CINIC have not participated in the present SSR investigation to escape scrutiny and that such non-participation makes out a clear case of likelihood of continuation of dumping. In this regard, the respondent humbly state that there is no legal provision or set precedent that would empower the DA to conclude on a likelihood determination on the basis of non-participation of exporters in the review proceedings. Non-participation of CINIC has no bearing on the assessment of the recurrence of injury. Such an assessment is based on an examination of the injury parameters of the Indian manufacturer during the investigation period leading up to the POI.
156. Finally, the respondent notes that the DA in Section – IV of the DS on page 52 has detailed upon the methodology used by it to arrive at the NIP for the DI. The respondent with respect to the same expresses its reservations concerning a 22% ROCE. As stated in the preceding paragraphs, a 22% ROCE cannot be applied as a set yardstick for all kinds of PUC as the same varies from industry to industry. An assessment of historical rate of returns on investment for the respective manufacturing industry, has to be made before using it for the calculation of NIP in every anti-dumping investigation.

Submission filed by M/s Voxco Pigments and Chemicals Pvt. Ltd

157. In a SSR investigation, the Authority is obligated under the law to form an opinion at the time of making its decision as regards whether the cessation of such duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury. Axiomatically, the Authority must necessarily procure the most recent information and data available and examine and evaluate the same as per the extant law. It is for this reason in a SSR investigation, there is no sanctity attached to the POI as in an original investigation. Thus, the Authority must examine and evaluate the information and data including of the Post POI period till date to enable it to form its opinion whether cessation of such duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury. In order to carry out the likelihood analysis in a meaningful way, the Authority must base its analysis primarily on the data that covers the most recent period. In the instant investigation, the gap between the POI and the date of initiation in the present investigation is nearly 6 months and even thereafter more than 7 months have elapsed. Thus, we submit that Authority takes due cognizance of this vital issue and only upon its examination and evaluation determine whether the cessation of the duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and consequent injury or not.
158. Kind attention is invited to Para 7 of the Disclosure Statement that states categorically thus: “The scope of the present review covers all aspects of the previous investigation concerning imports of the subject goods, originating in or exported from the subject country. However, while addressing the issues flagged by ‘other interested parties’ including us, it has merely referred to its previous decision of the original investigation, without revisiting the issues flagged with an open and fresh mind.
159. In Para i and j of the Disclosure Statement, while enumerating the procedure, a mention has been made of the submissions filed by some interested parties; but surprisingly VOXCO’s name has not been mentioned therein. Therefore, we once again request the Authority to carefully peruse all our submissions filed in the instant matter and duly address the issues raised by us by rendering a reasoned determination.
160. In Para 15 (a) of the Disclosure Statement, it has been wrongly mentioned that “VOXCO is not aware about the differences between PUC manufactured by domestic industry vis-à-vis the imported PUC...” Infact, VOXCO has squarely flagged the point that the domestic industry is not able to produce the subject goods with certain specifications thereby necessitating their imports and we have even adduced due evidence in this regard by attaching the sample letters from the Indian User industry substantiating this fact.
161. In Para 25, mention has been made as regards ‘no specific exclusion of an EOU’ from the ambit and scope of Rule 2(b) that defines ‘Domestic industry’ but the intent of the Rule is amply clear;

and further there have been cases wherein this very Authority has excluded an EOU from the ambit and scope of being considered as a 'domestic industry'.

162. In Para 83, the "Authority notes that significant volume of imports of PUC are coming into India from USA. However, the import price from USA is significantly higher than the import price from China PR (against which anti-dumping duties are already in force). Thus, it cannot be said that imports from countries other than China PR are causing injury to the domestic industry." (Emphasis added). We humbly submit that this is factually inaccurate as would be evident by a perusal of Annexures A & B attached along with our 'Written submissions'.
163. In Para 84, it has been mentioned that "the claimed injury to the Domestic Industry is solely on account of domestic operations and there is no impact of exports on the injury suffered by the domestic industry." But the domestic industry has failed to disclose the material fact that it has exported significant volumes of the subject goods at much lower prices as compared to the prevailing domestic price, thereby creating a scenario of self-inflicted injury.
164. The Authority should also compare the 'Landed value' of the subject goods from the US with the NIP and find the truth as regards the actual injury to the domestic industry. Needless to say, it would be evident that the landed value of the subject goods from the US is much lower than the NIP. Importantly, these imports from the US have landed into India at much lower than the NIP of the domestic industry. Further, as the Landed values of the subject goods from the US hasn't bothered the domestic industry at all, it would be safe to assume that import of the subject goods from the subject country at similar prices/values as those from the US, is not likely to injure the domestic industry at all. Obviously, the domestic industry is looking to pick and choose the source to move an anti-dumping application; however, we humbly submit that the same ought not to be permitted as that would not only be discriminatory but also against the WTO cardinal principles.
165. We refute the above claims made by the domestic industry, because before making any such claims it must answer the following questions: Why is it exporting at lower prices than the prevalent domestic price in India? Why it is not impacted adversely by the huge volumes of imports at comparable / lower priced from the US as against the subject country? Is this cherry-picking the source permitted under the WTO? SSR DPP Red 254 Comments on the Disclosure Statement Issued by the Designated Authority on behalf of Voxco Pigments and Chemicals Pvt. Ltd., Mumbai ☐ Why has it remained mute till date as regards the lower Landed values of the subject goods from the US as compared to its own NIP and its NSR? ☐ Is it not a fact that the price pressure, if any, is due to the presence in huge volumes of the lower priced imports from the US?
166. Examination of Causal Link: The legal provisions stipulate it must be demonstrated that the dumped imports are likely, through the effects of dumping, cause injury to the domestic industry. However, this causal relationship between the dumped imports and the injury to the domestic industry must be demonstrated and has to be based on an examination of all relevant evidence before the authorities. The Authority is also obliged to examine any known factors other than the dumped imports which at the same time are likely to injure the domestic industry, and the injuries caused by these other factors must not be attributed to the dumped imports. Some of these factors that have been specifically mentioned include, the volume and prices of imports not sold at dumping prices, contraction in demand or changes in the patterns of consumption, trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers, developments in technology and the export performance and productivity of the domestic industry.
167. Axiomatically, a fair comparison can be only had with the Landed value of the subject goods vis a vis the prevailing domestic price of the subject goods. Since, the domestic industry is the sole producer of the subject goods; it should be able to sell its goods at non-injurious price without ado, so far as any competition from China is concerned. If it has not been able to do so, then primarily it is because of the presence of the imports of the subject goods from the US. Now, as the domestic industry has not chosen to initiate any action against them, means that it is not being injured and also not likely to be injured by imports of the subject goods at these prices.

Examination by the Authority

168. The Authority notes that submission of interested parties to not to consider 100% EOU as part of DI. The Authority holds that since EOU is part of Domestic Tariff Area (DTA), it has been considered as a part of DI to the extent of the sales made by it in the domestic market as has been considered in past cases. EOU by virtue of being in DTA, is at the same footing as a non EOU domestic producer.
169. The Authority notes the submission of the DI and the interested parties on VAT. Since no producer/exporter has cooperated and keeping in view DI's clarification and non-cooperation of producers/exporters, the Authority has adjusted the ex-factory export price with the non-refundable VAT.
170. The Authority notes that regarding the DI's goods not being a like Article to PUC, there is no evidence of any technical specifications provided by the users to establish their case. Further being a SSR, the Authority has not enlarged the scope of PUC.

Conclusion

171. Having regard to the submissions made in the investigation, the post disclosure comments and facts available, the Authority concludes that:
 - a. Subject goods exported from the subject country are at prices below their normal value, thus resulting in dumping.
 - b. Imports are undercutting the prices of the domestic industry in the market.
 - c. Dumping margin and injury margin are positive in respect of imports of the product under consideration from the subject country.
 - d. In event of cessation of anti-dumping duty, undercutting may continue as the producers/exporters in the subject country are holding significant capacities and the imports which are dumped and injurious despite existence of AD measure, are likely to increase in the event of cessation of anti-dumping duty. Performance of the domestic industry is therefore likely to deteriorate in the event of cessation of anti-dumping duty.
 - e. The Authority, thus, in order to remove likely injury to the Domestic Industry considers it necessary to recommend continuation of definitive ADD on imports of the subject goods from the subject country.

Recommendations

172. Having concluded as above, the Authority is of the view that the antidumping measure is required to be extended as specified in the duty table below.
173. The Authority has noted the request of DI to continue the same level of existing ADD in the present SSR investigation as well. Authority notes that the extent of injury evidenced during the POI needs to be mitigated through a future anti-dumping measure. In case either the dumping or injury increase in the future, the DI could always file a review and seek appropriate modification in anti-dumping duty. Accordingly, Authority is recommending the appropriate anti-dumping duty, keeping in view the provisions of Lesser Duty Rule, for the quantum of dumping and consequential injury to DI as evaluated during the POI in the present SSR investigation.
174. Having regard to the lesser duty rule, the Authority recommends imposition of anti-dumping duty equal to the lesser of the margin of dumping and the margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, the anti-dumping duty equal to the amount indicated in the column no. 7 of table below is recommended to be imposed by the Central Government on the imports of the subject goods, originating in or exported from the subject country.

DUTY TABLE

S. No.	Heading/Sub-Heading	Description of Goods	Country of Origin	Country of Export	Producer	Duty Amount	Currency	Unit
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1.	32041739	Diketopyrrolo Pyrrole Pigment Red 254 (DPP Red 254)	China PR	China PR	Any	1.31	US\$	KG
2.	32041739	Diketopyrrolo Pyrrole Pigment Red 254 (DPP Red 254)	China PR	Any Country other than China PR	Any	1.31	US\$	KG
3.	32041739	Diketopyrrolo Pyrrole Pigment Red 254 (DPP Red 254)	Any country other than China PR	China PR	Any	1.31	US\$	KG

FURTHER PROCEDURE

175. An appeal against the order of the Central Government arising out of these findings shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the relevant provisions of the Customs Tariff Act, 1975.

BIDYUT BEHARI SWAIN, Spl. Secy. & Designated Authority